SACH KI DASTAK, RNI : UPHIN/2017/75716
वाराणसी से प्रकाशित

वर्ष : 7, अंक : 5, अगस्त, 2023
मूल्य : 20 रु.

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

भारत
आर्थिक शक्ति की ओर

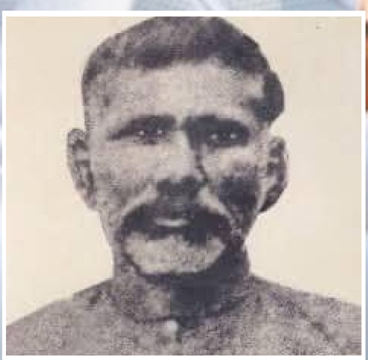
कलम इनकी जय बोल
महेंद्र मिसिर

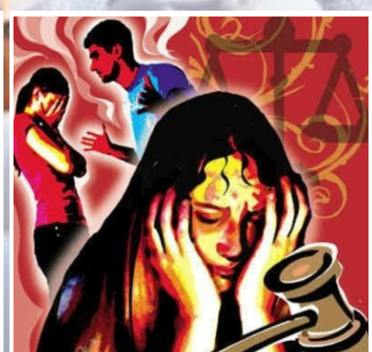
स्वतंत्रता VS स्वच्छंदता

अविश्वास प्रस्ताव
अभिशाप या वरदान

माउई जंगलों की आग
एक सवाल?

रामदुलार सिंह यादव

प्रधानाध्यापक प्रा. वि. कैलावार प्रथम

मो.: 9120458320

उपेंद्र बिक्रम सिंह

ग्राम प्रधान, कैलावर

मो.: 9563958200

Ranjay Kr. Srivastava

Vill. - Kakarait, Post - Oyarchak

Dist.- Chandauli

Mob. : 7398237844

नीरज कुमार उर्फ किशन बनवासी

ग्राम - बेलवानी, ब्लाक चहनिया,

जनपद चन्दौली मो. : 8840015712

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

आर.एन.आई. UPHIN/2017/75716

वर्ष : 07, अंक : 5, अगस्त, 2023

संपादक
ब्रजेश कुमार

समाचार संपादक
आकांक्षा सक्सेना

खेल सम्पादक
मनोज उपाध्याय

उप सम्पादक
शिव मोहन सिंह

कानूनी सलाहकार
दिलीप कुमार सिंह (अधिवक्ता)

प्रूफ रीडर
बिपिन बिहारी उपाध्याय

प्रसार प्रभारी
अशोक सैनी

प्रसार सह प्रभारी
अजय राय
अशोक शर्मा
जितेन्द्र सिंह

ग्राफिक्स
संजय सिंह

सम्पादकीय कार्यालय
सी-6/2-एम, चेतगंज थाना के पास,
चेतगंज वाराणसी

पत्राचार (स्थानीय कार्यालय)
म.न. 1215ए, सुभाषनगर, मुगलसराय (चन्दौली)
मो.न. : 8299678756, 9598056904, 9450096479

पत्रिका में प्रकाशित समाचार / लेख से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र चन्दौली होगा। सभी पद अवैतनिक है।

स्वामी प्रकाशक मुद्रक ब्रजेश कुमार द्वारा यादव प्रिंटर्स, ए 14/36 भारद्वाजी टोला राजघाट वाराणसी से मुद्रित।

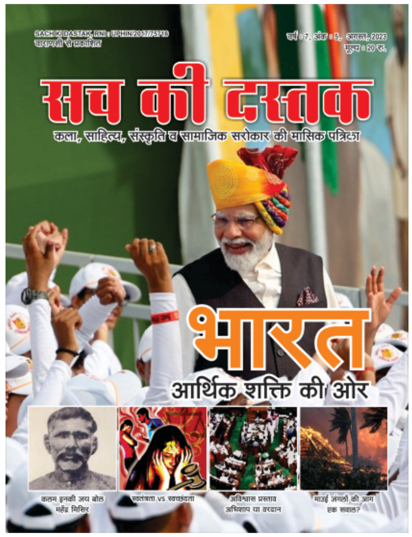

स्टेट ब्यूरो प्रभारी

1- मृदुला श्रीमाली - उत्तर प्रदेश
2- रोहित कोचगवे - उत्तराखण्ड
3- दीपाली सोढ़ी - असम
4- दीपक कुमार साहा - दिल्ली
5- श्री रामकृष्ण सहस्त्रबुद्धे - महाराष्ट्र
6- डा. जय राम झा - बिहार

ब्यूरो संवाददाता / रिपोर्टर

1- डॉ निशा अग्रवाल विशेष संवाददाता जयपुर (राजस्थान)
2- सुनील मित्तल जिला प्रभारी धौलपुर (राजस्थान)
3- विकास गौण जिला प्रभारी वाराणसी (यू.पी)
4- अक्षांशु सक्सेना जिला प्रभारी औरैया (यू.पी)
5- संजय कुमार दुबे जिला प्रभारी जौनपुर (यू.पी)
6- साहिल भारती प्रभारी लखनऊ (यू.पी)
7- राकेश शर्मा जिला प्रभारी चन्दौली (यू.पी)
8- पवन कुमार शर्मा, जिला प्रभारी देहरादून (उत्तराखंड)

सदस्यता शुल्क

1 अंक	-	रु. 20/-
वार्षिक	-	रु. 300/-(डाकखर्च सहित)

Sach Ki Dastak
A/c. No. : 13751652000024
IFSC Code : PUNB0137510
Punjab National Bank

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

इस बार

क्र.स.	लेख	पेज न.
1.	संपादकीय - ब्रजेश कुमार, प्रधान संपादक	03
2.	धरोहर - राजेंद्र कृष्ण	05
3.	भारत आर्थिक शक्ति की ओर - ब्रजेश कुमार, प्रधान संपादक	06
4.	स्वच्छता vs स्वच्छंदता - आकांक्षा सक्सेना, न्यूज एडीटर	08
5.	कलम इनकी जय बोल - महेन्द्र मिसिर	12
6.	अपनों के भेद-भाव की शिकार बेटियां - सोनम लववंशी	16
7.	लिंग समानता - डॉ. निशा अग्रवाल	18
8.	दोस्त पुराने - किशोर कुमार	23
9.	अविश्वास प्रस्ताव : अभिशाप या वरदान - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	24
10.	मेरा श्रेष्ठ देश - मुकुंद नीलकण्ठ जोशी	26
11.	मेरी माटी मेरा देश की खूबसूरत संकल्पना - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	27
12.	मणिपुर तो बस हिमशैल का सिरा - पंकज जगन्नाथ जयस्वाल	29
13.	माउई जंगलों की आग एक सवाल - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	32
14.	क्या रिश्ता है मीना कुमारी और गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर में - ब्रजेश श्रीवास्तव उर्फ मुन्ना	34
15.	हमारा कश्मीर हमारी पहचान- डॉ. प्रेमलता त्रिपाठी	37
16.	गूंजे आंगन-आंगन हिंदी - प्रो. राजेश तिवारी 'विरल'	38
17.	घेवर - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	39
18.	मान जाओ ना - आलोक पाण्डेय	40
19.	एशिया कप के लिए भारतीय सेना तैयार - मनोज उपाध्याय खेल संपादक	41
20.	चंद्रयान - 3 की वैश्विक सफलता - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	43
21.	स्तनपान सप्ताह - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	46
22.	त्यागी सर का स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति - प्रभाकर कुमार	47
23.	ठहाकों के बीच मदमस्त होते संग पेड़ ये बहारें- योग - वीना आडवाणी तन्वी	54
24.	गदर - 2 ने मचाया गदर - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	55

संपादकीय

प्रिय पाठकों ! आप को बताते हुए बहुत हर्ष हो रहा की आप की राष्ट्रीय मासिक पत्रिका सच की दस्तक के प्रकाशन के 6 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में 28 अगस्त 2023 को शाम 4 बजे वार्षिकोत्सव कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सिक्किम के राज्यपाल महामहिम लक्ष्मण आचार्य जी हैं।आप सभी इस कार्यक्रम में सादर आमंत्रित है।

आइए! अब आज के मौजूदा समय पर विचार किया जाए। पूरे विश्व में आर्थिक प्रगति की बात की जाए तो निश्चित ही भारत की बात होगी क्योंकि आज भारत आज आर्थिक जगत में विश्व के पांचवे स्थान पर आ गया है। और जानकारों की माने तो यदि भारत की आर्थिक स्थिति लगातार ऐसी रही तो वह दिन दूर नहीं जब विश्व में तीसरी महाशक्ति के रूप में उभरेगा। इस पर विशेष रूप से इस अंक में चर्चा की गई है। स्वतंत्रता 77वें वर्ष में हम उन वीर सपूतों याद कर रहे हैं जिन्हें लोग भूलते जा रहे।आज यदि हम खुली हवाओं में सांस ले रहे हैं तो ये उन वीर सपूतों का बलिदान है जिन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ एक अनोखी लड़ाई लड़ी । जिसमें से एक थे। महेंद्र मिसिर बता दें कि महेंदर मिसिर का जन्म सारण जिला (बिहार) के मुख्यालय छपरा से 12 किलोमीटर उत्तर स्थित जलालपुर प्रखंड के नजदीक एक गांव कांही मिश्रवलिया में 16 मार्च 1886 को हुआ था। कांही और मिश्रवलिया दोनों ही गांव नजदीक हैं। गांव में कई जाति के लोग रहते थे पर ब्राह्मणों की संख्या अधिक थी। महेंदर मिसिर ब्राह्मण थे। मिश्र पदवीधारी लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व उत्तर प्रदेश के लागुनही धर्मपुरा से आकर बसे हुए थे। मिश्रवालिया के आसपास के अनेक वृद्ध व्यक्ति साक्षात्कार के समय बताते थे कि महेंदर मिसिर गुप्त रूप से क्रांतिकारियों और स्वतंत्रता की बलिवेदी पर शहीद होने वाले परिवारों को खुले हाथों से मदद करते थे। रामनाथ पांडेय ने अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'महेंद्र मिसिर' में लिखा है कि महेंदर मिसिर अपने सुख-स्वार्थ के लिए नहीं, बल्कि शोषक ब्रिटिश सरकार की अर्थव्यवस्था को धाराशायी करने और उसके अर्थनीति का विरोध करने के उद्देश्य से नोट छापते थे। इनके संबंध में व्यापक व रोचक चर्चा की गई है।

स्वतंत्रता के 76 साल बीत गए ।आज हम लोग अमृत महोत्सव मनाते दिखते हैं।लेकिन इस विषय पर गहन मंथन किया जाए तो समझ में आ जायेगा। आजादी के इतने वर्ष बीत जाने के बाद भी बहुत चीज ऐसी है जिसमे कोई बदलाव नहीं आया है। इस अंक में इस पर विस्तार से मंथन किया गया है।

पूरे विपक्ष ने मणिपुर के मुद्दे को तिल का पहाड़ बना दिया।मैं ये बात इस लिए कह रहा हूं की जब देश की संसद में अविश्वास प्रस्ताव पर बहस हो रही थी और अंत में विपक्ष के सवालों का जवाब देश के प्रधान मंत्री को देना था। लेकिन जब प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जबाब देने लगे तो पूरा विपक्ष बिना कुछ कारण के वॉक आउट कर गया। जबाब तो मणिपुर पर मिलता।लेकिन ऐसा लगा की विपक्ष

कोई बात सुनने को तैयार नही था। इस बार मणिपुर के मुद्दे को लेकर जो सरकार के द्वारा प्रयास किया गया है उस पर भी इस अंक विस्तार से चर्चा हुई।

माउई जंगल की आग, अमेरिकी इतिहास की पांचवीं सबसे भीषण आग है ,जिसमें 100 से अधिक लोग मारे गए और द्वीप शहर तबाह हो गया है। यहां अमेरिकी इतिहास की सबसे घातक जंगल की आग पर एक नजर है और इन जंगल की आग के इतनी बार लगने का कारण क्या है इस पर इस अंक में चर्चा की गई।

अंत मैं एक बार सभी को सच की दस्तक के छठ में वर्षगांठ पर हो रहे 28 अगस्त के कार्यक्रम में सम्मिलित होने प्रयास करें आपकी उपस्थिति हमारे मनोबल को काफी आगे बढ़ाएगी।

ब्रजेश कुमार

राजेन्द्र कृष्ण (1919-1987)

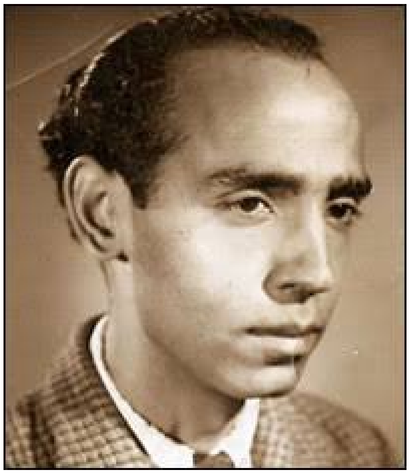

जहाँ डाल डाल पर सोने की
चिड़िया करती है बसेरा,
वो भारत देश है मेरा,
वो भारत देश है मेरा।

जहाँ डाल डाल पर सोने की
चिड़िया करती है बसेरा,
वो भारत देश है मेरा,
वो भारत देश है मेरा।

जहाँ सत्य अहिंसा और धरम का
पग पग लगता डेरा,
वो भारत देश है मेरा,
वो भारत देश है मेरा

जय भारती जय भारती

यह धरती वो जहाँ ऋषि मुनि
जपते हरी नाम की माला
हरी ओम, हरो ओम,
हरो ओम, हरी ओम

जहाँ हर बालक इक मोहन है,
और राधा इक इक बाला
और राधा इक इक बाला
जहा सूरज सब से पहले
आकर डाले अपना फेरा,
वो भारत देश है मेरा,
वो भारत देश है मेरा

जहाँ गंगा यमुना कृष्णा
और कावेरी बहती जाये।
जहां उत्तर दक्षिण
पूर्व पछिम को अमृत पिलवाये।
कहीं यह जल फल
और फूल उगाये केसर कहीं बिखेरा,
वो भारत देश है मेरा,
वो भारत देश है मेरा

अलबेलों की इस धरती के
त्यौहार भी हैं अलबेले।
कहीं दिवाली की जगमग है
होली के कहीं मेले
होली के कहीं मेले

जहाँ राग रंग और हसी खुशी
का चारो और है घेरा,
वो भारत देश है मेरा,
वो भारत देश है मेरा

जहाँ डाल डाल पर सोने की
चिड़िया करती है बसेरा,
वो भारत देश है मेरा,
वो भारत देश है मेरा।

जहां आसमान से बाते करते
मंदिर और शिवालये।

किसी नगर में किसी द्वार पर
कोई ना ताला डाले
कोई ना ताला डाले।
और प्रेम की बंसी जहाँ बजाता
आए श्याम सवेरा,

वो भारत देश है मेरा,
वो भारत देश है मेरा

जहाँ सत्य अहिंसा और धरम का
पग पग लगता डेरा,
वो भारत देश है मेरा,
वो भारत देश है मेरा

जय भारती जय भारती
जय भारती जय भारती

भारत आर्थिक शक्ति की ओर

भारत के आयात और निर्यात में थोड़ा सा अंतर आ गया है।आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक, कमोडिटी की बढ़ती कीमतों के कारण लगातार तीसरे महीने वस्तुओं का आयात 60 अरब डॉलर से ऊपर रहा। भारत के मुख्य निर्यात में परिष्कृत पेट्रोलियम, फार्मास्यूटिकल्स और चावल शामिल हैं। मई 2022 में माल और सेवाओं को मिलाकर भारत से कुल निर्यात 62.21 बिलियन डॉलर होने का अनुमान है। इस तरह के सुधार से भारत ब्रिटेन को पछाड़कर दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। अब सिर्फ अमेरिका, चीन, जापान और जर्मनी ही उससे आगे हैं। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने यह अनुमान जताया है।

ब्रजेश कुमार
संपादक सच की दस्तक

भारत की अर्थ व्यवस्था इस समय दुनिया की सबसे तेज वृद्धि करने वाली अर्थव्यवस्था है भारत ने यह मुकाम लगातार कुछ कड़े फैसले के बाद, पाने में सफलता पाई है।एक समय था की ब्रिटेन विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था मानी जाती रही उसे समय भारत 11 वें पायदान पर था ।लेकिन लगातार आर्थिक सुधार जारी रखने की वजह से आज विश्व की पांचवी अर्थव्यवस्था बन गया है और ब्रिटेन अब छठवें पर खिसक गया है।

यदि अर्थ शास्त्रियों की माने तो वह दिन दूर नही जब भारत की अर्थव्यवस्था तीसरे पायदान पर होगी । पहले ही भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसका ऐलान सार्वजनिक मंच से खुद किया है।

एक समय ऐसा था जब कोरोना ने पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था को चौपट कर दिया था जिसकी वजह से अमेरिका की आर्थिक स्थिति भी काफी खराब थी।ऐसे समय में भारत के प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी ने आपदा को अवसर में तब्दील करने का पूरे राष्ट्र से आव्हान किया।सब ने इस पर काम किया । जीडीपी गिरने के बावजूद विपक्ष की आलोचनाओं को दर किनार करते हुए केंद्र सरकार ने काम करना शुरू किया ।देश की वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने काफी कठोर निर्णय लिया। लघु उद्योग को काफी बढ़ावा दिया जहां देश में पी पी किट नही बनते थे हमे इसके लिए दूसरे देशों पर निर्भर रहना पड़ता था।जब हम लोगो ने बनाना शुरू किया तो एक समय ऐसा आया जब हम

विश्व में इसे बनाने हम नंबर एक पर पहुंच गए।जहां हम पी पी किट का आयात करते थे वहां निर्यात करना शुरू कर दिया।व्यापक स्तर पर मास्क बनाने भी शुरू कर दिया और हम अपने द्वारा बनाए गए मास्क को विदेशों में बेचना भी शुरू किया।ऐसे कई कार्य किए गए जो भारत को आर्थिक क्षेत्र बढ़ने के लिए वरदान साबित हुए। भारत ने खुद को एक मजबूत अर्थव्यवस्था के रूप में प्रदर्शित किया है। इसने लॉकडाउन के दौरान बाजार बंद होने के कारण महामारी और आर्थिक अनिश्चितताओं को सहन किया।

महामारी के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था धीरे-धीरे आगे बढ़ रही है और मजबूती से मजबूत होती जा रही है।

भारत दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। जैसे ही महामारी प्रतिबंध हटाए गए, सेवाओं की दबी हुई मांग और उद्योगों से बढ़े हुए उत्पादन ने भारत की आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा देना जारी रखा। इसमें कई कारकों ने अहम भूमिका निभाई. सेवा गतिविधि में वृद्धि और मुख्य बुनियादी ढांचा उद्योगों में मजबूत वृद्धि ने आर्थिक विकास के लिए बहुत आवश्यक समर्थन प्रदान किया। भारत सरकार की विकास को बढ़ावा देने वाली नीतियों और योजनाओं (जैसे आत्मनिर्भरता और उत्पादन से जुड़े प्रोत्साहन) ने बुनियादी ढांचे, उत्पादकता और नौकरियों में वृद्धि की है जिससे आर्थिक विकास में तेजी आई है। इसके अलावा, बढ़े हुए विनिर्माण, सेवा निर्यात और तकनीकी प्रगति ने भी विकास में सहायता की है। वित्तीय वर्ष (वित्त वर्ष) 2021-22 में ऋण ग्रहण में भी वृद्धि हुई ।

सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी

उद्योग क्षेत्र में सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (जीएनपीए) अनुपात में गिरावट (तीन वर्षों में 7.6 प्रतिशत की गिरावट) के कारण इन क्षेत्रों को ऋण देने में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। जबकि सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (जीएनपीए) अनुपात महामारी-पूर्व स्तर से अधिक रहा, सेवा क्षेत्र में ऋण वृद्धि धीमी रही। 2018 के स्तर की तुलना में, बैंकों और गैर-बैंकिंग वित्तीय फर्मों (एनबीएफसी) ने बैलेंस शीट और प्रावधानों में सुधार किया है। जब इसकी तुलना 2019 में की गई थी, तो ऋण वृद्धि अभी भी स्थायी वृद्धि के लिए आवश्यक से काफी नीचे है।

भारत के आयात और निर्यात में थोड़ा सा अंतर आ गया है।आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक, कमोडिटी की बढ़ती कीमतों के कारण लगातार तीसरे महीने वस्तुओं का आयात 60 अरब डॉलर से ऊपर रहा। भारत के मुख्य निर्यात में परिष्कृत पेट्रोलियम, फार्मास्यूटिकल्स और चावल शामिल हैं। मई 2022 में माल और सेवाओं को मिलाकर भारत से कुल निर्यात 62.21 बिलियन डॉलर होने का अनुमान है। इस तरह के सुधार से भारत ब्रिटेन को पछाड़कर दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। अब सिर्फ अमेरिका, चीन, जापान और जर्मनी ही उससे आगे हैं। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने यह अनुमान जताया है।

एक दशक पहले तक भारत बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के मामले में 11वें पायदान पर था जबकि ब्रिटेन पांचवें स्थान पर था। लेकिन अप्रैल-जून तिमाही में भारतीय अर्थव्यवस्था में रिकॉर्ड विस्तार होने से यह ब्रिटेन से आगे निकल गई है और ब्रिटेन छठे पायदान पर खिसक गया है।

ब्लूमबर्ग की एक रिपोर्ट के अनुसार समायोजित आधार पर और प्रासंगिक तिमाही के अंतिम दिन डॉलर विनिमय दर को ध्यान में रखते हुए मार्च में खत्म तिमाही में भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार 'सांकेतिक' नकदी के साथ 854.7 अरब डॉलर था। इसी पैमाने पर ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था का आकार 816 अरब डॉलर था।'

कोटक महिंद्रा बैंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी उदय कोटक ने के अनुसार दुनिया की पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में अपने औपनिवेशिक शासक ब्रिटेन को पीछे छोड़ना भारत के लिए गर्व की बात है। ब्रिटेन की 3,200 अरब डॉलर की अर्थव्यवस्था के मुकाबले भारत की अर्थव्यवस्था 3,500 अरब डॉलर की है। लेकिन जनसंख्या के लिहाज से देखें तोः भारत की 1.4 अरब आबादी की तुलना में ब्रिटेन की जनसंख्या 6.8 करोड़ है। प्रति व्यक्ति जीडीपी हमारे 2,500 डॉलर की तुलना में वहां 47,000 डॉलर है।

भारत की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के लिए यह कितना प्रभावशाली पड़ाव है। अगले कुछ वर्षों में हम शीर्ष तीन में शामिल होंगे। इन्ही सब वजहों से ही प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि 2047 तक भारत एक विकसित राष्ट्र बनेगा।जो बिल्कुल सत्य है। ■■

स्वतंत्रता vs स्वच्छंदता

पूरा का पूरा देश स्वतंत्र होने के इतने सारे साल बीत जाने के बावजूद ढेरों समस्याओं, विपदाओं और विषमताओं से घिरा हुआ है। एक तरफ राष्ट्रीय समस्याओं का दावानल किसी न किसी मुखौटे के साथ सिर उठा लेता है दूसरी तरफ हर क्षेत्र और कोने की अपनी कोई न कोई समस्या सामने आ ही जाती है। और कुछ नहीं तो कभी अकाल, सूखे, अतिवृष्टि और बाढ़, महामारी तो कभी भूस्खलन, भूकंप और समुद्री लहरों का भीषण प्रकोप झेलने जैसी विवशताएँ हमारे सामने न्यूनाधिक रूप से सदैव बनी रही हैं। इनमें प्राकृतिक आपदाओं को छोड़ दिया जाए तब भी मानव जनित आपदाओं की संख्या भी कोई कम नहीं है और इन सभी आपदाओं का मूल कारण है हमारी स्वच्छन्दता ।

आकांक्षा सक्सेना
न्यूज ऐडीटर सच की दस्तक

स्वतंत्रता कभी पलायन की पक्षधर नही रही अपितु लोकमंगल हेतु सबसे जुड़ने जोड़ने का उद्यम रही है।.

हाल ही में हमने स्वतंत्रता दिवस मनाया है। स्वतंत्रता का असली मतलब है सुकून। परन्तु आज पूरी दुनिया में सूचना एवं संचार क्रांति और मर्यादाओं का टकराव प्रकृति की चिरशांति को ध्वस्त करने पर आमादा है। सोशल मीडिया पर जहां अमर्यादित होते जज्बात पलक झपकते ही साइबर जगत में जीवन के समस्त आयामों पर भूकम्प का कारण बन रहे हैं। जोकि इंसानी भविष्य के लिए अच्छा संदेश नही है।

आज मानवजीवन कुछ ऐसे स्पृहणीय लक्ष्यों या चाहतों की ओर संचालित होता है। जिस पर कोई बंदिश नहीं होती। सिवाय कुछ अपने द्वारा लगाये गये प्रतिबंधों के। यहि प्रतिबंध और समाज का डर, आदमी को पशु बनने से रोकता है । धर्म इंसान को ग्राह्य और अग्राह्य के बीच श्रेय और प्रेय के बीच भेद करने का विवेक प्रदान करता है। साथियों! स्वतंत्रता कभी निरपेक्ष नही होती पर हमारी कलयुगी महत्वाकांक्षाओं के कारण हम स्वच्छंदता को फैशन और स्टाइल मानकर यह विष पान किये चले जाते हैं। जबकि नंगेपन को कभी भी

फैशन के दायरे में नही लाया जा सकता परन्तु आज के आधुनिकीकरण के माहौल और नेम, फेम, मनी कमाने के चक्कर में इंसान पूर्ण रूप से विवेकहीन पशु होता चला जा रहा है। और हैरानी की बात तो यह है कि पशुता ही आज का फैशन है। सही मायनों में स्वतंत्रता तभी सिद्ध होगी जब हमारा आत्मबोध व्यापक बनेगा। और पूरे परिवार, समाज, देश, विदेश की चिंता हमारी चिंता का हिस्सा बनेगी। क्योंकि वैश्वीकरण के दौर में अकेला व्यक्ति या अकेला देश किसी उन्नत जीवन की चोटियों और अंतरिक्ष की विराटता को नहीं नाप सकता।

बता दें कि स्वच्छंदता, स्वतंत्रता नहीं होती है। जिसके मन में जो आता है, वह बिना भूत - भविष्य, वर्तमान देखें पाप करने में लगा है। आजादी मिले... साल हो गए पर अभी भी हम मानसिक रूप से गुलाम ही हैं। मैं यह बात इसलिए कह रही हूँ कि आज भी 21वीं शदी में हम अपने ही एक भाई को मूँछ रखने, घोड़ी चढ़ने और स्पर्श करने पर उसके साथ जानवरों जैसा वर्ताव करते हैं। हम उन्हें सदा मल उठाते, सीवर लाइनों में कीचड़ में गौंता निकालते देखने की कलुषित बीमार मानसिकता से ग्रसित हैं। स्वंय को स्वंभू और दूसरों को दरिद्र देखने में उत्सुक हैं। मैं पूछना चाहती हूं कि आखिर! उस समाज विशेष का क्या कसूर है कि वह मल उठाने के लिए ही पैदा हुए हैं क्या ? आज भी स्वच्छताकर्मियों को जमीन पर रूपये देते देखतीं हूं, सीधे हाथ से हाथ में नही। क्यों क्या वह बिजली का नंगा तार हैं कि आपको करेंट लग जायेगा । अगर आप स्वंय ऊंच और दूसरे को नीच समझने की मानसिक बीमारी से ग्रसित हैं तो कहीं अपने दिमाग का सही इलाज करायें। क्योंकि परमात्मा ने आपने शरीर में उतनी ही आत्मा रखी है जितनी उनके शरीर में। यह जो आपका अंहकार है, यही आपके विनाश का कारण है। और सही मायनों में अंहकार ही स्वच्छंदता की चरम सीमा है। और यह अस्तित्व, अंहकार का ही भोजन करता है। इस धरती पर किसी का अंहकार नहीं रहा। इसीलिए शांत और विशाल हृदय से सबको समान सम्मान देते हुए प्रत्येक व्यक्ति देश के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझे, तभी हम देश के अमर शहीदों को स्वप्नों को साकार कर सकेंगे। आखिर! हमने स्वतंत्र भारत में जन्म लिया, यह हमारा सौभाग्य है। हम सबको मिलकर भारत को अखंड रखना है। क्योंकि स्वतंत्रता और सहजता मानव अधिकार का महत्वपूर्ण हिस्सा है। स्वतंत्रता के बिना कोई भी समाज स्वयं समृद्ध नहीं हो सकता। स्वतंत्रता का सही अर्थ है भीतर-बाहर से सभी प्रकार के व्यक्तिगत स्वार्थों से मुक्त होने की अवस्था और विनम्र भाव से कर्म करने की निपुणता । अपना सब-कुछ देश-राष्ट्र और समाज के लिए त्याग और बलिदान कर देने की मनोदशा , न कि केवल नारे लगा कर अपने प्रिय नेता के स्वार्थों की पूर्ति में रम जाने का नाम स्वतंत्रता है। वह मात्र स्वच्छन्दता है, वोटलोलुपता है परन्तु स्वाधीनता की स्पर्श नहीं। बिना स्वार्थ-त्याग किए स्वतंत्र या स्वाधीन हो पाना संभव नहीं, जबकि हम लिप्त तो रहते हैं अपने प्रिय नेता के घृणित स्वार्थों को पूरा करने में और नाम लेते हैं स्वतंत्रता-स्वाधीनता का । अतः, आवश्यकता उस संकुचित मानसिकता से छुटकारा पाने की है, कि जो हमें स्वच्छन्द यानि अपने तक सीमित रोमानियत में निमग्नरखा करती है। उससे छुटकारा पाकर ही स्वतंत्रता या स्वाधीनता का वास्तविक अर्थ तो समझा ही जा सकता है, उसका आनन्द भी लिया जा सकता है। खुद आनन्द लेकर अपने पूरे समाज, देश और राष्ट्र के लिए सुख-समृद्धि और आनन्द का वातावरण बनाया जा सकता है। राजनीतिक स्वतंत्रता तो हमने वर्षों पहले पा ली थी, अब बौद्धिक-मानसिक स्वतंत्रता भी पानी है। तभी उस स्वच्छन्दता से छुटकारा संभव हो सकता है कि जिसने हमें निरंकुश और उच्छृखल बना रखा है और पथभ्रष्ट किया हुआ है। दो शब्दों में कहूँ तो स्वतंत्र वही है जिसका स्वयं पर संयम है और जीवनका लक्ष्य निश्चित है। वहीं, स्वच्छंद वह है जिसके जीवन में संयम नहीं है और अपनी विवेकहीन बुद्धि के अनुसार ही चलता है। न समाज, न धर्म को मानता है। आज विडम्बना यह है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के इतने वर्षों बाद भी हमें समाजसुधार के लिए अभियान चलाने पड़ते हैं, नशामुक्ति की बातें करनी पड़ती हैं, अपराधों के उन्मूलन के लिए पूरी की पूरी ताकत लगानी पड़ती है, नारी अत्याचार होते हैं, तरह-तरह का आतंकवाद पाँव पसारता ही जा रहा है, भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी अन्य-आय की तरह घर करने लगी है, हद दर्जे की कामचोर मनोवृत्ति बढ़ती ही जा रही है, समय पर आने-जाने और काम करने की प्रवृत्ति का अभाव हो रहा है। ज्यादातर आज का युवा पुरुषार्थहीनता और जड़ता के साये में जी रहा है। हमारी पूरी की पूरी शक्तिशाली

पीढ़ी सारे ज्ञान और हुनर होने के बावजूद बेकार-बेरोजगार है और कुण्ठाओं में जीवन यापन कर रही है।

हर तरफ तनावों, काम के बोझ के मारे जीवनीशक्ति का ह्रास हो रहा है, सभी लोग दैहिक, दैविक, भौतिक दुःखों से परेशान नज़र आते हैं। कोई खुद के कर्मों और सोच से परेशान है, कोई दूसरों की वजह से।

पूरा का पूरा देश स्वतंत्र होने के इतने सारे साल बीत जाने के बावजूद ढेरों समस्याओं, विपदाओं और विषमताओं से घिरा हुआ है। एक तरफ राष्ट्रीय समस्याओं का दावानल किसी न किसी मुखौटे के साथ सिर उठा लेता है दूसरी तरफ हर क्षेत्र और कोने की अपनी कोई न कोई समस्या सामने आ ही जाती है। और कुछ नहीं तो कभी अकाल, सूखे, अतिवृष्टि और बाढ़, महामारी तो कभी भूस्खलन, भूकंप और समुद्री लहरों का भीषण प्रकोप झेलने जैसी विवशताएँ हमारे सामने न्यूनाधिक रूप से सदैव बनी रही हैं। इनमें प्राकृतिक आपदाओं को छोड़ दिया जाए तब भी मानव जनित आपदाओं की संख्या भी कोई कम नहीं है और इन सभी आपदाओं का मूल कारण है हमारी स्वच्छन्दता । आज स्वच्छन्दता चरम पर है तभी आज मणिपुर में जो नारी मान हनन हम सबने देखा उससे बुरा शायद ही कुछ हो सकता है। काश! की देश के कानून इतने सख़्त हो जायें कि परिंदा भी भारत की बहन बेटी के पास फटकने से डरे। तब तो हम कह सकें कि हाँ अब हम स्वतंत्र है। आज भी बहन बेटी की आबरू स्वच्छंदता के निशाने पर है। सच पूछो तो हमने स्वतंत्रता का गलत अर्थ लगा लिया है और स्वतंत्रता की जगह मनमाफिक और भरपूर स्वच्छन्दता को अपना लिया है। अतः, इतिहास साक्षी रहा है कि रावण ने सीता-हरण कर स्वच्छन्दता प्रकट की, तो स्वर्णमयी लंका का विनाश हुआ। कौरवों ने द्रौपदी के चीरहरण का स्वच्छन्द कृत्य किया, तो महाभारत का युद्ध हुआ। 'कामायनी' के मनु ने इड़ा से स्वच्छन्द आचरण करना चाहा, तो मनु आहत हुए। इन्दिरा गाँधी ने सत्ता में स्वच्छन्दता का उपयोग किया, तो न केवल वे, बल्कि उनकी पार्टी भी चाहे एक बार ही सही, सत्ता-सुख से वंचित हुई। और आज तक उनकी पार्टी को देश सीरियस नहीं लेता। यहां तक कि तथाकथित लोगों ने उनके शीर्ष नेता तो पप्पू कैटगरी में डाल रखा है।

देश में सामाजिक स्वच्छन्दता ने भी अपने पैर फैलाए। समाज स्वच्छन्दता की ओर बढ़ा, तो सर्वत्र गुंडा-गर्दी का साम्राज्य स्थापित हुआ। नर-नारी की स्वतंत्रता स्वच्छन्द समाज-द्रोही तत्त्वों के हाथों गिरवी हो गई। दुर्बल-वर्ग से मारपीट, नारी से बलात्कार और बच्चों को उठा ले जाना उनकी स्वच्छन्दता के प्रतीक हैं। दूसरी ओर समाज में दहेज के दानव ने पुरुष की स्वतंत्रता को स्वच्छन्दता में बदला और नारी की स्वतंत्रता घोर परतंत्रता में परिवर्तित हुई। परिणामतः वह पुरुष-स्वच्छन्दता के सम्मुख पैर की जूती बनी, मारपीट, गाली-गलौज अपमान, भूख और उपेक्षा की पीड़ा में उसकी अग्नि-परीक्षा होने लगी। और रही बची कसर भ्रष्टाचार के कारण, जनसंख्या विस्फोट और शिक्षा के गिरते स्तर के परिणाम स्वरूप युवाओं को बेरोजगारी का दंश झेलने पर विवश किया हुआ है। आजादी के इतने समय बाद भी जनसंख्या नियंत्रण पर कठोरता सिद्ध नही होती, देवनिंदा पर उदासीनता रहती है और रेप पर भी हल्ले के बाद सब चुप्पी साध ली जाती है, कोर्ट में गुड़िया सी आती लड़की तारीख पर तारीख मिलने के कारण बढ़िया हो जाती है। आखिर! हर केस की दीवानी या क्रिमिनल केस में कोई तो निश्चित समय सीमा निर्धारित हो। आम जन और नेताओं की पैंसन में कुछ तो पारदर्शिता हो। है यह कि संसद और विधानसभाओं में पार्टी-बहुमत ने सत्ता को स्वच्छन्दता प्रदान कर दी। पाशविक बहुमत के आगे विपक्ष बौना बन गया। श्रीमती इन्दिरा गाँधी का 19 मास का आपत्-काल अर्थात् 'गुलामी' सत्ता की स्वच्छन्दता का ही तो खुला उपभोग था। 'इन्दिरा इज इण्डिया' का उद्घोष स्वच्छन्द 'अहम' की पराकाष्ठा ही तो थी।

बता दें कि पीएम मोदी के आने से पहले राजनीतिक स्वच्छन्दता का नग्न रूप देखा जा सकता था। उन दिनों को देखिए, जहाँ 'लॉ एण्ड आर्डर' गुंडों और अराजकतावादी तत्त्वों का पानी भरता था। अराजकता की स्वतंत्रता ने उग्रवादी स्वच्छन्दता का चीथड़ा पहन रखा था। बिहार, असम, उड़ीसा और आंध्र के उग्रवाद ने मानव-जीवन को मूल्यहीन बना दिया तो कश्मीर पाकिस्तान समर्थक उग्रवादियों का गढ़ बन गया। दूसरी ओर, विदेशी पूँजी की स्वतंत्रता ने भारत के उद्योगों को स्वायत्तता से स्वच्छन्द कर भारत-भू पर जन्म लेने वाले हर नवजात शिशु को विदेशों का ऋणी बना दिया है। इस प्रकार भारतवासी आर्थिक दृष्टि से

विदेशों का गुलाम बनता जा रहा है, स्वतंत्र सत्ता की स्वच्छन्दता का यह अभिशाप है कि केन्द्र में सरकार बदलने पर भी आज हम उसका कुफल भोग सकते हैं। यहां तक कि मैकाले की शिक्षा यह बताती है कि अब यह शुद्ध भारतीय नहीं रहेगें और बिना अंग्रेजी के यह पंगु रहेगें। सोचो! जड़ ही संदिग्ध कर दी गयी तो आगें का नज़ारा घातक है। स्वतंत्रता में जिस राष्ट्र के मानव या समाज ने स्वच्छन्दता से गुरेज किया, यह ऊपर उठता चला गया, आगे बढ़ता चला गया। जापान और इजराइल का उदाहरण सामने है। इजराइल के सैन्य-बल और जापान के औद्योगिक साम्राज्य ने विश्व को चकाचौंध कर दिया है। मुस्लिम समाज और धर्म में स्वतंत्रता को स्थान है, स्वच्छन्दता को नहीं। किसी पीर-पैगम्बर पर उँगली तो उठाकर देखिए, पवित्र कुरान के विरुद्ध कुछ लिखकर देखिए, उसकी कितनी कीमत चुकानी पड़ेगी, विरोधी समाज को। इसलिए मुस्लिम धर्म विश्व का दूसरा धर्म बन गया। वहीं हम सनातनियों की देवी लक्ष्मी, लक्ष्मी छाप तंबाकू के पैकिट पर छपीं होती हैं जो बाद में नालियों में बहता दिखता है। हाल ही में रामायण पर कितनी भद्दी फिल्म बनी परन्तु हिंदू सहिष्णु है। हिन्दू देवी-देवताओं की नग्न तस्वीरें पैंटिग्स बनती हैं पर हम चिल्लाकर शांत हो जाते हैं। जानते हो क्यों? क्योंकि यह स्वच्छंदता हमने लोगों को सौंपी हुई हैं वरना मुस्लिम पैगंबर पर आज तक कोई फिल्म वाला फालतू फिल्म या पैंटिग्स आदि बनाकर देखें तो उसका जो होगा वो हम सब जानते हैं। सनातनियों को भी धर्म के मामले में कुछ

सीमायें मर्यादाएं निर्धारित करनी होगीं कि स्वतंत्रता रहे परन्तु स्वच्छंदता बर्दाश्त न हो। स्वतंत्रता का अर्थ 'स्व' को 'तंत्र' (विशेष व्यवस्था) के अधीन रखकर जीवन में विकास करना है, न कि स्वः को तंत्र के बंधन से मुक्त रखकर जीने की विवशता। स्वतंत्रता परमात्मा की देन है, जो सत्, चित् और आनन्द का स्रोत है। इसका उपभोग प्राणि-मात्र का अधिकार है, पर इसका यह अर्थ नहीं कि उस स्रोत को अवरुद्ध कर दे या भ्रष्ट आचरण से मलिन कर दें।सही मायनों में स्वतंत्रता मर्यादित होकर आचरण करने और मानवीय आधारों को इंगित करती है जबकि स्वेच्छाचारिता और स्वच्छन्दता अपने आप में अमर्यादित आचरण का दूसरा नाम है जिसमें न कहीं कोई वर्जना है, न मर्यादाओं के पालन की कोई बाध्यता।

अपने-अपने हिसाब से खुद के जायज-नाजायज स्वार्थों की पूर्ति के लिए किया जाने वाला हर प्रकार का स्वेच्छाचारी आचरण करना ही अपने आप में स्वच्छन्दता आकार लेती चली जा रही है। हम लोग स्वतंत्रता को ताक में रखकर आजकल इसी का आचरण करने लगे हैं।हममें से किसी को भी यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि हम लोग किस प्रकार से उन्मुक्त, निरंकुश और बेफिक्र होकर स्वेच्छाचार कर रहे हैं, कौन लोग हैं जो इसमें आगे हैं और कौन से लोग हैं जो इसमें पीछे हैं। हम इस मामले खुद ही अपना आत्मचिन्तन कर लें यह अच्छा होगा।आज का यह स्वतंत्रता दिवस हमें इसी बात की याद दिलाता है कि हम स्वतंत्र हैं, स्वतंत्र बने रहें और स्वतंत्रता की मर्यादाओं का पालन करें, कोई भी सीमा रेखा न लांघे, राष्ट्रहित, राष्ट्ररक्षा और राष्ट्रीय चरित्र को जीवन में सर्वोपरि रखें और राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के साथ सर्वमंगल के लिए समर्पित हों। स्वतंत्रता को गौण मानकर स्वच्छन्दता का जो राष्ट्र आचरण करता है वह अपनी स्वतंत्रता खो देता है।आज का यह पावन दिवस यही कह रहा है। आईये देश के लिए जीने-मरने का ज़ज़्बा पैदा करें और पुण्यधरा भारतभूमि पर जन्म लेना सार्थक करते हुए नया इतिहास रचने में भागीदार बनें। ■■

ब्रिटिश साम्राज्य की अर्थव्यवस्था को डांवाडोल करने वाले भोजपुरी के भारतेंदु

महेंद्र मिसिर

चालिए, आजादी के हर बलिदानियों के परिवार का पोषण किया जाए.....

गुलामी के कालखंड में एक ऐसा भी व्यक्तित्व हुआ जिसने अपनी कृतित्व की कलम से भोजपुरी पुरबी को ही प्रखर नहीं किया अपितु भोजपुरी भाषा में 'अपूर्व रामायण' की रचना कर अद्वितीय आभा का भी परिचय दिया।

जी हां, इस व्यक्तित्व का नाम है महेंद्र मिसिर के स्वरचित पदों से अति प्रसन्न होकर एक अंग्रेज अफसर ने नोट छापने वाली एक मशीन ही भेंट कर दी। फिर क्या था महेंद्र मिसिर ने अपने आसपास के समस्त बलिदानों के शोकाकुल परिवारो और क्रांतिकारियों को आर्थिक मदद कर एक अद्वितीय और अविस्मरणीय कार्य किया। जो, किसी जख्म को मरहम लगा दे वही तो परमात्मा है। ऐसे महान बलिदानी सेवक और रचनाधर्मी को मैं नमन करता हूं और आजादी के इस अंक में विशेष लेख प्रस्तुत करता हूं.....

कृष्णकांत श्रीवास्तव
(वरिष्ठ रंगकर्मी-साहित्य धर्मी)

कृष्णकान्त श्रीवास्तव
वरिष्ठ रंगकर्मी - रचनाकर्मी

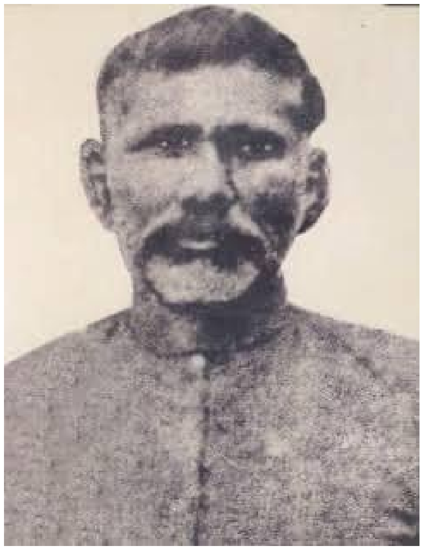

माया की नगरिया में लागल बा बजरिया,

चिजवा बिकेला अनमोल

हे सुहागिन सुना.....

पार करे के बा भव से बैतरनी बोलत रहा दो मीठे बोल हे

ढेला रानी।

राग-विराग-अनुराग से विरक्त होकर अपनी आत्मा संगिनी नर्तकी ढेलाबाई की स्मृति में पंद्रह वर्षों तक वैरागी जीवन व्यतीत कर अपने अंतकाल तक जीवंत रहने वाले भोजपुरी साहित्य पूर्वी के पारखी पुरोधा तथा भोजपुरी के प्रथम महाकाव्य 'अपूर्व रामायण' के रचयिता महेंद्र मिसिर जी के उपर्युक्त निर्गुण के अतिरिक्त रसमाधुर्य से ऊर्वर बना देने वाले सैकड़ो गीत इतने लोकप्रिय हुए कि आज तक महफिले सजती हैं, कंगन खनकते हैं, घुंगरू बजते हैं, पायलिया छनकती है और कानों के झुमकों के साथ मंच पर लगते हैं ठुमके....

1.अंगुरी में डसले बिया नगीनिया

हे ननदी दियवा जरा द

2.आधि आधि रतिया कुहके कोयलिया

राम बैरनिया भईली ना

3.पनिया के जहाज से पालटनीया बनी अईह

पिया ले ले अईह हो सेंदुर बंगाल के

4. हंसी हंसी पनवा खिअवले गोपीचंनवा

पिरितिया लगाके ना....

कुछ शाब्दिक परिवर्तन के साथ फिल्मों में शामिल किए गए महेंद्र मिसिर के कुछ गीत-

फिल्म 'तकदीर' में अभिनेत्री नरगिस के ऊपर फिल्मायी गई यह ठुमरी....

बाबू दरोगाजी कवने कसूरवा भइल सैईया मोर,

ना मोरा सैईयां लुच्चा लंगटवा

ना मोरा सैईया चोर....।

सुनील दत्त और वहीदा रहमान की फिल्म 'मुझे जीने दो' में...

नदी नारे ना जाओ श्याम पैयाँ परो...इत्यादि।

जीवन परिचय

महेंद्र जी का जन्म बिहार के छपरा से 12 किलोमीटर दूर उत्तर स्थित जलालपुर प्रखंड के पास एक गांव मिसिरवलिया में 16 मार्च 1886 को मंगलवार के दिन ब्राम्हण परिवार में हुआ था। पिता का नाम शिवशंकर मिश्र था। ऐसा माना जाता है कि महेंद्र का जन्म किसी शिवभक्त साधु के आशीर्वाद से हुआ था। इसी साधु के कहने पर बालक का नाम महेंद्र रखा गया। गांव के बीचोबीच एक जोड़ा मंदिर, हनुमान जी का अखाड़ा और निरंतर चलने वाला रामायण पाठ उल्लेखनीय है। घर के पास संस्कृत पाठशाला थी जिस के सानिध्य में महेंद्र जी को अभिज्ञान शाकुंतलम् , रघुवंशम, ऋतुसंहार आदि का ज्ञान हुआ। फलतः वे भक्ति काव्य, श्रृंगार काव्य और प्रकृति वर्णन की परंपरा से परिचित हुए। उनके अंतर्मन में जो कवि-गीतकार सुषुप्त पड़ा था वह अंगड़ाइयां लेने लगा। महेंद्र जी का विवाह रूपरेखा देवी से हुआ जिससे एक बेटा हुआ हिकायत मिसिर।

महेंद्र जी का व्यक्तित्व ऐसा था जैसे इंद्रधनुष ....एक से बढ़कर एक रंग उनके व्यक्तित्व में समाहित था। पहलवानी का कसा लंबा चौड़ा बदन, चमकता माथा, शरीर पर सिल्क का कुर्ता, गर्दन में सोने की चेन और मुंह में पान का बीड़ा।

प्रसिद्ध गायिका और नृत्यांगना ढेलाबाई से संपर्क

एक नृत्यांगना अपनी भाव भंगिमा से मात्र मनोरंजन ही नहीं करती अपितु एक सृजन संगिनी बनकर लोकरंजन भी प्रदान करती है। यह एक ऐसी तवायफ है जो अपने इल्में अदब से तहजीब और तालीम की ताबीज भी पहनाती है। भोजपुरी पूर्वी के जनक महेंद्र मिसिर के साथ नृत्यांगना ढेलाबाई के समीप्य की तुलना उसी प्रकार की जा सकती है जैसे महाकवि जयशंकर प्रसाद संगीत-नृत्य से मंत्रमुग्ध होकर बनारस की प्रसिद्ध गायिका- नृत्यांगना सिद्धेश्वरी बाई के सानिध्य में समीप होने लगे थे अथवा भारतेंदु हरिश्चंद्र बंगाली गायिकाओं मल्लिका और माधवी के कोठे पर सृजनात्मक डोर में खींचकर जाने लगे थे अथवा रीतिकाल के कवि घनानंद ने नृत्यांगना सुजान के साहचर्य से अपनी भावयित्री-कवियित्री प्रतिभा के विन्यास के लिए कोमलता, प्रेरणा और गंभीर प्रेम की अभिव्यंजना प्राप्त किया था।

महेंद्र जी छपरा के तत्कालीन जमींदार हरिवंश सहाय के अंतरंग मित्र, शुभचिंतक और सलाहकार थे। महेंद्र जी ने अपने मित्र विधुर हरिवंश सहाय के लिए मुजफ्फरपुर के एक कोठे की प्रसिद्ध गायिका और नृत्यांगना ढेलाबाई का अपहरण कर लिया। हरिवंश सहाय ने ढेलाबाई को अपनी पत्नी का दर्जा दिया लेकिन कुछ ही समय बाद वे चल बसे। उनके परिवार वालों ने ढेलाबाई को मानने से इनकार कर दिया और संपत्ति से बेदखल कर दिया। महेंद्र मिसिर को अपने 'अपहरण-कर्म' पर बड़ा दुख हुआ और फिर उन्होंने ढेलाबाई की मदद करने, उनको उनका हक दिलाने में में कोई कसर नहीं छोड़ी। महेंद्र मिसिर और ढेलाबाई के नेह-बंध कई किस्से लोग प्रचलन में है।

संवेदना पूर्ण क्रांतिकारी व्यक्तित्व

इस समय पूरे देश में ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ स्वतंत्रता आंदोलन चल रहा था। जमीदारी प्रथा कमजोर पड़ती जा रही थी और महेंद्र जी के परिवार की माली हालत खस्ता होती जा रही थी। महेंद्र जी गांव छोड़ कोलकाता आ गए। वहाँ के विक्टोरिया मैदान में सुभाषचंद्र बोस का उत्तेजक भाषण सुन उनका मन बेचैन हो गया और उन्होंने देश के लिए कुछ करने का ठान लिया। एक अंग्रेज अफसर ने महेंद्रजी के कवि हृदय की विवशता, ढेलाबाई के दुखी जीवन की हाहाकार कथा, घर-परिवार की खस्ता हालत और अपने देश के लिए कुछ करने की तड़प को देख कर उन्हें नोट छापने की मशीन दी। इस मशीन को लेकर वे गांव वापस आए और गुपचुप तरीके से नोट छापने लगे। वे अपने सुख के लिए नहीं बल्कि अत्याचारी एवं शोषक ब्रिटिश हुकूमत की अर्थव्यवस्था को धाराशाही करने और उसकी अर्थनीति का विरोध करने के लिये नोट छपते थे। फिर भी इससे उनके घर की रौनक और जमींनदारी ठाट लौट आई। असहाय ढेलाबाई की मदद भी होने लगी। इसके साथ-साथ गीत-गवनई की महफिल भी सजने लगी। संगीत के प्रति अपने प्रेम के कारण महेंद्र जी अपनी संगीत-साधना के लिए कभी-कभी मुजरा- महफिल और नर्तकिओं-गायिकाओं के पास जाकर गायन-वादन में संगत करके अपनी प्रेरणा और अपने कलाकार मन को पुष्ट करते थे। मिसिरजी को हारमोनियम, तबला, झाल, पखावज, मृदंग एवं बांसुरी बजाने में महारत हासिल थी, साथ ही उन्हें ठुमरी, टप्पा, गजल, कजरी, दादरा, खेमटा जैसी गायकी में भी जबरदस्त

पकड़ थी। कोलकाता, बनारस, मुजफ्फरपुर आदि कई जगहों की तवायफें महेंद्र जी को अपना गुरु मानती थी और उनके द्वारा लिखे गए गीतों से अपने कोठों की महफिले सजाती थीं।

गीत-संगीत की महफ़िलो के बीच महेन्द्र जी का मन राष्ट्रीय आंदोलन की ओर भी आकर्षित था। कवि महेन्द्रजी की विवशता थी कि वे किसी को भी छोड़ नहीं सकते थे....

एक ओर कामायनी की श्रद्धा थी तो दूसरी ओर कामायनी की इड़ा। वे इन दोनों में सामंजस्य स्थापित करके संगीत एवं कविता के सृजन के साथ-साथ समाज और राष्ट्र की सेवा भी करते थे....

हमका नीको ना लागे राम गोरन के करनी....।

महेंद्रजी गुप्त रूप से स्वतंत्रता आंदोलन में शहीद होने वाले परिवारों और क्रांतिकारियों की भरपूर आर्थिक सहायता करते थे। अनेक क्रांतिकारी युवक मिसिरवलिया गांव आते थे। महात्मा गांधी के आवाहन पर आयोजित होने वाले धरना- जुलूस आदि कार्यक्रमों में भाग लेने वाले सत्याग्रही के भोजन आदि की पूरी व्यवस्था महेन्द्र जी ही करते थे। धीरे-धीरे पूरे उत्तर भारत में महेंद्र जी द्वारा छापे गए जाली नोटों की भरमार हो गई और अंग्रेजी सरकार की अर्थव्यवस्था डगमगाने लगी। जाली नोट छापने वाले का पता लगाने के लिए इंस्पेक्टर जटाधारी, गोपीचंद के नाम से महेन्द्र जी के घर नौकर बनकर रहने लगे। उसकी रिपोर्ट पर 6 अप्रैल 1924 को महेन्द्र जी के घर पुलिस का छापा पड़ा। महेन्द्र जी को तीन साल की सजा हुई। बक्सर जेल जाते समय महेन्द्र जी के कंठ से दर्द भरा यह गीत निकला.....

'पाकल पाकल पनवा खिअवले गोपीचनवा,

पिरितिया लगाके भेजवले जेलखनवा..'। इंस्पेक्टर जटाधारी उर्फ गोपीचंद ने महेन्द्र जी के पैर पकड़ लिए और कहा...'बाबा हम ड्यूटी से मजबूर हैं लेकिन आपने देश के लिए बहुत कुछ किया है देश के लिए ही आप जेल जा रहे हैं'....

'ब्रिटिश के कईल हलकान हो महेंदर मिसिर,

सगरी जहनवा में कईलन बड़ा नाम हो महेंदर मिसिर।'

महेन्द्र जी जेल में भी तबला और हारमोनियम के साथ कविता और संगीत की मधुर रसधार बहाते रहे। जेल में ही उन्होंने भोजपुरी का पहला महाकाव्य 'अपूर्व रामायण' लिखा।

जेल से रिहाई एवं काव्य संगीत साधना

जेल से रिहा होकर महेन्द्र जी अपने गांव में नौटंकी शैली में कीर्तन, रामकथा, कृष्णकथा करने लगे। जिस तरह गोस्वामी तुलसीदास ने अवधी भाषा में रामकथा को जन-जन तक पहुंचाया उसी तरह महेन्द्र जी ने भोजपुरी भाषा में रामकथा का प्रचार-प्रसार किया।

भिखारी ठाकुर से मित्रता

भिखारी ठाकुर, महेंद्र मिसिर के समकालीन थे। ऐसा कहा जाता है कि महेन्द्र जी ही भिखारी ठाकुर के साहित्यिक-सांगीतिक गुरु थे। बरसात का मौसम भिखारी ठाकुर महेन्द्र जी के दरवाजे पर ही बिताते थे। महेन्द्र जी ने ही उनको झाल बजाना सिखाया था।

महेन्द्र जी का 'टूटही पलानी वाला गीत' भिखारी ठाकुर के विदेशिया के नींव बना। आलोचक महेश्वराचार्य कहते हैं.... 'जो महेन्द्र ना होते तो भिखारी ठाकुर भी नहीं पनपते'।

जीवन का अंतिम पहर

किसी भी पल को यह नहीं पता कि पलक झपके उसका आने वाला पल कब हो जाए निसप्राण। महेन्द्र जी की प्रेरणा और चहेती ढेलाबाई धीरे-धीरे अस्वस्थ होने लगी, बिस्तर से चिपक गई। अंत करीब था। दोनों ने नजरे मिलाई और संवाद का आदान प्रदान किया। ढेलाबाई ने अपनी अंतिम इच्छा प्रकट करते हुए महेन्द्र जी से एक गीत गाने का अनुरोध किया। महेंद्रजी ने निर्गुण सुनाया......

'ए सुहागिन सुना

माया के नगरिया में लागल बा बजरिया,

चिजवा बिकेला अनमोल......।

यह निर्गुण सुनते-सुनते ढेलाबाई के प्राण पखेरू उड़ गए और अगले पन्द्रह वर्षों तक महेन्द्र जी राग-अनुराग से विरक्त हो बैरागी हो गए। छपरा में निर्मित ढेलाबाई के कोठा के पास बने एक शिवालय में निर्गुण गाते-गाते मात्र आठ दिन ही बीमार रहने के पश्चात 26 अक्टूबर 1956 को महेन्द्र जी ने अपना अंतिम निर्गुण गाया......

'बनवारी हो कईसे जाईब ससुराल,

आ गइले डोलिया कहार हो,

कईसे जाईब ससुराल.....

कुछ क्षण बाद महान पुरबी गीतकार महेन्द्र मिसिर शिवलिंग के पास गिर गए और अपना नश्वर शरीर त्याग दिया।

सृजन संपदा

महेन्द्र जी द्वारा रचित बीस काव्य संग्रहो की चर्चा उनके महाकाव्य अपूर्व रामायण और अन्य स्थानों पर मिलती है। महेन्द्र मंजरी, महेन्द्र विनोद, महेन्द्र दिवाकर, महेन्द्र प्रभाकर, महेन्द्र रत्नावली, महेन्द्र चंद्रिका, महेन्द्र कुसुमावती,सात खंडों में अपूर्व रामायण, महेन्द्र मयंक, भागवत दशम स्कंध, कृष्ण गीतावली, भीष्म वध नाटक आदि की चर्चा हुई है। इनकी रचनाओं का आधार शृंगारिक है पर मूल भावना भक्तिमय है। उनके संपूर्ण लेखन में आए तत्सम शब्दों का प्रयोग, यत्र-तत्र आये संस्कृत के श्लोक तथा पौराणिक प्रसंग इस बात को प्रमाणित करते हैं कि उन्हें साहित्य के सभी विधाओं का ज्ञान था। महेन्द्र जी ने भोजपुरी और खासकर पूरबी गीतों का अद्भुत परिमार्जन किया है। उनके पूरबी गीत ना तो किसी परंपरा की उपज हैं, ना नकल है, ना ही उनकी नकल संभव है।

सृजन उद्देश्य

तत्कालीन युग की आम जनता (लोकजन) की कुंठित मानसिकता, कलात्मक रुचि का पतन, नैतिकता बोध की कमी और सामाजिक मान्यता को ध्यान में रखकर विचार किया जाए तो यह स्पष्ट होता है कि महेन्द्र जी द्वारा कलाकारों, गायिकाओं एवं नर्तकियों आदि से घनिष्ठ संबंध रखने के मूल में उनकी सामाजिक सुधार की भावना ही काम कर रही थी।

महेन्द्र मिसिर की प्रसिद्धि

महेन्द्र जी की प्रसिद्धि का आलम यह है कि भारत ही नहीं बल्कि दुनिया के जिस-जिस देश जैसे मॉरीशस, सूरीनाम, फिजी, नीदरलैंड और त्रिनिदाद में गिरमिटिया गए महेन्द्र मिसिर की गायकी उनके सफर और उनकी मिट्टी का पाथेय बनकर साथ गई।

अंत में

आजादी की आभा के अमृत काल में भी आज तक भोजपुरी के भारतेंदु, पूरबी के जनक तथा प्रथम भोजपुरी महाकाव्य अपूर्व रामायण के रचयिता इंद्रधनुषिय व्यक्तित्व के धनी महेन्द्र मिसिर यथोचित सम्मान ना मिलने के कारण गुमनामी से आच्छादित हैं। लोक संस्कृति की मैना यक्ष प्रश्न की तरह एक प्रासंगिक प्रश्न पूछती है....

टूटली खटोलिया पलंगिया से पूछे
का हमरा दिनवा बहुरिहैं कि ना हो

■■

‘गठबंधन...’

भारी भरकम गठबंधन
दुश्मन दुश्मन एक हुए
परंतु छल कलुषित मन
नाम नया दिया है परंतु
काम वही पुराना
घोटाला दुष्टिकरण ।

नए लिफाफे में
पुराने घोषणा पत्र का समीकरण

भारत जोड़ने के नाम पर
भारत को तोड़कर
कर दिया विभाजन
करोड़ों नागरिक को गुमराह गवन
कहते हैं पारदर्शी मन ।

देश... धम... ‘संस्कृति... को
पिंजरे में बंद कर
भड़काऊ भाषण
मुफ्त का पानी राशन
इन्हीं काम को
राजनीति सभ्यता कहते हैं
कई गांठ वाले गठबंधन ।
क्या यह हास्य है या विडम्बना ?

मनोज शाह मानस
नारायण गांव, नई दिल्ली

अपनों के भेदभाव की शिकार बेटिया

ग्रामीण अंचलों और पिछड़े क्षेत्रों में देखने को मिलता है कि कोई धनाढ्य वर्ग का व्यक्ति भी है तो वह अपनी लड़की को बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य आदि से वंचित रखता है, क्योंकि उस परिवार के लिए उक्त लड़की का सम्मान कोई अहमियत नहीं रखता है। कहीं न कहीं यही वजह है समाज में व्याप्त इन्हीं कुरीतियों और विडम्बनाओं से प्रेरित होकर टीवी सीरियल्स और फिल्में बनती हैं। वैसे भी सिनेमा, समाज का आईना होता है और आजकल टीवी पर एक सीरियल आता है-फालतू। गौरतलब है कि ये कहानी है एक ऐसी लड़की के संघर्ष की। जो अपने परिवार के लिए अनचाही बोझ है। जिसे कोई ढोना नहीं चाहता, लेकिन वो लड़की हर एक बाधाओं से लड़कर अनमोल बनने की दिशा में निकल पड़ती है और उसमें कामयाब भी होती है।

सोनम लववंशी
मध्य प्रदेश

सरकारी स्तर पर बेटियों के संरक्षण और संवर्धन के लिए बेशक कई योजनाएं चलाई जा रही हैं, लेकिन हकीकत ये भी है कि बेटियों के साथ भेदभाव की शुरुआत घर की चारदिवारी से ही शुरू हो जाती है। किसी भी घर में पहली लड़की पैदा हो जाए तो उसका पालन-पोषण अच्छे से किया जाता है, लेकिन उसके बाद भी घर में बेटी पैदा हो जाए तो उनका जीवन दुभर हो जाता है, क्योंकि वे उस बेटे की जगह घर में आई होती हैं। जिस कुल-दीपक का इंतजार परिवार बड़े ही बेसब्री से कर रहा होता है। ऐसे में जिस समाज में बेटियों की पैदाइश ही गुस्से और मायूसी का सबब बन जाए। फिर हम और आप समझ सकते हैं कि बहन-बेटियों के साथ भेदभाव समाज से नहीं, बल्कि घर परिवार से ही शुरू हो जाता है।

अपनों के भेदभाव की शिकार बेटियां जीवन के हर क्षण में किसी न किसी रूप में शोषण और अन्याय का शिकार होती रहती हैं। जिसकी वजह से बेटा-बेटी एक समान की अवधारणा से इत्तेफाक समाज का एक बड़ा तबका इक्कीसवीं सदी के भारत में भी नहीं रख पा रहा है। सोचिए जब उत्तरप्रदेश की मुख्यमंत्री रह चुकी मायावती जी को भी बचपन में अपने परिजनों से भेदभाव झेलना पड़ा और इसका ज़िक्र अजय बोस ने अपनी किताब 'बहनजी बायोग्राफी ऑफ मायावती' में किया भी है। फिर बाक़ी समाज की बहन-बेटियां कैसे भेदभाव के बिना रह सकती है। भले ही हम सैद्धांतिक रूप से सुनते आ रहे हैं कि महिलाएं देवीस्वरूपा है, लेकिन सिक्के का दूसरा पहलू यह भी है कि पुरुषों की तुलना में महिलाओं को कमतर आंकने की शुरुआत घर की दहलीज़ के भीतर ही शुरू हो जाती है। एक लड़की को कमज़ोर, असहाय और अबला समझ कर उसके साथ दोयम दर्जे का व्यवहार उसके

जन्म से ही शुरू हो जाता है।

भले ही हम विकासात्मक और नवोन्मेषी समाज की दिशा में आगे बढ़ चले हैं, लेकिन हमारे आस-पास ही भेदभाव की गहरी खाई देखी जा सकती है! 'तुम एक औरत हो..., लड़की हो तो अपने दायरे में रहो..., मर्यादा में रहना सीखो तुम्हें दूसरे के घर जाना है' ये कुछ शब्द ऐसे हैं। जो सिर्फ़ लड़कियों को बोलें जाते हैं और यही शब्द हैं। जो महिलाओं और किशोरियों में लैंगिक भेदभाव और मानसिक तनाव पैदा करते हैं। आख़िर जो बंदिशें एक लड़की पर थोपी जाती, उससे लड़को को छूट क्यों? क्यों अक़्सर कचरे के ढेर में फेंके जाने वाले नवजात में लड़कियां ही होती हैं? ये कुछ ऐसे सवाल हैं। जो समाज की महिलाओं के प्रति नकारात्मक सोच को व्यक्त करते हैं। पुरुषवादी समाज में, बेटियों को पैतृक संपत्ति से भी वंचित रखा जाता है और अमूमन देखा जाता है कि एक स्त्री पुरूषों से नीचे और अधीनस्थ ही मानी जाती है, भले ही वो कितने उच्च पद पर ही1 क्यों न हो।

ग्रामीण अंचलों और पिछड़े क्षेत्रों में देखने को मिलता है कि कोई धनाढ्य वर्ग का व्यक्ति भी है तो वह अपनी लड़की को बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य आदि से वंचित रखता है, क्योंकि उस परिवार के लिए उक्त लड़की का सम्मान कोई अहमियत नहीं रखता है। कहीं न कहीं यही वजह है समाज में व्याप्त इन्हीं कुरीतियों और विडम्बनाओं से प्रेरित होकर टीवी सीरियल्स और फिल्में बनती हैं। वैसे भी सिनेमा, समाज का आईना होता है और आजकल टीवी पर एक सीरियल आता है- फालतू। गौरतलब है कि ये कहानी है एक ऐसी लड़की के संघर्ष की। जो अपने परिवार के लिए अनचाही बोझ है। जिसे कोई ढोना नहीं चाहता, लेकिन वो लड़की हर एक बाधाओं से लड़कर अनमोल बनने की दिशा में निकल पड़ती है और उसमें कामयाब भी होती है। ऐसे में अब वक्त है बदलाव का, विचारों को मथने का और उसमें से अमृत खोजने का, क्योंकि लड़कियां कभी बोझ नहीं होती। बेटियों ने हर परिस्थितियों में साबित किया है कि वो मूरत हैं त्याग की, बलिदान की और समर्पण की। एक स्त्री ही है, जो बेटी है, नारी है, मां है, बहन है, पत्नी है। वो हर कदम पर भेदभाव सहती है, घर की चारदीवारी से लेकर घर की दहलीज से बाहर निकलने के बाद भी। फिर भी वह इन सबको सहते हुए भी अपनों के लिए यमराज से भिड़ जाती है। इसलिए उसे भी तो बेहतर और बराबरी का जीवन जीने का हक़ मिलना जरूरी है।

खुदगर्जी

गिर रही है न
ये जो आसमा से तड़फती बूंदे
कभी तुम इनसे
मज़ा लेते हो
तो कभी ये डुबकर
तुम्हारे अस्तित्व को मज़ा लेती है।

बह रही है न ये नदियाँ
कभी खुद बहती है
अपनी ही मस्ती में
तो कभी तूफ़ान बन
तुम को बहा
ले जाती है समुंदर में।

बर्फ से ढके है न
जो ये पर्वत
कभी तुम इनका
आरोहण करते हो
तो कभी ये दबा देते है
तुम्हारी जिद्दी शख्सियत को।

राजीव डोगरा
हिमाचल प्रदेश

लिंग समानता : ट्रांसजेंडर समुदाय के अधिकार

सोचिए एक बार, उनके अंतर्मन पर क्या गुजरती होगी, जिन्हें पारंपरिक रूप से समाज द्वारा अलग हाशिए में रख दिया जाता है। उनके साथ नियमित होने वाले सामाजिक भेदभाव, असमान व्यवहार, प्रताड़ना, हिंसा से होने वाली पीड़ा उनको संवेदनशील बनाती है। उनका ट्रांसजेंडर और ट्रांससेक्सुअल होना साधारण मानव के गुणसूत्र असमान्य वितरण का ही परिणाम है। जिससे उनको समाज में हीन भावना से देखा जाता है। बात बात पर कोसा जाता है। मैं एक ऐसे पाठक को बताना चाहूंगी, जो ट्रांसजेंडर नहीं है। वो एक ऐसी दुनिया की कल्पना करे, जिसमे आपके अस्तित्व का मूल अज्ञात हो.... परिवार के अंदर, जब आप स्कूल में कदम रखते हैं, जब आप रोजगार की तलाश करते हैं।

डॉ निशा अग्रवाल
जयपुर, राजस्थान

1.भूमिका

वर्तमान आधुनिक समाज में लैंगिक समानता एक बहुत ही गंभीर मुद्दा रहा है। यह महिलाओं, लड़कियों और पुरुषों के मध्य भेद भाव को दर्शाता है। वैश्विक स्तर पर देखा जाए तो आज भी महिला की समाज में स्थिति दयनीय और सोचनीय है। आज भी समाज उसे अपने अधिकारों के लिए स्वतंत्र नही रखता। आज भी वह पुरुषत्व की बेड़ियों में जकड़ी हुई है। जब कि वह देश की पुरुष वर्ग से अधिक जिम्मेदार नागरिक है। घर , बाहर, कार्यस्थल, समाज , बच्चे आदि के लिए महिला ही एक संतुलित तराजू है, जो अपनी जिम्मेदारियों पर खरी उतरती है। उसके बावजूद भी महिला प्रजाति शोषण और अत्याचार की शिकार है। जिम्मेदारियों का बोझ उठाते वक्त वह ये भी भूल जाती है कि उसका भी कोई वजूद है। आज भी बहुत सी महिलाएं ऐसी हैं जो अपनी क्षमताओं को नही पहचान पाती हैं। इसकी वजह हमारा समाज है। जहां उनको ऐसी ही परवरिश और संस्कार दिए जाते हैं, कि तुम एक लड़की जाति हो। तुम्हारी चुप्पी साधना ही तुमको संस्कारवान बनाती है। चाहे कितने भी हों जुल्म और अत्याचार तुम पर , लेकिन तुम्हें आंख उठाकर भी नही देखना है। तुम्हारा जन्म इस धरा पर ये सब सहने के लिए ही हुआ है। पुरुषप्रधान समाज में पुरुष का वर्चस्व होना स्वाभाविक है।

पुरुष और स्त्री के बारे में सभी इतने जागरूक हैं तो थर्ड जेंडर के बारे में भी गहनता से सोचने का विषय है। स्त्री योनि से जन्म लेने वाली प्रजाति ट्रांसजेंडर भी है। जिसका लैंगिक परिचय देने की आवश्यकता नहीं। यह ईश्वर का वरदान है, जो इस पृथ्वी पर थर्ड जेंडर के रूप में जन्म लेती है। ट्रांसजेंडर भी ईश्वर की रचना है। उनके भी दिल है । आत्मा है।

भावनाएं हैं। उमंगे हैं। हमारी और उनकी जरूरतें एक जैसी ही हैं। सदियों से ट्रांसजेंडर समुदाय भारतीय समाज का हिस्सा रहा है। प्रारंभिक वैदिक और पौराणिक साहित्य का अभिन्न अंग रहा है। वैदिक संस्कृति में भी तीन वर्गों को ही मान्यता दी गई है। प्राचीन हिंदू विधि, चिकित्सा विज्ञान, ज्योतिष विज्ञान और भाषाशास्त्र में भी तीसरे लिंग का वर्णन है।

यह द्विआधारी लिंग के साथ संरेखित होता है। ये वे लोग होते हैं जो पुरुष या महिला शारीरिक संरचना के साथ पैदा होते हैं लेकिन वे अपने शरीर की संरचना से अलग महसूस करते हैं क्योंकि उनकी लिंग अभिव्यक्ति , पहचान या व्यवहार उनके जन्म के लिंग से भिन्न होता है। ट्रांसजेंडर लोग अपनी लिंग पहचान को कई तरीकों से व्यक्त करने का प्रयास करते हैं। क्योंकि कुछ लोग अपने व्यवहार , पोशाक या व्यवहार का उपयोग उस लिंग की तरह रहने के लिए करते हैं जो उन्हें लगता है कि उनके लिए क्या सही है।

सोचिए एक बार, उनके अंतर्मन पर क्या गुजरती होगी, जिन्हें पारंपरिक रूप से समाज द्वारा अलग हाशिए में रख दिया जाता है। उनके साथ नियमित होने वाले सामाजिक भेदभाव, असमान व्यवहार, प्रताड़ना, हिंसा से होने वाली पीड़ा उनको संवेदनशील बनाती है। उनका ट्रांसजेंडर और ट्रांससेक्सुअल होना साधारण मानव के गुणसूत्र असमान्य वितरण का ही परिणाम है। जिससे उनको समाज में हीन भावना से देखा जाता है। बात बात पर कोसा जाता है। मैं एक ऐसे पाठक को

बताना चाहूंगी, जो ट्रांसजेंडर नहीं है। वो एक ऐसी दुनिया की कल्पना करे, जिसमे आपके अस्तित्व का मूल अज्ञात हो.... परिवार के अंदर, जब आप स्कूल में कदम रखते हैं, जब आप रोजगार की तलाश करते हैं, या जब आपको स्वास्थ्य एवं आवास जैसी सामाजिक सेवाओं की आवश्यकता होती है । और आपके पास उन संस्थानों और सेवाओं तक पहुंचने का कोई रास्ता नहीं रहता। तब आप मानसिक , शारीरिक और भावनात्मक रूप से उसी समाज के हाथ शिकार होते हैं। तो ट्रांस व्यक्तियों की जीवनचर्या कैसी होती होगी। उनका मानसिक ,शारीरिक और भावनात्मक विकास कैसे होता होगा।

ऐसा कोई क्षेत्र अछूता नहीं रहा जहां उनको सामाजिक भेदभाव , अलगाव , हिंसात्मक परिदृश्य देखने को ना मिलें।

लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी, एक हिजड़ा, ने आप बीती घटना का परिदृश्य सबके सामने रखा। घर के अंदर और बाहर यौन उत्पीडन , छेड़छाड़ और यौन शौषण का सामना करना पड़ा।

सिद्धार्थ नारायण किन्नर, की आत्म कहानी भी कुछ ऐसी ही है। एक मां जो उसे जन्म देती है। और जब उसे पता चलता है कि किन्नर को जन्म दिया है तो वही मां उसे मारती पीटती है। घोर अन्याय हो रहा है हमारे समाज में। एच आई वी से पीड़ित व्यक्ति और ट्रांस व्यक्ति की समाज में समान स्थिति है। उससे जीने के अधिकार छीन लिए जाते हैं।

जब ईश्वर की व्यक्ति में कोई कमी देकर भेजता है तो अन्य अदभुत गुण और कला से संपूर्ण होने के लिए ज्ञान ,तर्क, चिंतन , बुद्धि का भरपूर विकास भी करता है। इसी तरह ट्रांस व्यक्ति में लिंग अस्मान्यता भले ही है लेकिन वो समाज के लिए शिव की शक्ति हैं । वरदान हैं। दुआओं का समंदर हैं। अतः इनको समाज में उचित सुविधाएं और सम्मान अवश्य मिलना चाहिए।

2.साहित्य समीक्षा

निम्न दस्तावेजों की समीक्षा की गई :

माननीय सर्वोच्च न्यायालय का सन 2014 का निर्णय।

ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम 2019, भारत सरकार।

'स्वीकृति प्रपत्र' ओडिशा राज्य की ट्रांसजेंडर नीति।

केरल राज्य की ट्रांसजेंडर नीति।

तमिलनाडु ट्रांसजेंडर कल्याण मंडल रिपोर्ट।

विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी प्रासंगिक दस्तावेज।

3.ट्रांसजेंडर कल्याण हेतु अधिनियम

पारित

3.1 ट्रांसजेंडर भेदभाव के खिलाफ निषेध

ट्रांसजेंडर लोगों को आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार के मामले में बहुत भेदभाव का सामना करना पड़ा है। उनके साथ किया गया भेदभाव सामाजिक कलंक और अलगाव से उत्पन्न होता है कि वे ट्रांसजेंडर लोगों के लिए उपलब्ध कराए गए संसाधनों की कमी से पीड़ित हैं। ट्रांसजेंडर लोगों के अधिकारों की रक्षा करने और उन्हें भेदभाव से बचाने के लिए, ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019 में भेदभाव के खिलाफ निषेध शामिल है, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण रूप से रोजगार, शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल क्षेत्र जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र शामिल हैं।

3.2 शिक्षा व्यवस्था

ट्रांसजेंडर व्यक्ति की शिक्षा अन्य पुरुष या महिला लिंग के समान ही महत्वपूर्ण है, लेकिन ट्रांसजेंडर व्यक्ति जिस सामाजिक कलंक का सामना करते है, वह उनकी शिक्षा के प्रति रुचि को खत्म करता है। और उनमें बचने, नजरअंदाज करने और बदनाम होने की भावना विकसित होती है। ट्रांसजेंडर छात्रों को अक्सर इससे वंचित कर दिया जाता है। उन्हें शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश दिया जाना चाहिए क्योंकि शिक्षण संस्थान उनकी लिंग पहचान को नहीं पहचानता है। उनके अधिकारों की रक्षा के लिए, ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019 प्रदान करता है कि सरकार द्वारा वित्त पोषित या मान्यता प्राप्त शैक्षणिक संस्थान बिना किसी भेदभाव के ट्रांसजेंडर व्यक्ति के लिए शिक्षा, मनोरंजन सुविधाएं और खेल प्रदान करेगे।

3.3 रोज़गार व्यवस्था

इस प्रकार के व्यक्तियों को रोजगार के मामलों में कार्यस्थल पर भी भेदभाव का सामना करना पड़ता है। वे मुख्य रूप से गोपनीयता के उल्लंघन, किराए पर लेने से इनकार और उत्पीड़न के रूप में भेदभाव का शिकार होते हैं, जो उन्हें बेरोजगारी और गरीबी की ओर ले जाता है। उनके साथ होने वाले भेदभाव को रोकने के लिए कोई भी सरकार या यहां तक कि निजी संस्थाएं रोजगार के मामलों में ट्रांसजेंडर व्यक्ति के साथ भेदभाव नहीं कर सकती हैं, जिसमें भर्ती और पदोन्नति (प्रमोशन) शामिल है।

3.4 स्वास्थ्य एवं शारीरिक सुरक्षा

ट्रांसजेंडर व्यक्ति के लिए स्वास्थ्य देखभाल सेवाएं केवल संक्रमण में शामिल चिकित्सा प्रक्रिया को संदर्भित नहीं करती हैं, बल्कि स्वास्थ्य पूर्ण शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण की समग्र स्थिति को संदर्भित करती है। स्वास्थ्य देखभाल प्राथमिक और अन्य स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं की एक श्रृंखला को भी संदर्भित करता है, जिसमें रोजगार, आवास और ट्रांसजेंडर लोगों की सार्वजनिक स्वीकृति शामिल है। चूंकि ट्रांसजेंडर व्यक्ति को पर्याप्त स्वास्थ्य असमानताओं का सामना करना पड़ा है और उम्र के लिए उचित स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं में बाधा ने उन्हें अवसाद, आत्महत्या का प्रयास, हिंसा और उत्पीड़न और यहां तक कि एचआईवी से पीड़ित किया है। उन्हें सुरक्षा प्रदान करने और उन्हें सुखी जीवन जीने में मदद करने के लिए ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019 कहता है कि सरकार को ट्रांसजेंडर व्यक्ति को स्वास्थ्य देखभाल सुविधाएं प्रदान करने के लिए उचित कदम उठाने चाहिए और इसमें अलग एचआईवी निगरानी केंद्र और सेक्स रिअसाइनमेंट सर्जरी शामिल होनी चाहिए, और ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को एक व्यापक चिकित्सा बीमा भी प्रदान किया जाना चाहिए।

3.5 कल्याणकारी योजनाएं

लंबे समय से समाज द्वारा ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के साथ भेदभाव और उपेक्षा की जाती रही है, लेकिन उन्हें समाज की मुख्यधारा में वापस लाने के लिए ट्रांसजेंडर व्यक्ति के लिए कई कल्याणकारी उपाय किए गए हैं। इनके अधिकारों पर पहली बार 2014 के नालसा के फैसले के तहत विचार किया गया था, जहां सर्वोच्च न्यायालय ने इनके अधिकारों की रक्षा और सुरक्षा पर जोर दिया। जो कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14, अनुच्छेद 15,अनुच्छेद 16 और अनुच्छेद 21 में निर्धारित सिद्धांतों के तहत ट्रांसजेंडर व्यक्ति को अधिकार देता है। 26 नवंबर 2019 को ट्रांसजेंडर व्यक्तियों (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम 2019 को भारतीय संसद द्वारा पारित किया गया जिसका उद्देश्य देश में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के अधिकारों और कल्याण की रक्षा करना है। यह अधिनियम ट्रांसजेंडर के आत्म-पहचान के अधिकार को मान्यता देता है। इसके अंतर्गत सरकार का ट्रांसजेंडर व्यक्ति को

स्वास्थ्य देखभाल सुविधाएं प्रदान करने हेतु कदम उठाए गए हैं। और इसमें एच आई वी निगरानी केंद्र और लिंग पुनर्मूल्यांकन सर्जरी शामिल की गई है। तथा इनको चिकित्सा बीमा सुविधा भी दी गई है। इस अधिनियम को भारत में उन ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के समावेश और सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में सराहा गया है, जो लंबे समय से हाशिए पर हैं। ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिए एक राष्ट्रीय पोर्टल (एनपीटीपी) शुरू किया गया ताकि लोग 'ट्रांसजेंडर आईडी' के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकें।

4.ट्रांसजेंडर अधिनियम के तहत उठाए गए कदम

एक ट्रांसजेंडर व्यक्ति को ऐसे व्यक्ति के रूप में परिभाषित करता है जिसका लिंग जन्म के समय लिंग से मेल नहीं खाता है, जिसमें ट्रांस पुरुष, ट्रांस महिला, लिंग व्यक्ति और इंटरसेक्स भिन्नता वाले व्यक्ति शामिल हैं। यह शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य सेवा और सार्वजनिक शौचालयों और सार्वजनिक परिवहन जैसे सार्वजनिक स्थानों तक पहुंच में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के खिलाफ भेदभाव को भी प्रतिबंधित करता है। यह अधिनियम बिना सर्जरी के ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को आत्म-पहचान का अधिकार देता है। ट्रांसजेंडर अधिनियम के तहत, ट्रांसजेंडर व्यक्ति पहचान के प्रमाण पत्र के लिए आवेदन कर सकते हैं, जो उनकी लिंग पहचान को मान्यता देगा और उन्हें सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली विभिन्न सामाजिक कल्याण योजनाओं और अधिकारों का उपयोग करने की अनुमति देगा। अनुच्छेद 326 के तहत चुनाव लडने का अधिकार , वोट देने का अधिकार भी प्राप्त है।

5.देश की ट्रांसजेंडर प्रतिभाएं

ट्रांसजेंडर अर्थात तृतीय लिंग श्रेणी से देश की कुछ प्रतिभाएं उभर कर आई हैं। जिनका संक्षिप्त विवरण पाठक गण के साथ साझा कर रही हूं।

'लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी' (जन्मः 1979) एक टीवी कलाकार, भरतनाट्यम नर्तिका, और सामाजिक कार्यकर्ता हैं। वह एक हिजड़ा, हैं जो हिजड़ा समाज के हित के लिए कार्य करता हैं।ड1. लक्ष्मी बिगबॉस सीजन 5 की प्रतिभागी भी रह चुकी हैं। टीवी शो 'सच का सामना', 'दस का दम' और 'राज पिछले जनम का' में भी देखी जा चुकी हैं

1998 में एम पी की 'शबनम मौसी' विधानसभा का चुनाव लड़कर विधायक बनीं।

पश्चिम बंगाल की 'जोयिता मंडल' देश की पहली जज के रूप में ख्याति प्राप्त हैं।

महाराष्ट्र के नागपुर से 'विद्या कांबले' देश की दूसरी जज बनी

'स्वाति बी बरुआ' असम की पहली और देश की तीसरी जज बनी

आज भी अनेक ऐसे ट्रांस व्यक्ति हैं जो अपने भविष्य को लेकर चिंतित हैं। और अपनी पढ़ाई सुचारू रूप से कर रहे हैं। समाज सेवा तो इनका पहला धर्म है। ये खुद के लिए नही बल्कि समाज के लिए जीते हैं उसके बाद भी इनके साथ हिंसात्मक व्यवहार करना कहां का न्याय है। अब्दुल रहीम (एम.ए संगीत, एमकॉम) एम पी से हैं। शिक्षा में अब्बल और अग्रणी हैं। और भी ऐसे कई नाम ...चांद, लारा, पूजा भी शिक्षा के क्षेत्र में प्रोन्नति कर रहे हैं।

6.अदालत ने केंद्र और राज्य सरकार को दिए कुछ निर्देश :

हिजड़ों, किन्नरों को उनके मौलिक अधिकारों की रक्षा के उद्देश्य से, उन्हें तीसरे लिंग के रूप में मानें।

अपने स्वयं के लिंग की पहचान करने के लिए व्यक्तियों की आवश्यकता को पहचानें।

नागरिकों के सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्ग के रूप में सार्वजनिक शिक्षा और रोजगार में आरक्षण प्रदान करना।

ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिए एचआईवी सीरो सर्विलांस के संबंध में विशेष प्रावधान करना और उचित स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करना।

उनकी समस्याओं जैसे भय, लिंग डिस्पोरिया, शर्म, अवसाद, आत्महत्या की प्रवृत्ति आदि से निपटना।

अस्पतालों में ट्रांसजेंडर लोगों को स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करने के उपाय किए जाने चाहिए जैसे अलग वार्ड बनाना और उन्हें अलग सार्वजनिक शौचालय भी उपलब्ध कराना।

उनके सर्वांगीण विकास के लिए सामाजिक कल्याण योजनाओं की रूपरेखा बनाना।

जन जागरूकता पैदा करना ताकि ट्रांसजेंडरों को लगे कि वे समाज का हिस्सा हैं और उन्हें अछूत नहीं माना जाना

चाहिए।

फैसले ने ट्रांसजेंडर समुदाय के प्रति राज्य के अन्यथा पितृसत्तात्मक और धर्मार्थ दृष्टिकोण से एक विराम को चिह्नित किया है, जिसमें उनकी चिंताओं को अधिकारों के रूप में तैयार किया गया है।

7.ट्रांसजेंडर अधिनियम एवं नीतियों के क्रियान्वयन हेतु व्यवस्थाएं :

ट्रांसजेंडर संबंधी राज्य स्तरीय समिति का गठन।

राज्य उभयलिंगी कल्याण बोर्ड का गठन।

जिला उभयलिंगी कल्याण बोर्ड का गठन।

8.सुझाव

राज्य ट्रांसजेंडर कल्याण मंडल हेतु अलग से बजट प्रबंधन होना चाहिए।

ट्रांसजेंडर के पहचान पत्र निर्माण कार्य हेतु तथा संवाद एवं संपर्क के लिए जोन प्रभारी नियुक्त कर देने चाहिए।

राज्य कल्याण मंडल की बैठक हर तीन माह के अंतराल में होनी चाहिए।

पाठ्यक्रम में ट्रांसजेंडर समुदाय के बारे में जानकारी शामिल करनी चाहिए।

महिला दिवस की तरह ही सरकार को ट्रांसजेंडर दिवस मनाने की घोषणा करनी चाहिए।

कला, साहित्य , संस्कृति एवं शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु प्रोत्साहन पुरस्कार देना चाहिए।

■ ■

विज्ञापन शुल्क निम्न प्रकार से है

- **कलर पेज फूल पेज ₹ 20000 मात्र**
- **हाफ पेज ₹10000 मात्र**
- **ब्लैक एंड व्हाइट फूल पेज ₹12000 मात्र**
- **हाफ पेज ₹6000 मात्र**
- **रंगीन पेज पर छोटा विज्ञापन ₹2000 मात्र**
- **ब्लैक एंड व्हाइट पर छोटा विज्ञापन ₹1000 मात्र**

विज्ञापन के लिए शुल्क निम्न बैंक खाता में जमा करा सकते हैं:

Account Name: **Sach Ki Dastak**
A/c. No. : **13751652000024**
IFSC Code : **PUNB0137510**
Bank: **Punjab National Bank**

Gpay-
(1) 9045610000
(2) 9621503924

दोस्त पुराने

भाग रही है जिंदगी, रुकने का बहाना मिले
ऽङ·पल दो पल को ही सही, कोई दोस्त पुराना मिलेङ·ऽ

उसे जी कर तो देखुँ,
जो ख्वाब मचल रहा है
वैसे तो जाने दिल में,
क्या-क्या जल रहा है
बिन कहे साथ चले, वो दोस्ताना मिले
ऽङ·पल दो पल को ही सही, कोई दोस्त पुराना मिलेङ·ऽ

जुगनू सी रोशनी है,
खामोश अंधेरों में
घुटन सी हो रही है,
बियाबान शहरों में
नीरसता में रस भर दे, ऐसा कोई बहाना मिले
ऽङ·पल दो पल को ही सही, कोई दोस्त पुराना मिलेङ·ऽ

गूंज रहे हैं मधुर तराने,
उन गलियों, उन मेलों के
वो भोर उठे पनघट की कलकल,
वो सांझ सुहाने खेलों के
उसी मिट्टी, उसी खुशबू का ठिकाना मिले
ऽङ·पल दो पल को ही सही, कोई दोस्त पुराना मिलेङ·ऽ

अंधेरों में जी रहे हैं
उजालों से डर रहे हैं
एक बार जीने की खातिर
जाने कितना मर रहे हैं
रोशन कर दे मन का अंधियारा, ऐसा सफर सुहाना मिले
ऽङ·पल दो पल को ही सही, कोई दोस्त पुराना मिलेङ·ऽ

■ ■

किशोर कुमार
जयपुर राजस्थान

अविश्वास प्रस्ताव : अभिशाप या वरदान

अगस्त प्रथम सप्ताह में बताया गया है कि संसद में विपक्ष द्वारा लाए गए अविश्वास प्रस्ताव पर तीसरे दिन भी जोरदार चर्चा जारी है। सदन को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने जमकर विपक्ष पर निशाना साधा।उन्होंने विपक्ष के अविश्वास प्रस्ताव को अपनी सरकार के लिए शुभ बताते हुए कहा कि ये तय हो गया है कि 2024 में भी हमारी भव्य सरकार बनने जा रही है। अविश्वास प्रस्ताव पर तीन दिन से जारी बहस में जिस घड़ी का इंतजार, वो आ गया है। पीएम मोदी ने अविश्वास प्रस्ताव पर अपना भाषण शुरू करते हुए कहा कि देश की जनता ने हमारी सरकार के प्रति बार बार जो विश्वास जताया है, मैं आज देश के कोटी-कोटी नागरिकों का आभार व्यक्त करने के लिए उपस्थित हुआ हूं।

साथियों! पहले यह जान लीजिये कि आखिर! अविश्वास प्रस्ताव होता क्या है । संसदीय प्रक्रिया में अविश्वास प्रस्ताव या विश्वासमत (वैकल्पिक रूप से अविश्वासमत) अथवा निंदा प्रस्ताव एक संसदीय प्रस्ताव है, जिसे पारंपरिक रूप से विपक्ष द्वारा संसद में एक सरकार को हराने या कमजोर करने की उम्मीद से रखा जाता है या दुर्लभ उदाहरण के रूप में यह एक तत्कालीन समर्थक द्वारा पेश किया जाता है, जिसे सरकार में विश्वास नहीं होता। यह प्रस्ताव नये संसदीय मतदान (अविश्वास का मतदान) द्वारा पारित किया जाता है या अस्वीकार किया जाता है। बता दें कि आजकल यह इतना हाईलाइट क्यों है। क्योंकि संसद के मानसून सत्र में मणिपुर हिंसा को लेकर लगातार गतिरोध बना हुआ है। विपक्ष इसे लेकर अड़ा हुआ है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मणिपुर के मुद्दे पर सदन में बोलें। इस मांग को लेकर वो लगातार सदन का बहिष्कार करता आ रहा है। गृह मंत्री अमित शाह ने कहा था कि वो संसद में इस पर जवाब देने के लिए तैयार हैं, लेकिन विपक्ष ने अमित शाह के इस प्रस्ताव को ठुकराते हुए अविश्वास प्रस्ताव का नोटिस थमाया। बुधवार (26 जुलाई) को विपक्षी गठबंधन इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस यानी इंडिया की तरफ़ से सदन के नियम 198 के तहत अविश्वास प्रस्ताव लाया गया। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला ने अविश्वास प्रस्ताव के नोटिस को स्वीकार तो कर लिया लेकिन सदन में इस पर चर्चा कब होगी, ये तय नहीं किया।लोकसभा के नियम के अनुसार नोटिस स्वीकार किए जाने के 10 दिनों के अंदर इस पर चर्चा की तारीख .तय की जाती है। इस प्रस्ताव का नोटिस दिए आज छह दिन हो गए हैं लिहाजा कयास लगाए जा रहे हैं कि इसी हफ़्ते इस पर चर्चा होगी।बता दें कि मामला गर्म तब हो गया जब तेलगू देशम

पार्टी (टीडीपी) के सांसद जयदेव गल्ला ने कहा था कि मोदी सरकार निजी हित में लगी है। आंध्र के लोग पीड़ा में हैं।अगर आंध्र प्रदेश के लोगों को ठगा गया तो बीजेपी का हाल कांग्रेस के जैसा ही होगा। प्रधानमंत्री मोदी ये धमकी नहीं श्राप है।इसके बाद अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा के दौरान सांसद जयदेव गल्ला के लंबे भाषण पर कई दलों ने हंगामा किया।टीडीपी को सिर्फ 13 मिनट का वक्त दिया गया था, लेकिन टीडीपी के गल्ला ने करीब 45 मिनट तक भाषण दिया। लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन द्वारा रोके जाने पर जयदेव गल्ला रुके।

अगस्त प्रथम सप्ताह में बताया गया है कि संसद में विपक्ष द्वारा लाए गए अविश्वास प्रस्ताव पर तीसरे दिन भी जोरदार चर्चा जारी है। सदन को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने जमकर विपक्ष पर निशाना साधा।उन्होंने विपक्ष के अविश्वास प्रस्ताव को अपनी सरकार के लिए शुभ बताते हुए कहा कि ये तय हो गया है कि 2024 में भी हमारी भव्य सरकार बनने जा रही है। अविश्वास प्रस्ताव पर तीन दिन से जारी बहस में जिस घड़ी का इंतजार, वो आ गया है। पीएम मोदी ने अविश्वास प्रस्ताव पर अपना भाषण शुरू करते हुए कहा कि देश की जनता ने हमारी सरकार के प्रति बार बार जो विश्वास जताया है, मैं आज देश के कोटी-कोटी नागरिकों का आभार व्यक्त करने के लिए उपस्थित हुआ हूं। कहते हैं भगवान बहुत दयालु हैं और भगवान की मर्जी होती है कि वो किसी न किसी के माध्यम से अपनी इच्छा की पूर्ति करता है, किसी न किसी को माध्यम बनाता है। मैं इसे भगवान का आशिर्वाद मानता हूं कि ईश्वर ने विपक्ष को सुझाया और वो प्रस्ताव लेकर आए। पीएम मोदी ने कहा कि 2018 में भी ये ईश्वर का ही आदेश था, जब विपक्ष के साथी अविश्वास प्रस्ताव लेकर आए।उस समय भी मैंने कहा था कि अविश्वास प्रस्ताव हमारी सरकार का फ्लोर टेस्ट नहीं, बल्कि ये उन्हीं का फ्लोर टेस्ट है।हुआ भी वहीं जब मतदान हुआ तो विपक्ष के पास जितने वोट थे, उतने वोट भी वो जमा नहीं कर पाए थे।इतना ही नहीं, जब हम सब जनता के पास गए तो जनता ने भी पूरी तकात के साथ इनके लिए नो कॉन्फिडेंस घोषित कर दिया और चुनाव में एनडीए को भी ज्यादा सीटें मिलीं और भाजपा को भी ज्यादा सीटें मिलीं।यानी एक तरह से विपक्ष का अविश्वास प्रस्ताव हमारे लिए शुभ होता है।तदुपरांत लोकसभा की गुरुवार की कार्यवाही हंगामे से भरी रही। शाम को विपक्षी गठबंधन द.ॅ.ऊ.ईं. का अविश्वास प्रस्ताव गिर गया, इसमें मोदी सरकार की जीत हुई। इससे पहले पीएम नरेंद्र मोदी ने अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा की।इस दौरान पीएम ने द.ॅ.ऊ.ईं. गठबंधन को घमंडिया गठबंधन कहा।इसी के साथ राहुल गांधी पर जमकर निशाना साधा। मोदी ने मणिपुर हिंसा का जिक्र करते हुए कहा कि देश भरोसा रखे, मणिपुर में शांति का सूरज जरूर उगेगा।बता दें कि अविश्वास प्रस्ताव पर मंगलवार से चर्चा शुरू हुई थी. तीन दिन बाद आज ये खत्म हुई।इसी के साथ कांग्रेस सांसद अधीर रंजन चौधरी को लोकसभा से सस्पेंड कर दिया गया है. उन्होंने पीएम मोदी पर टिप्पणी की थी, जिसको आपत्तिजनक माना गया।बाकि 2024 का चुनाव सारी कहानी की बानगी कह ही देगा। जोकि जनता के हाथ में है हालत भी, हालात भी, अभिशाप भी वरदान भी।

मेरा श्रेष्ठ देश

1.

सोने की लंका बनी, निश्चित ही है रम्य।
जन्मभूमि ही पर सदा, मेरे लिये प्रणम्य॥
मेरे लिये प्रणम्य, और श्रद्धा का स्थल है।
उसके सम क्या अन्य, कहीं कोई निर्मल है॥
नहीं प्राप्ति की चाह, उसाँसें या खोने की।
मिट्टी भी पर त्याज्य, भले ही हो सोने की॥

2.

अपनी मिट्टी का नहीं, हो जिसको अभिमान।
उसका कोई क्यों करे, थोड़ा भी सम्मान॥
थोड़ा भी सम्मान, दिखाये बस लाचारी।
गर्दन नीची नित्य, ज़िंदगी गुज़रे सारी॥
माना सदा अयोग्य, झूठ की माला जपनी।
लेकिन सीधी रीढ़, रखें जग में सब अपनी॥

3.

जग में निश्चित श्रेष्ठ है, भारत मेरा देश।
मेरे कण कण में रमा, भारतीय परिवेश॥
भारतीय परिवेश, इसी पर मेरा तन-मन।
न्यौछावर है सर्व, लुटा है उस पर जीवन॥
सब निज श्रम निज बुद्धि, अर्पिता इसके पग में।
भारत का ध्वज उच्च, सदा फहराये जग में॥

डॉ. मुकुन्द नीलकण्ठ जोशी
पुणे, महाराष्ट्र

मेरा माटी मेरे देश की खूबसूरत संकल्पना

आज आत्मनिर्भर भारत बनाने की बात प्रमुखता से हो रही है और वहीं दूसरी ओर विदेशी कम्पनियाँ और विदेशी सामान की हिन्दुस्तान में बाढ़ आ गई है। प्रत्येक संस्था का निजीकरण होता जा रहा है। बेरोजगारी बढ़ रही है। आत्महत्याओं का ग्राफ बढ़ा है। यदि आत्मनिर्भरता, स्वतन्त्राता, स्वावलम्बन, स्वाभिमान की बात करनी हो तो मोदी जी के विजन पर भरोसा रखना होगा। अतएव हम कह सकते हैं कि आत्मनिर्भरता में हम दुनिया को पीछे छोड़ने की काबिलियत पा लेगें। सभी राजनैतिक पार्टियों को प्रधानमंत्री जी के दूरगामी दूरदर्शितापूर्ण विचारों को आत्मसात करने की जरूरत है।

कुशल नीतिज्ञ चाणक्य ने कहा है कि विदेशी मां की औलाद कभी कट्टर देशभक्त नहीं हो सकती। सच भी है कि खून, खून को पुकारता है। और सही मायनों में अपने देश की मिट्टी से लगाव रखने वाला व्यक्ति ही स्वदेशी होता है। स्वदेशी होने के लिए स्वतंत्र होना जरूरी है। अतएव किसी भी देश की मिट्टी का जुड़ाव उस देश की स्वतंत्रता से होता है। देश स्वतंत्र होगा तभी हम स्वदेशी कहलाएंगे। स्वतन्त्रता को बनाए रखने के लिए स्वेदशी, स्वावलम्बी, स्वाभिमानी और आत्मनिर्भर होना आवश्यक है। हिन्दू संस्कृति में भगवान श्रीराम द्वारा किया गया आदर्श शासन रामराज्य के नाम से प्रसिद्ध है। वर्तमान समय में रामराज्य का प्रयोग सर्वोत्कृष्ट शासन या आदर्श शासन के रूप (प्रतीक) के तौर पर किया जाता है। रामराज्य, लोकतन्त्र का परिमार्जित रूप माना जा सकता है। वैश्विक स्तर पर रामराज्य की स्थापना गांधीजी की चाह तो थी परन्तु यह खोखली साबित हुई । देखा जाये तो आत्मनिर्भरता, रामराज्य की परिकल्पना पर आधारित है। आत्मनिर्भर भारत की नींव गांधी के रामराज्य पर टिकी थी। आज का मोदी - योगी का स्वराज्य, रामराज्य की परिकल्पना का आधार है ।स्वराज का अर्थ है जनप्रतिनिधियों द्वारा संचालित ऐसी व्यवस्था जो जन-आवश्यकताओं तथा जन-आकांक्षाओं के अनुरूप हो। यही स्वराज्य रामराज्य कहलाता है। स्वराज का तात्पर्य स्वतंत्रता से है। आत्मनिर्भरता स्वतन्त्रता का मूल है। बिना आत्मनिर्भर हुए स्वतंत्र नहीं हुआ जा सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि रामराज्य वो शासन है जिसमे सभी स्वतंत्र होते हैं। ऐसी स्वतंत्रता जिसमें धर्म और रंग भेद के आधार पर विषमता न पैदा की जाए। यही स्वतन्त्रता गाँधी का रामराज्य कहलाया। गांधी का रामराज्य सत्य और अहिंसा पर आधारित था। गांधी के रामराज्य को व्यवहार में उतारना होगा। सत्य और अहिंसा को आचरण में उतारने की जरूरत है। गांधी की विशेषताओं को रामराज्य का आधार बनाना होगा। रामराज्य लोकतंत्र को मजबूती प्रदान करता है। अभियान लोगों में जागरूकता पैदा करता है। मेरी माटी मेरा देश अभियान का लक्ष्य देश प्रेम के प्रति जागरूक होना है। पूरे देश में 9

अगस्त से लेकर 30 अगस्त तक यह अभियान चलाया जा रहा है। जिसमें भारत में अलग-अलग जगहों पर शहीदों को सम्मान दिया जाएगा।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पिछले साल 15 अगस्त को हर घर तिरंगा अभियान को शुरू किया था और इस साल मेरी माटी मेरा देश अभियान शुरू किया है। मोदी द्वारा उठाए जा रहे इन कदमों से आने वाली पीढ़ी के मन में भी अपने देश के प्रति कुछ करने की इच्छा उत्पन्न होगी। यह अभियान माननीय प्रधानमंत्री जी का राष्ट्र के प्रति प्रेम को दर्शाता है। मेरी माटी मेरा देश अभियान के तहत 7500 कलशों को माटी और पौधे के साथ-साथ देश की राजधानी दिल्ली तक पहुंचाया जाएगा। इन सभी कलश और मिट्टी के पौधों के साथ राष्ट्रीय युद्ध स्मारक के पास रोपड़ (रोपा) किया जाएगा। जिसे आने वाले समय में 'अमृत वाटिका' के नाम से जाना जाएगा। कहने का तात्पर्य यह है कि मेरी माटी मेरा देश अभियान, भविष्य की अमृत वाटिका होगी। यह 'अमृत वाटिका' 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक होगी। इस अभियान के अंतर्गत पूरे भारत के लाखो ग्राम पंचायतों में एक विशेष प्रकार का शिलालेख (शिलाफलकम) भी स्थापित किया जाएगा। जिसमें स्वतंत्रता सेनानियों और वीरगति को प्राप्त सैनिकों के नाम होंगे।

पंच प्रणों जो मेरी माटी मेरा देश के तहत लिए गये हैं वो इस प्रकार हैं-

1. देश की रक्षा करने वाले शहीदों को सम्मान देना है।

2. हमारे मन में बसी गुलामी की मानसिकता को जड़ से बाहर निकालना।

3. देश के प्रत्येक नागरिक को एकजुट एवं एकता के साथ कर्तव्यबद्ध रहना।

4. भारत देश को 2047 में विकसित देश बनाने का सपना साकार करना है।

5. हमारे देश के नागरिक होने के कर्तव्य को निभा कर देश की समृद्ध विरासत पर गर्व करना है।

मेरी माटी मेरा देश अभियान के नाम से 1967 में आई उपकार फिल्म का गाना याद आता है कि मेरे देश की मिट्टी सोना उगले उगले हीरे मोती मेरे देश की मिट्टी। वाकई में विश्व में भारत देश जैसा देश कोई और नहीं। जहां की मिट्टी और हवा जड़ी और बूटी का काम करते हैं। तभी तो भारत कोरोना जैसी स्थिति से भी निपटने में सक्षम रहा। अतएव हम कह सकते हैं कि मेरी माटी मेरा देश अभियान अक्षुण्ण एकता की मिसाल है। हिंदुस्तान संस्कृति और संस्कारों की धरती रही है। यहां 2500 ईसा पूर्व ऋग्वेद की रचना हुई। योग के जनक महर्षि पतंजलि थे। योग हजारों वर्षों पुरानी पद्धति है। आजकल के जनप्रतिनिधि धर्म की आड़ में इन पुरानी संस्कृतियों का दुरुपयोग कर भारतीय संस्कृति को राजनीति का हिस्सा बना रहे हैं। हिन्दुस्तान को गांधी का रामराज्य चाहिए। राजनैतिक पार्टियां वोट को साधने के लिए राम राज्य का सहारा लेती हैं। राम राज्य भगवान् राम के पुरुषार्थ और शासन का द्योतक है। भगवान् श्रीराम सहिष्णुता के प्रतीक थे। श्रीराम सत्य के प्रतीक थे। तभी तो भगवान् श्रीराम ने रामराज्य स्थापित किया था। आज राजनैतिक पार्टियों ने भगवान् श्रीराम, श्रीकृष्ण, श्रीहनुमान, मोहम्मद पैगम्बर, ईसा मसीह आदि को वोट बैंक का आधार बना लिया है। तथाकथित विपक्ष नेताओं की कलुषित बुद्धि से अब राम राज्य का पतन हो चुका है। तभी उन्हें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सबका साथ सबका विश्वास, सबका प्रयास से अरूचि है। क्योंकि अब लड़वायें किसे कैसे? इसलिये अब उनकी स्वंय की पद प्रतिष्ठा की इमर्जेंसी लगी हुई है।

आज आत्मनिर्भर भारत बनाने की बात प्रमुखता से हो रही है और वहीं दूसरी ओर विदेशी कम्पनियाँ और विदेशी सामान की हिन्दुस्तान में बाढ़ आ गई है। प्रत्येक संस्था का निजीकरण होता जा रहा है। बेरोजगारी बढ़ रही है। आत्महत्याओं का ग्राफ बढ़ा है। यदि आत्मनिर्भरता, स्वतन्त्रता, स्वावलम्बन, स्वाभिमान की बात करनी हो तो मोदी जी के विजन पर भरोसा रखना होगा। अतएव हम कह सकते हैं कि आत्मनिर्भरता में हम दुनिया को पीछे छोड़ने की काबिलियत पा लेगें। सभी राजनैतिक पार्टियों को प्रधानमंत्री जी के दूरगामी दूरदर्शितापूर्ण विचारों को आत्मसात करने की जरूरत है। वास्तव में भारत आत्मनिर्भर तभी बन पाएगा। आत्मनिर्भर भारत के बिना कोई भी जागरूकता किसी काम की नहीं। मेरी माटी मेरा देश अभियान के लक्ष्य को आत्मनिर्भरता और दृढ़ संकल्प के बिना नहीं पाया जा सकता है।

■ ■

मणिपुर तो बस हिमशैल का सिरा

पूर्वोत्तर भारत आजकल भारत में एक प्रमुख ईसाई एकाग्रता क्षेत्र है। 2011 में, 2.78 करोड़ ईसाई थे, जिनमें से 78 लाख पूर्वोत्तर (असम सहित) में रहते थे। दक्षिणी तमिलनाडु और केरल से लेकर तटीय कर्नाटक, गोवा और महाराष्ट्र तक के तटीय क्षेत्र के बाद, यह भारत में ईसाइयों का सबसे बड़ा जमावड़ा है। पूर्वोत्तर ईसाईकरण के कालक्रम और समय से पता चलता है कि इस घटना में धार्मिक, प्रशासनिक, राजनीतिक और रणनीतिक प्रेरणाओं का महत्वपूर्ण प्रभाव था। ब्रिटिश गवर्नरों ने क्षेत्र के पहाड़ी देशों में ईसाईकरण की शुरुआती शुरुआत का समर्थन और सुविधा प्रदान की। इस सुविधा का विस्तार उस क्षेत्र में स्कूली शिक्षा के लिए पूरी ज़िम्मेदारी और बजट चर्च को सौंपने तक किया गया जो अब मेघालय है।

पंकज जगन्नाथ जयस्वाल

प्राचीन काल में भारत का उत्थान, और आज भी, जब भारत उच्च सामाजिक-आर्थिक उत्थान की ओर कदम बढ़ा रहा है और अधिकांश देशों द्वारा विश्व की सकारात्मक प्रगती करने वाले मित्र के रूप में स्वीकार किया जा रहा है। कुछ देश और धार्मिक कट्टरपंथी संगठन भारत और दुनिया के कई अन्य क्षेत्रों में जहरीला वातावरण बनाकर वैश्विक अच्छी संभावनाओं को अस्थिर करने का प्रयास कर रहे हैं। यह कई सदियों से चला आ रहा है। धर्म और धार्मिक मान्यताओं के नाम पर स्वघोषित धार्मिक गॉडफादरों के स्वार्थी एजेंडे ने उन्हें मानवता के प्रति इतना असंवेदनशील बना दिया है कि वे समाज में अशांति पैदा कर रहे हैं, आम आदमी की मानसिकता में जहर घोल रहे हैं, बड़े पैमाने पर धर्मांतरण करके जनसांख्यिकी को बिगाड़ रहे हैं, लोगों में ईश्वर का भय पैदा कर रहे हैं। लोगों के मन में अंधविश्वास फैलाना और लंबे समय में राजनीतिक सत्ता हासिल करने का प्रयास करना यही उनका मकसद है। बड़े पैमाने पर धर्मांतरण और मानसिक प्रदूषण के परिणामस्वरूप कई अफ्रीकी और एशियाई देश बहुत पीड़ित हैं।इस विमर्श का परिणाम भारत दशकों से भुगत रहा है। खुद को 'मोहब्बत की दुकान' बताने की कोशिश करने वाले धर्मांतरण माफिया असल में अपने ही देश में लाखों आदिम जनजातियों के नरसंहार के लिए जिम्मेदार हैं। अमेरिका में चेरोकी, चोक्टाव, मस्कोगी (क्रीक), चिकसॉ और सेमिनोले जनजातियों को शारीरिक और मानसिक पीड़ा के साथ-साथ गुलामी और नरसंहार का भी सामना करना पड़ा।

ऐसा न केवल संयुक्त राज्य अमेरिका में, बल्कि यूरोप, चीन और कुछ अन्य देशों में भी हुआ है। विकासशील और अविकसित देशों में मानवता का

विनाश करके साम्राज्य कैसे स्थापित किया जा सकता है? जब वे अपने स्वयं के गरीबों और हाशिए पर रहने वाले लोगों के लिए कुछ भी अच्छा नहीं कर सकते हैं, तो वे अन्य धर्मों के गरीबों और हाशिये पर पड़े लोगों, खासकर हिंदुओं को धर्मांतरित करने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं? जिन्होंने धर्म परिवर्तन कर लिया उनका क्या भला हुआ? उनके मस्तिष्क में इतना ज़हर भर दिया गया है कि वे अब हिंदू धर्म और हिंदू धर्म के अनुयायियों से घृणा करते हैं, और राष्ट्र इन परिवर्तित व्यक्तियों के लिए जमीन के टुकड़े से ज्यादा कुछ नहीं रह गया है।अमेरिका और यूरोप में अधिकांश लोग प्यारे हैं, लेकिन कुछ ईसाई संगठनों की मानवता विरोधी प्रेरणाओं के सामने उनकी चुप्पी चिंता पैदा करती है। अमेरिकी, यूरोपीय सरकारें और अच्छे नागरिक जॉर्ज सोरोस जैसे व्यक्तियों और भारत जैसे देशों में अमानवीय कार्यों और धर्मांतरण को प्रायोजित करने वाले संगठनों के खिलाफ कार्रवाई क्यों नहीं कर रहे हैं?दशकों बाद भी इन धर्म परिवर्तित परिवारों की सामाजिक आर्थिक स्थिति में सुधार क्यों नहीं हुआ? पिछले नौ वर्षों में मोदी सरकार द्वारा किए गए कार्यों से स्पष्ट है कि 67 वर्षों तक भारत माता के उपेक्षित हिस्से के साथ अब अन्य भारतीय राज्यों की तरह व्यवहार और कार्य किया जाता है। यह सीधे तौर पर इंगित करता है कि पीएम मोदी और उनकी टीम द्वारा पालन की जाने वाली विचारधारा सभी के लिए समानता, सामाजिक-आर्थिक और आध्यात्मिक विकास और अन्य राज्यों और समाजों के साथ सांस्कृतिक एकीकरण में विश्वास करती है। पीएम मोदी की विचारधारा और संस्कृति को गाली देकर पनप रही बीमार मानसिकता न सिर्फ भारत के लिए बल्कि बाकी दुनिया के लिए भी खतरा है। यह विशिष्ट स्वार्थी, लालची, हृदयहीन मानसिकता संपूर्ण पृथ्वी पर तबाही मचा रही है।अब, जैसे-जैसे आम चुनाव नजदीक आ रहे हैं, ये तथाकथित 'मोहब्बत की दुकान' राजनीतिक नेता मणिपुर में खराब स्थिति का फायदा उठाने का प्रयास कर रहे हैं, जो वास्तव में उनके राजनीतिक नेताओं या पार्टी द्वारा उत्पन्न किया गया था। आइए देखें कि उत्तर पूर्व, विशेषकर मणिपुर में चीजें कैसे बदल गई हैं। जो लोग भारत विरोधी और विकास विरोधी हैं वे उत्तर पूर्व में तेजी से हो रहे विकास को समझने में असमर्थ हैं। मणिपुर में अशांति का मुख्य कारण बड़े पैमाने पर धर्मांतरण और कुकी दिमागों में जहर घोलना है। अशांति से किसे लाभ होगा?

उत्तर पूर्वी राज्य

आजादी के बाद के दशकों में मणिपुर का मुख्य रूप से ईसाईकरण किया गया। मणिपुर में आज ईसाई आबादी 41इ है। 1931 में यह लगभग 2इ और 1951 में 12इ था। कुल जनसंख्या में ईसाइयों का अनुपात पड़ोसी राज्यों की तुलना में कम प्रतीत होता है, हालाँकि यह मुख्य रूप से मणिपुर घाटी की महत्वपूर्ण गैर-आदिवासी आबादी के कारण है। मणिपुर के पहाड़ी क्षेत्र, जिनमें मुख्य रूप से स्वदेशी लोग रहते हैं, अब लगभग पूरी तरह से ईसाई हैं।

पूर्वोत्तर भारत आजकल भारत में एक प्रमुख ईसाई एकाग्रता क्षेत्र है। 2011 में, 2.78 करोड़ ईसाई थे, जिनमें से 78 लाख पूर्वोत्तर (असम सहित) में रहते थे। दक्षिणी तमिलनाडु और केरल से लेकर तटीय कर्नाटक, गोवा और महाराष्ट्र तक के तटीय क्षेत्र के बाद, यह भारत में ईसाइयों का सबसे बड़ा जमावड़ा है।

पूर्वोत्तर ईसाईकरण के कालक्रम और समय से पता चलता है कि इस घटना में धार्मिक, प्रशासनिक, राजनीतिक और रणनीतिक प्रेरणाओं का महत्वपूर्ण प्रभाव था। ब्रिटिश गवर्नरों ने क्षेत्र के पहाड़ी देशों में ईसाईकरण की शुरुआती शुरुआत का समर्थन और सुविधा प्रदान की। इस सुविधा का विस्तार उस क्षेत्र में स्कूली शिक्षा के लिए पूरी ज़िम्मेदारी और बजट चर्च को सौंपने तक किया गया जो अब मेघालय है।

हालाँकि, इस बात के पर्याप्त संकेत हैं कि ईसाइयों की गिनती कम हो सकती है। जो लोग जनगणना में संकेत देते हैं कि वे ईसाई हैं, वे अनुसूचित जाति (ऐतिहासिक रूप से दलित के रूप में जाने जाते हैं) से संबंधित होने की पहचान करने में भी असमर्थ हैं। अनुसूचित जाति के सदस्य सरकारी लाभ के लिए पात्र हैं, जिससे कुछ लोग जनगणना जैसे आधिकारिक फॉर्म भरते समय खुद को हिंदू के रूप में पहचानते हैं। 2015 के राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार, एक व्यापक, उच्च गुणवत्ता वाला घरेलू सर्वेक्षण जो ईसाइयों को अनुसूचित जाति से बाहर नहीं करता है, साक्षात्कार में शामिल 21इ ईसाई अनुसूचित जाति के थे।

भारत के पूर्वोत्तर को आर्थिक केंद्र बनाना-

एक्ट ईस्ट नीति के तहत, सरकार पूर्वोत्तर क्षेत्र के समग्र विकास और इसे दक्षिण पूर्व एशिया को जोड़ने वाले आर्थिक केंद्र में बदलने के लिए प्रतिबद्ध है। 2014-15 में 36,108 करोड़ रुपये से 2022-23 में 76,040 करोड़ रुपये तक, उत्तर पूर्व में विकास गतिविधियों पर व्यय के लिए 54 केंद्रीय मंत्रालयों से 10इ सकल बजटीय समर्थन के तहत कुल निर्धारित धनराशि 110इ बढ़ा दी गई है। उत्तर-पूर्व के लिए प्रधान मंत्री विकास पहल (पीएम-डेवाइन) की घोषणा केंद्रीय बजट 2022-23 में 1,500 करोड़ रुपये की प्रारंभिक प्रतिबद्धता के साथ की गई थी।

सड़क एवं पुल सेक्टर-618 परियोजनाएं और लागत 6342.83 करोड़

विद्युत क्षेत्र- 2979.48 करोड़ लागत की 239 परियोजनाएं

1810.64 करोड़ की लागत से जलापूर्ति एवं सीवेज सेक्टर-166 परियोजनाएं

873.37 करोड़ लागत की स्वास्थ्य क्षेत्र-56 परियोजनाएं

शिक्षा क्षेत्र-1623.33 करोड़ लागत की 170 परियोजनाएं

244.52 करोड़ लागत की पर्यटन क्षेत्र-10 परियोजनाएं

2363.49 करोड़ लागत की अन्य सेक्टर-10 परियोजनाएं

वर्तमान में पूर्वोत्तर सुरक्षा स्थिति

2014 के बाद से उत्तर-पूर्वी राज्यों में सुरक्षा स्थिति में काफी सुधार हुआ है। वर्ष 2019 और 2020 में पिछले दो दशकों की तुलना में सबसे कम उग्रवाद की घटनाएं और नागरिक और सुरक्षा बल हताहत हुए। 2014 के विपरीत, वर्ष 2020 में उग्रवाद की घटनाओं में 80इ की गिरावट आई है। इसी तरह, इस समय अवधि के दौरान सुरक्षा बलों के हताहतों की संख्या में 75इ की गिरावट आई, जबकि नागरिक हताहतों की संख्या में 99इ की गिरावट आई। 2014 में, पूर्वोत्तर में हिंसा की 824 घटनाएं हुई, जिनमें 212 निर्दोष लोग मारे गए; 2020 तक, ऐसी 162 घटनाएं होंगी, जिनमें केवल तीन नागरिक मारे गये। पिछले दो वर्षों में 4,900 उग्रवादियों ने आत्मसमर्पण किया है. 2014 के बाद से कुल 6000 विद्रोहियों ने आत्मसमर्पण किया है।

हर रिलीजन और धर्म का सम्मान किया जाना चाहिए; फिर भी, जब इसे अमानवीय कृत्यों और कुछ समूहों की हर चीज़ पर हावी होने की स्वार्थी महत्वाकांक्षा के लिए एक उपकरण के रूप में उपयोग किया जाता है, तो अधिकांश महान राष्ट्रों, महान संगठनों और महान लोगों की ओर से अधिक कठोर और अधिक एकजुट प्रयास करने का समय आ गया है। पीएम मोदी का विरोध और निंदा करने के बजाय, विश्व के व्यापक कल्याण के लिए उनके नक्शेकदम और विचारधाराओं का अनुसरण करना उचित होगा।

माउई जंगलों की आग एक सवाल

अधिकारियों ने बताया कि पश्चिमी माउई के कानापाली में शुक्रवार शाम लगी आग को बुझाने में अधिकारियों ने कामयाबी हासिल की। माउई द्वीप पर स्थित ऐतिहासिक तटीय शहर बुधवार की सुबह तेजी से फैलने वाली आग से करीब पूरी तरह से खत्म हो चुका है। बचे हुए लोगों की मानें तो उन्हें इस घटना को लेकर कोई भी चेतावनी नहीं दी गई थी।ग्रीन ने कहा कि अपकंट्री में लगी आग से 544 ढांचे प्रभावित हुए हैं जिनमें से 96 प्रतिशत आवासीय हैं। काउंटी के अधिकारियों ने संघीय आपात प्रबंधन एजेंसी और प्रशांत आपदा केंद्र के आंकड़ों के हवाले से शनिवार को फेसबुक पर कहा कि 4,500 लोगों को आश्रय की जरूरत है।

अमेरिकी राज्य हवाई में माउई के जंगलों में लगी आग से मरने वालों की संख्या 93 हो गई है। अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी। अमेरिका के एक सदी के इतिहास में यह जंगल में आग लगने की सबसे भीषण घटना है। आग इतनी भयानक गति से फैल रही थी कि कुछ लोगों को जान बचाने के लिए समुद्र में छलांग लगानी पड़ी। अमेरिकी प्रशासन की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि दक्षिण की ओर से गुजर रहे डोरा तूफान की वजह से आग इतनी तेजी से फैल गई है।राज्य के गर्वनर आफिस की ओर से जारी बयान में कहा गया कि आग की लपटों से बचने के लिए कुछ लोगों को समुद्र में कूदना पड़ा।इस प्राकृतिक आपदा से पूरा शहर और प्रदेश स्तब्ध है। आग लगने की वजह साफ़ नहीं है। लेकिन हाल के महीनों में तापमान बढ़ने से ज़मीन काफ़ी सूख गई थी और प्रशांत महासागर में उठे तूफ़ान डोरा से आने वाली तेज़ हवाओं ने आग की लपटों को और भड़का दिया। माउई के पुलिस प्रमुख जॉन पेलेटियर ने कहा कि मृतक संख्या बढ़ सकती है, क्योंकि बचाव एवं खोज दलों ने सिर्फ तीन प्रतिशत इलाके में तलाश अभियान चलाया है। उन्होंने कहा कि शवों की पहचान करना बहुत मुश्किल है, क्योंकि उन्हें सिर्फ शवों के अवशेष मिले हैं। पेलेटियर ने बताया कि अब तक दो शवों की पहचान हो सकी है।

पेलेटियर ने कहा कि पुलिस को शवों की पहचान करने के लिए डीएनए जांच करानी पड़ेगी और उनके रिश्तेदारों की भी पहचान करनी होगी। राज्य के गवर्नर जोश ग्रीन कहा कि यह हवाई में अब तक की सबसे भीषण प्राकृतिक आपदा है। उन्होंने ऐतिहासिक फ्रंट स्ट्रीट का दौरा करने के बाद यह टिप्पणी की। उन्होंने कहा, 'हम केवल इंतजार कर सकते हैं और उन लोगों की मदद कर सकते हैं जो जीवित हैं। अब हमारा ध्यान लोगों को जब भी संभव हो एकजुट करना, उन्हें आवास दिलाना और उन्हें स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करना है।' गवर्नर ग्रीन ने कहा कि पश्चिमी माउई में कम से कम 2,200 इमारतें नष्ट या क्षतिग्रस्त हो गई हैं जिनमें से 86 प्रतिशत रिहायशी

भवन हैं।उन्होंने कहा कि तकरीबन छह अरब अमेरिकी डॉलर का नुकसान हुआ है। ग्रीन और अन्य अधिकारियों ने बताया कि 93 लोगों की मौत की पुष्टि हो चुकी है। माउई में कम से दो अन्य जगहों पर भी आग लगी हुई है लेकिन वहां से किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। यह आग दक्षिण माउई के किहेई इलाके और पर्वतीय क्षेत्र में लगी है जिसे 'अपकंट्री' के तौर पर जाना जाता है। अधिकारियों ने बताया कि पश्चिमी माउई के कानापाली में शुक्रवार शाम लगी आग को बुझाने में अधिकारियों ने कामयाबी हासिल की। माउई द्वीप पर स्थित ऐतिहासिक तटीय शहर बुधवार की सुबह तेजी से फैलने वाली आग से करीब पूरी तरह से खत्म हो चुका है। बचे हुए लोगों की मानें तो उन्हें इस घटना को लेकर कोई भी चेतावनी नहीं दी गई थी।ग्रीन ने कहा कि अपकंट्री में लगी आग से 544 ढांचे प्रभावित हुए हैं जिनमें से 96 प्रतिशत आवासीय हैं। काउंटी के अधिकारियों ने संघीय आपात प्रबंधन एजेंसी और प्रशांत आपदा केंद्र के आंकड़ों के हवाले से शनिवार को फेसबुक पर कहा कि 4,500 लोगों को आश्रय की जरूरत है। इससे पहले, उत्तरी कैलिफोर्निया में बट काउंटी के जंगलों में 2018 में लगी आग में 85 लोगों की मौत हुई थी। इस घटना को 'कैम्प फायर' नाम से जाना जाता है। इससे पूर्व, 1918 में मिनेसोटा के कार्लटन काउंटी के वनों में लगी आग में हजारों घर जलकर राख हो गए थे और सैकड़ों लोगों की जान मौत हो गई थी। इसे 'क्लोक्वेट फायर' के तौर पर जाना जाता है। माउई जंगलों की आग का तांडव अपने पीछे एक सवाल जरूर छोड़ गयी आखिर! इंसान प्रकृति से छेड़छाड़ कब बंद करेगा? ■■

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

पाठकों से निवेदन.

प्रिय पाठक बन्धु,

सच की दस्तक मासिक पत्रिका आप की अपनी पत्रिका है। हिन्दी साहित्य और भाषा के विकास के लिए आपका सहयोग अपेक्षित है। पत्रिका निरन्तर आप के घर पहुँचती रहे इसलिए निम्न फार्म भरकर शीघ्र भेजने की कृपा करें या हमारे प्रतिनिधि से सम्पर्क करें।

श्री/श्रीमती /कुमारी...

पता...

....

.पिन कोड................ मोबाइल संख्या............................

ईमेल..

वार्षिक सदस्यता - 300/- रुपए मात्र।

पंचवर्षीय सदस्यता - 1200/- रुपए मात्र।

पाठक अपनी सदस्यता राशि निम्न खाते में जमा कर सकते हैं और जमा करने के बाद मोबाइल पर अवश्य सूचित कर देंगे।

Sach Ki Dastak

ब्रजेश कुमार

A/c. No. : 13751652000024

सम्पादक, सच की दस्तक

IFSC Code : PUNB0137510

Punjab National Bank

पता : 1215/A सुभाष नगर, दीनदयाल उपाध्याय नगर, चन्दौली

पिन कोड - 232101, मोबाइल नम्बर - 9621503924

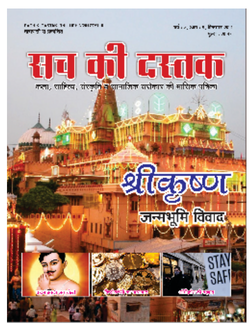

क्या रिश्ता है मीना कुमारी और गुरुदेव रविंद्रनाथ टैगोर में

बचपन से ही प्रभावती देवी को संगीत का बड़ा शौक था। इनका गला बेहद सुरीला था। वे अच्छा गाती और नाचती थी। फिल्मों में काम करने का सपना लिए हेमसुंदरी अपने परिवार के साथ मुंबई आ गई। उनकी बेटी प्रभावती देवी बचपन से ही अच्छा नृत्य करती थी इसलिए मुंबई जैसे महानगर में घर का खर्च चलाने के लिए वे स्टेज शो करने लगी और 'कामिनी' नाम से फेमस स्टेज डांसर-स्टेज परफॉर्मर बन गई। इसके साथ साथ वे स्टेज पर एक्टिंग भी करने लगी। स्टेज पर डांस परफॉर्म करते-करते प्रभावती देवी उर्फ कामिनी की जान-पहचान पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के भेड़ा शहर से आकर मुंबई में रहने वाले पठान सुन्नी मुसलमान मास्टर अलीबख्श से हो गई। मास्टर अलीबख्श म्यूजिक टीचर-म्यूजिक कंपोजर थे और पारसी थियेटर में हारमोनियम बजाया करते थे।

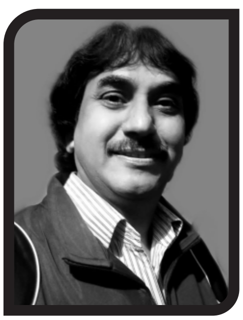

बृजेश श्रीवास्तव मुन्ना
पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर चंदौली

हिंदी सिनेमा में ट्रेजडी क्वीन के ख़िताब से नवाजी गई मीना कुमारी एक ऐसी महान अदाकारा थी जो पहले पर्दे पर बिना कोई डायलॉग बोले ही अपनी बड़ी-बड़ी नशीली आंखों की हरकतों और फड़फड़ाते सुर्ख लाल लबों से ही बड़ी आसानी से हालेदिल बयां कर देती थी। मीना कुमारी एक ऐसी अदाकारा थीं जिनके सामने एक्टिंग करते वक्त बड़े-बड़े अभिनेता अपने डायलॉग और एक्टिंग भूल जाया करते थे। लेकिन क्या आप जानते हैं कि पैदा होते ही अपने पिता द्वारा यतीमखाने की सीढ़ियो पर छोड़ दी जाने वाली..... अपने घर परिवार की दाल-रोटी चलाने के लिए महज 4 साल की छोटी उम्र से ही फिल्मों में काम करने वाली.... अदाकारी के साथ-साथ कई फिल्मों में अपनी आवाज में गाना गाने वाली..... बड़ी होकर अपने दिलकश और बेमिसाल अदाकारी के दम पर 'ट्रेजडी क्वीन' का खिताब हासिल करने वाली..... महज 19 साल की उम्र में अपने से लगभग दुगने बड़े और पहले से ही शादीशुदा-कई बच्चों के पिता से दिल लगाने वाली.... प्रेमी से पति बने शक्क़ी इंसान की तमाम बंदिशों में घुट-घुट कर जीने वाली..... पति, फिर प्रेमी और सभी अपनों से धोखा खाने वाली.....ताउम्र सच्ची मोहब्बत को तरसने वाली..... 'नाज' नाम से बेमिसाल शायरी लिखने वाली.... शराब की बुरी लत लगने के कारण लीवर की बीमारी से जूझने वाली.... और जीवन के अंतिम समय में अस्पताल में फीस नहीं चुका पाने से कारण एक लावारिस लाश के रूप में मरने वाली..... फिल्म 'पाकीजा' की महान अदाकारा मीना कुमारी का..... भारत और बांग्लादेश का राष्ट्रगान लिखने वाले.... भारत का पहला नोबेल पुरस्कार पाने वाले.... शांतिनिकेतन की स्थापना करने वाले.... विश्वविख्यात कवि गुरुदेव रविंद्रनाथ टैगोर से क्या रिश्ता

था.....???

टैगोर परिवार की एक शाखा कोलकाता में हुबली नदी के किनारे पाथुरिया घाट में रहती थी। टैगोर परिवार की इस शाखा को पाथुरिया घाट ठाकुरबाड़ी कहा जाता था। टैगोर परिवार की दूसरी शाखा जोड़ासांको में रहती थी जिसे जोड़ासांको ठाकुरबाड़ी कहते थे। जोड़ासांको ठाकुरबाड़ी में द्वारिकानाथ टैगोर, देवेंद्रनाथ टैगोर और उनके पुत्र रविंद्रनाथ टैगोर रहते थे। जोड़ासाँको ठाकुर बाड़ी में रहने वाले टैगोर परिवार के लोग पाथुरिया घाट के टैगोर परिवार के प्रत्यक्ष वंशज थे। रविंद्रनाथ टैगोर के समय में पाथुरिया घाट में रहने वाले टैगोर परिवार के सदस्य रविन्द्रनाथ टैगोर के दूर के चचेरे भाई लगते थे। पाथुरिया घाट के दर्पणनारायण टैगोर के परपोते और रविंद्रनाथ टैगोर के दूर के चचेरे भाई थे जदुनंदन टैगोर। कहीं-कहीं इनका नाम सुकुमार टैगोर भी मिलता है। जदुनंदन टैगोर को पारसी थिएटर में काम करने वाली और प्रगतिशील विचारों वाली एक लड़की हेमसुंदरी मुखर्जी से प्यार हो गया। पर टैगोर परिवार को यह रिश्ता मंजूर नहीं था। यदुनंदन टैगोर ने अपने टैगोर परिवार की इच्छा के खिलाफ जाकर हेमसुंदरी मुखर्जी से विवाह कर लिया और हेमसुंदरी मुखर्जी बन गई हेमसुंदरी टैगोर। पर किस्मत को तो कुछ और ही मंजूर था। कुछ समय बाद ही जदुनंदन टैगोर की अकस्मात मृत्यु हो गई और हेमसुंदरी टैगोर युवा विधवा बन गई। टैगोर परिवार ने विधवा हेमसुंदरी को अपनाने से इंकार कर दिया। उस जमाने में विधवाओं को अत्यंत कठिन और अमानवीय नियमों-बंधनों का पालन करना पड़ता था। इन नियमों-बंधनो के साथ बाकी का विधवा जीवन समाज से तिरस्कृत-बहिष्कृत हो घुट-घुट कर जीना पड़ता था। प्रगतिशील विचारों वाली हेमसुंदरी टैगोर ने साहस का परिचय देते हुए सदियों पुराने इन रीति रिवाज और मान्यताओं पर सवाल उठाया। उन्होंने एक आम औरत की तरह आजादी के साथ जीवन जीने का साहसिक फैसला किया। हेमसुंदरी टैगोर कोलकाता छोड़कर मेरठ आ गई और नर्स के काम की ट्रेनिंग लेकर एक अस्पताल में नर्स का काम करने लगी। मेरठ में नर्स का काम करते-करते हेमसुंदरी की मुलाकात मेरठ में रहने वाले भारत के सबसे पहले उर्दू पत्रकार और मशहूर उर्दू कवि लेखक मुंशी प्यारेलाल शाकीर मेरठी से हुई। प्यारेलाल शाकीर की रचनाएं उस जमाने में प्रसिद्ध उर्दू पत्रिका 'जमाना' और कई अन्य पत्रिकाओं में छपती थी। इसके साथ वे कई पत्रिकाओं का संपादन भी करते थे जैसे तौफा ए सरहद, सदा ए बशीर, अदीब इत्यादि। आगे चलकर इन्होंने गुरुदेव रविंद्रनाथ टैगोर की बायोग्राफी का उर्दू में अनुवाद किया था।

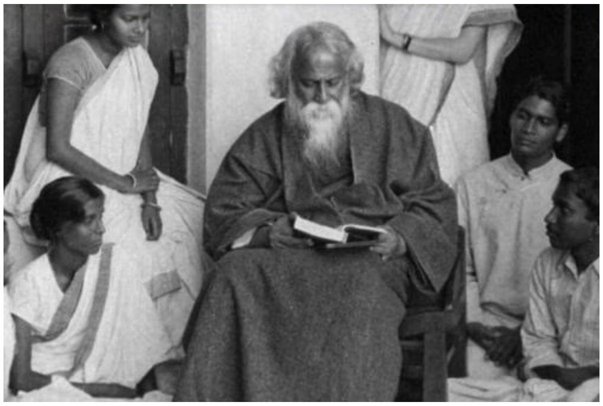

हेमसुंदरी और प्यारेलाल शाकीर में दोस्ती हुई, प्यार हुआ और फिर दोनों ने शादी कर ली। प्यारेलाल शाकीरा जन्म से ईसाई थे इसलिए हेमसुंदरी जो बंगाली थी ने शादी के बाद ईसाई धर्म अपना लिया, वे क्रिश्चियन बंगाली हो गयीं।

हेमसुंदरी और मुंशी प्यारेलाल शाकीर मेरठी से दो बेटियां हुई। इनमें से एक बेटी का नाम था प्रभावती देवी।

बचपन से ही प्रभावती देवी को संगीत का बड़ा शौक था। इनका गला बेहद सुरीला था। वे अच्छा गाती और नाचती थी। फिल्मों में काम करने का सपना लिए हेमसुंदरी अपने परिवार के साथ मुंबई आ गई। उनकी बेटी प्रभावती देवी बचपन से ही अच्छा नृत्य करती थी इसलिए मुंबई जैसे महानगर में घर का खर्च चलाने के लिए वे स्टेज शो करने लगी और 'कामिनी' नाम से फेमस स्टेज डांसर-स्टेज परफॉर्मर बन गई। इसके साथ साथ वे स्टेज पर एक्टिंग भी करने

लगी। स्टेज पर डांस परफॉर्म करते-करते प्रभावती देवी उर्फ कामिनी की जान-पहचान पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के भेड़ा शहर से आकर मुंबई में रहने वाले पठान सुन्नी मुसलमान मास्टर अलीबख्श से हो गई। मास्टर अलीबख्श म्यूजिक टीचर-म्यूजिक कंपोजर थे और पारसी थियेटर में हारमोनियम बजाया करते थे। वे साइलेंट (मूक) फिल्मों में छोटे-मोटे रोल भी करते थे। इसके साथ-साथ अलीबख्श उर्दू में कविताएं भी लिखते थे। प्रभावती देवी उर्फ कामिनी को पहले से ही शादीशुदा सुन्नी पठान अलीबख्श से प्यार हो गया। दोनों ने शादी कर ली। प्रभावती देवी उर्फ कामिनी मास्टर अलीबख्श की दूसरी बीवी बन गई। क्योंकि अलीबख्श मुस्लिम थे इसलिए बंगाली क्रिश्चियन प्रभावती देवी ने इस्लाम धर्म कबूल कर लिया और अपना नाम रखा इकबाल बेगम।

अपने पति मास्टर अलीबख्श की तरह ही इकबाल बेगम साइलेन्ट फिल्मों में छोटे-मोटे रोल करने लगी। इन्होंने फिल्म

ससुराल, बहन, देशद्रोही में भी साइड रोल किया। इनकी आवाज सुरीली थी इसलिए कई फिल्मों में गाना भी गाया। अलीबख्श ने फिल्म शाही लुटेरे में संगीत दिया था।

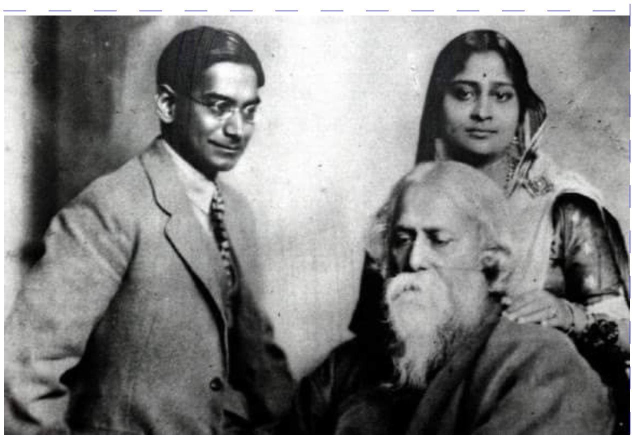

बातों-बातों में आपको बताते चलें कि मीना कुमारी की नानी हेमसुंदरी ने 1942 में महबूब खां फिल्म 'रोटी' में छोटी सी भूमिका की थी। इस फिल्म में हेमसुंदरी ने सेठ लक्ष्मीदास का किरदार करने वाले अभिनेता चंद्रमोहन की मां की भूमिका अदा की थी।

प्रभावती देवी उर्फ कामिनी उर्फ इकबाल बेगम और अलीबख्श ने पहली संतान के रूप में एक बेटी को जन्म दिया जिसका नाम रखा गया खुर्शीद।

अपनी अगली संतान के रूप में अलीबक्श को बेटा होने की उम्मीद थी पर 1 अगस्त 1933 को दूसरी संतान के रूप में एक बेटी का जन्म हुआ। इस बेटी का नाम रखा गया महजबीं बानो, जो आगे चलकर महान अदाकारा और ट्रेजडी क्वीन मीना कुमारी बनी। मीना कुमारी को घर वाले प्यार से 'मुन्ना' कहकर पुकारते थे। आपको बताते चलें कि महानायक अमिताभ बच्चन के घर वाले भी उनको प्यार से 'मुन्ना' कह कर बुलाते थे।

तीसरी संतान के रूप में फिर एक बेटी हुई जिसका नाम महलेका उर्फ माधुरी उर्फ मधु रखा गया।

इस तरह मीना कुमारी कुल तीन बहने थीं..... सबसे बड़ी बहन खुर्शीद बानो, उसके बाद महजबीं बानो उर्फ मीना कुमारी और सबसे छोटी महलेका उर्फ माधुरी या मधु।

इस तरह हम देखते हैं की हिंदी सिनेमा की महान अदाकारा मीना कुमारी का रिश्ता विश्वविख्यात कवि, दार्शनिक, साहित्यकार गुरुदेव रविंद्रनाथ टैगोर से था। मीना कुमारी की नानी हेमसुंदरी रविंद्रनाथ टैगोर के परिवार की बहू थीं।

यह खानदानी गुण ही था की अदाकारी में अपना बेहतरीन जलवा दिखाने वाली मीना कुमारी ने 'नाज' नाम से बेहतरीन शायरी भी लिखी। क्योंकि वे बंगाल के महान साहित्यिक परिवार टैगोर परिवार से जुड़ी थी..... उनके नाना प्यारेमोहन शाकीर मेरठी भी उर्दू के बहुत बड़े शायर थे और पिता अलीबख्श भी उर्दू में शायरी लिखा करते थे।

■ ■

हमारा कशमीर हमारी पहचान

पथरीले पर्णल पर पगली,
सोई है ज्यों राज दुलारी ।
खिली कली जब धूप सुहावन,
हुई यौवना केसर क्यारी ।

पलकें परवश हों बस निरखे,
लाज भरी बाँकी चितवन से ।
जीवट जड़वत रही जोगिनी,
सहमे दृग केवल विपणन से ।
क्षुब्ध तापसी कुटिल काम से,झेल रही अनगिन दुश्वारी ।
खिली कली ज्यों धूप सुहावन,हुई यौवना केसर क्यारी ।
-------------हुई यौवना केसर क्यारी ।
कशमीरी परिचय दुनियावी ,
कौन हृदय की पीड़ा जाँचें ।
महक उठी निष्कंटक पथ पर,
शुचित हृदय में सबको राँचे ।
ध्वस्त हुई किंजल्क कल्पना,कलझे क्यों कमनीय कुँआरी ।
खिली कली ज्यों धूप सुहावन,हुई यौवना केसर क्यारी ।
-------------हुई यौवना केसर क्यारी ।
बीते पल अध्याय जैविकी,
नैतिकता के ओढ़ आवरण।
भारत की पहचान कराती,
संस्कृति औ संघर्ष आचरण।
कुसुमित डाली सुरभि सर्जना व्यथित 'लता' केसर अविकारी
खिली कली ज्यों धूप सुहावन, हुई यौवना केसर क्यारी ।
-------------हुई यौवना केसर क्यारी ।

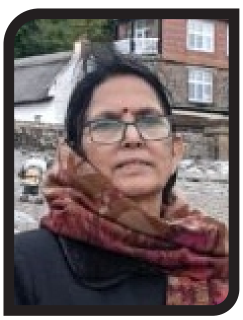

डॉ. प्रेमलता त्रिपाठी
लंदन, UK

गूँजे आँगन आँगन हिन्दी

ओ! वीणा वादिनि वर दे दो,
गूँजे आँगन आँगन हिन्दी।

सरसिज सुमन पराग भरा है,
हिन्दी अक्षर पल्लव दल है।
शुचि रचना के वातायन से,
सुरभित दिग दिगंत के तल हैं।
कवि समयों में रही हमेशा,
कवि कल्पना सजी सी हिन्दी।
यह सागर की अतल बूँद है,
हिमनग की है अनुपम बिन्दी।
धरा गगन के दूर क्षितिज तक,
विस्तृत है मनभावन हिन्दी ।
ओ ! वीणा वादिनि वर दे दो,
गूँजे आँगन आँगन हिन्दी।

चन्दरवरदायी की कविता,
जगनिक का आल्हा गायन है।
विद्यापति के कोकिल स्वर में,
पद्मावत का शुचि गायन है।
तुलसी का मानस मराल भी,
चुगता है हिन्दी - मुक्ताफल।
सूरदास की ब्रज भाषा से,
अभिसिंचित होता यमुना जल।
उस फक्कड़ कबीर के स्वर में,
पंच - मेल का गायन हिन्दी।
ओ ! वीणा वादिनि वर दे दो,
गूँजे आँगन आँगन हिन्दी।

मीरा के उस विष-प्याले में,
अमृत बन कर आई हिन्दी।
उस सुजान के विरह प्रेम में,
घनानंद ने गाई हिन्दी।
कविता के प्रतिमान बिहारी,
रस का आस्वादन करते हैं।
पद्माकर रत्नाकर जैसे कवि,
मधुरिम रचना करते हैं।
रीतिकाल श्रृंगार काव्य के,
काव्यशास्त्र का गायन हिन्दी।
ओ! वीणा वादिनि वर दे दो,
गूँजे आँगन आँगन हिन्दी ।

कविता की उर्मिला मैथिली,
जग में एक मील का पत्थर।
श्रद्धा - मनु के शुचि सनेह का,
वह प्रसाद की कविता भाष्वर।
शक्ति' पूजते राम निराला के -
सरोज की करुण कहानी।
यहाँ महादेवी की करुणा जगी,
पन्त प्रकृति में भरें रवानी।
छाया जगी जगी आशाएँ,
कविता इक रूपायन हिन्दी।
ओ! वीणा वादिनि वर दे दो,
गूँजे आँगन आँगन हिन्दी।

■■

प्रोफेसर राजेश तिवारी 'विरल'
हिन्दी विभाग, डी.ए-वी. कॉलेज
कानपुर, उत्तर प्रदेश

घेवर

जब तेल खौलने लगे तो उसमें दूरी से 2 टेबलस्पून बैटर डालें।अब बैटर अलग हो जाएगा।अब एक बार फिर तेल से दूर रखकर बीच में पतले स्ट्रीम पर एक बार फिर 2 टेबलस्पून बैटर डालें।ध्यान रखे की बैटर डालते हुए बीच में एक छेद रहे।अब गैस की फ्लेम मीडियम पर कर दें और घेवर को गोल्डन ब्राउन होने तक तलें।घेवर को तब तक तलना है जब तक कि इसके बबल्स पूरी तरह से गायब ना हो जाएं।इसके बाद इन्हें निकालकर एक अलग बर्तन में रख दें।अब चाशनी बनाने के लिए एक कप चीनी और 1/4 पानी लेकर उसे एक बर्तन में गर्म करें।चाशनी में दो तार आने तक इसे उबाल लें। इसके बाद इस चाशनी में घेवर को डुबोएं।आखिर में घेवर पर मावा,सूखे फल और इलायची पाउडर डालकर गार्निश करें।

घेवर बनाने के लिए सामग्री

मैदा - 2 कपघी - आधा कपठंडा दूध - आधा कपचीनी - 1 कपआइस क्यूब्स - 1 ट्रेइलायची पाउडर - 1/2 टी स्पूननींबू रस - 1 टी स्पूनसूखे फल - सजावट के लिएतेल/घी - तलने के लिए

घेवर बनाने की विधि

घेवर बनाने के लिए सबसे पहले एक बड़ी मिक्सिंग बाउल लें और उसमें घी डाल दें। इसके बाद बर्फ का एक बड़ा टुकड़ा लेकर घी में रगड़ना शुरू करें।इसे तब तक रगड़े जब तक कि घी मोटा और मलाईदार ना हो जाए। ऐसा होने में 5 मिनट का वक्त लग सकता है।इसके बाद इस घी में मैदा डाल दें और उसे घी के साथ अच्छी तरह से मिलाएं।अब घी और मैदे के मिश्रण में टंडा दूध और 1 कप ठंडा पानी डालकर गाढ़ा बैटर तैयार कर लें।अब इस बैटर में एक कप ठंडा पानी और डालें और उसे 5 मिनट तक अच्छे से फेंट लें।अब इसमें एक चम्मच नींबू रस डाल दें।बैटर को तब तक फेंटना है जब तक कि इसमें मौजूद सारी गांठ खत्म ना हो जाए। इसके घेवर का बैटर पूरी तरह से तैयार हो जाएगा। अब घेवर को कुछ वक्त के लिए फ्रिज में रखकर ठंडा करें।

अब एक कड़ाही लें और उसमें देशी घी/तेल डालकर गर्म करें। जब तेल खौलने लगे तो उसमें दूरी से 2 टेबलस्पून बैटर डालें।अब बैटर अलग हो जाएगा।अब एक बार फिर तेल से दूर रखकर बीच में पतले स्ट्रीम पर एक बार फिर 2 टेबलस्पून बैटर डालें।ध्यान रखे की बैटर डालते हुए बीच में एक छेद रहे।अब गैस की फ्लेम मीडियम पर कर दें और घेवर को गोल्डन ब्राउन होने तक तलें।घेवर को तब तक तलना है जब तक कि इसके बबल्स पूरी तरह से गायब ना हो जाएं।इसके बाद इन्हें निकालकर एक अलग बर्तन में रख दें।अब चाशनी बनाने के लिए एक कप चीनी और 1/4 पानी लेकर उसे एक बर्तन में गर्म करें।चाशनी में दो तार आने तक इसे उबाल लें। इसके बाद इस चाशनी में घेवर को डुबोएं।आखिर में घेवर पर मावा,सूखे फल और इलायची पाउडर डालकर गार्निश करें। मथुरा के स्वाद से भरपूर घेवर बनकर तैयार हो चुका है। ■■

|| मान जाओ ना ||

अब कह रहा हूं तो मान जाओ ना,
मुझे दोस्त बनाना नहीं आता,
मुझे साथ निभाना नहीं आता,
मुझे किसी को मनाना नहीं आता,
अनाड़ी हूं इसीलिए अकेला रही हूं,
क्योंकि मुझे हमराही बनाना नहीं आता।।
अब कह रहा हूं तो मान जाओ नाष्ठ

अच्छा ठीक हैं मनाने की कोशिश करेंगे,
आपको दालमंडी ले चलेंगे झुमके दिलाएंगे,
गोदौलिया से आपको नई साड़ी दिलाएंगे,
नई सड़क का जाम भी दिखाएंगे,
अस्सी पर एक ही कुल्हड़ से चाय पियेंगे,
दशाश्वमेध घाट की प्रसिद्ध गंगा आरती दिखाएंगे,
आपको शाम को नौका विहार भी करेंगे।।
अब कह रहा हूं तो मान जाओ नाष्ठ

गंगा मईया कि सौगंध आपके ऊपर आंच नहीं आने देंगे,
आपके गालों पे जो बाल हवा से उड़ के आयेंगे,
उनको गालों से हटाने को भी आपसे इजाजत लेंगे,
सबके सामने आपका हाथ पकड़ने पर इजाजत लेंगे,
आपसे कितना प्यार करते हैं आपको बताएंगे,
लेकिनष्ठ
दुनियावालों के सामने हम आपके हैं कहते जायेंगे।।
अब कह रहा हूं तो मान जाओ नाष्ठ

कुछ-कुछ होता हैं दिल में जरूरी नहीं,
लेकिन आपके लिए कितना पागल हैं जरूर बताएंगे,
ऽऽऽऽऽ जी आपके हम प्यार तो बहुत करते हैं,
तो आपके प्यार में हम कुंदन भी बन जायेंगे,
और हमारे प्यार में कहानी जरूर लिखेंगे,
शिद्दतवाला प्यार भी आपसे जरूर करेंगे,
वो आखिरी में मरने के लिए नहींष्ठ
दो जिस्म एक जान हो जाने के लिए करेंगे।।
अब कह रहा हूं तो मान जाओ नाष्ठ

आपके साथ मंजिल के आखरी सफ़र तक साथ चलेंगे,
साथ चलेंगे, साथ फेरे लेंगे, साथ कसमें खायेंगे,
हाथों में हाथ पकड़ के सारे रीति-रिवाज पूरा करेंगे,
आपके लिए कविता लिखेंगे कवि हैं नाष्ठ
आपको अपनी कल्पना से वास्तविकता में लायेंगे।
अब कह रहा हूं तो मान जाओ नाष्ठ
राही हैं हम हमराही बन जाइए ना।।

आलोक पाण्डेय

■■

एशिया कप के लिए भारतीय सेना तैयार

भारतीय टीम की टक्कर पाकिस्तान से दो सितंबर को होगी। यह भारत का टूर्नामेंट में पहला मैच भी होगा। इसके बाद 4 सितंबर को भारत की नेपाल से टक्कर होगी। अगर भारतीय टीम के साथ ही पाकिस्तान सुपर-4 में पहुंचती है तो वहां भी दोनों टीमों की टक्कर होगी। यह मुकाबला 10 सितंबर को कोलंबो में हो सकता है। इसके बाद अगर दोनों टीमें फाइनल में पहुंचती हैं तो एक बार फिर 17 सितंबर को टक्कर होगी

मनोज उपाध्याय
खेल सम्पादक

भारतीय क्रिकेट कंट्रोलर बोर्ड ने एशिया 2023 के लिए भारतीय टीम का ऐलान हो चुका है। यह टूर्नामेंट 30 अगस्त से 17 सितंबर तक खेला जाएगा ।

एशिया कप में भारत-पाकिस्तान नेपाल एक ही ग्रुप में है

एशिया कप पाकिस्तान की मेजबानी में हाइब्रिड मॉडल के आधार पर खेला जा रहा है। एशिया कप में 17 सदस्य की कप्तानी रोहित शर्मा के हाथों में रहेगी। भारतीय टीम में केएल राहुल जसप्रीत बुमराह श्रेयस अय्यर की वापसी हुई है ।युवा बल्लेबाज तिलक वर्मा को भी इस बार मौका दिया गया है। वहीं संजू सैमसन को स्क्वाड में जगह नहीं मिली है ।हार्दिक पांड्या को उप कप्तान बनाया गया है ।सबसे चौंकाने वाली बात यह रही कि लेग स्पिनर युजवेंद्र चहल की टीम में नही हो है ।

रोहित शर्मा की कप्तानी में भारतीय टीम एशिया कप में अपना पहला मैच 2 सितंबर को खेलेगी । यह मुकाबला पाकिस्तान के खिलाफ श्रीलंका के कैंडी में होगा। इसके बाद भारतीय दूसरा ग्रुप मैच नेपाल में के खिलाफ 4 सितंबर को खेला जाएगा ।एशिया कप में भारत-पाकिस्तान और नेपाल एक ही रूप में है ।

तीन बार हो सकती है भारत-पाकिस्तान की टक्कर

भारतीय टीम की टक्कर पाकिस्तान से दो सितंबर को होगी। यह भारत का टूर्नामेंट में पहला मैच भी होगा। इसके बाद 4 सितंबर को भारत की नेपाल से टक्कर होगी। अगर भारतीय टीम के साथ ही पाकिस्तान सुपर-4 में पहुंचती है तो वहां भी दोनों टीमों की टक्कर होगी। यह मुकाबला 10 सितंबर को कोलंबो में हो सकता है। इसके बाद अगर दोनों टीमें फाइनल में पहुंचती हैं तो एक बार फिर 17 सितंबर को टक्कर होगी

एशिया कप 2023 का शेड्यूल

30 अगस्तः पाकिस्तान ⋛ नेपाल, मुल्तान

31 अगस्तः बांग्लादेश ≩ श्रीलंका, कैंडी

2 सितंबरः पाकिस्तान ≩ भारत, कैंडी

4 सितंबरः भारत ≩ नेपाल, कैंडी

5 सितंबरः अफगानिस्तान ≩ श्रीलंका, लाहौर

सुपर-4

6 सितंबरः ए1 बनाम बी2, लाहौर

9 सितंबरः बी1 बनाम बी2, कोलंबो

10 सितंबरः ए1 बनाम ए2, कोलंबो

12 सितंबरः ए2 बनाम बी1, कोलंबो

14 सितंबरः ए1 बनाम बी1, कोलंबो

15 सितंबरः ए2 बनाम बी2, कोलंबो

एशिया कप का फाइनल मैच 17 सितंबर को श्रीलंका के कोलंबो में खेला जाएगा।

■ ■

चंद्रयान - 3 की वैश्विक सफलता

मनीष पुरोहित ने बताया कि चंद्रमा पर 14 दिन तक रात और 14 दिन तक उजाला रहता है। जब यहां रात होती है तो तापमान -100 डिग्री सेल्सियस से भी कम हो जाता है। चंद्रयान के लैंडर और रोवर अपने सोलर पैनल्स से पावर जनरेशन करेंगे। इसलिए वो 14 दिन तो पावर जनरेट कर लेंगे, लेकिन रात होने पर पावर जनरेशन प्रोसेस रुक जाएगी। पावर जनरेशन नहीं होगा तो इलेक्ट्रॉनिक्स भयंकर ठंड को झेल नहीं पाएंगे और खराब हो जाएंगे।

चंद्रयान-3 की सफलता के बाद वैश्विक लीडर पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि जब हम ऐसे ऐतिहासिक क्षण देखते हैं तो हमें बहुत गर्व होता है। ये नए भारत का सूर्योदय है। हमने धरती पर संकल्प किया और चांद पर उसे साकार कियाष्ठ भारत अब चंद्रमा पर है।

भारत के लोकप्रिय प्रधानमंत्री ग्लोबल लीडर मोदी जी ने अपने भाषण में बहुत ही खुश होकर कहा कि चंदा मामा अब दूर के नहीं । चंदा मामा अब पास के हो गए हैं। महान भारतवर्ष दुनिया का ऐसा पहला देश बन गया जिसने पहली बार चांद के दक्षिणी छोर पर अपनी जोरदारी से दस्तक दी है । बता दें कि

23 अगस्त की शाम को चांद पर जैसे ही सफलता का सूरज उगा, इसरो के चंद्रयान ने उसके साउथ पोल पर लैंडिंग कर इतिहास रच दिया। भारत चांद के दक्षिणी ध्रुव पर कामयाब लैंडिंग करने वाला दुनिया का पहला देश बन गया है।

चंद्रयान-3 ने बुधवार शाम 5 बजकर 44 मिनट पर लैंडिंग प्रोसेस शुरू की। इसके बाद अगले 20 मिनट में चंद्रमा की अंतिम कक्षा से 25 किमी का सफर पूरा किया। शाम 6 बजकर 4 मिनट पर चंद्रयान-3 के लैंडर ने चांद पर पहला कदम रखा।

रोवर के बाहर आने में एक दिन भी लग सकता है

ISRO ने बताया कि लैंडर-रोवर के सभी सेंसर की टेस्टिंग की जा रही है। सब ठीक रहा तो 3-4 घंटे बाद इसरो से कमांड देकर रोवर को बाहर निकाला जाएगा। चीजें तय पैमाने पर नहीं हुईं तो फिर रोवर को बाहर निकालने का फैसला 24 घंटे बाद किया जाएगा।

ISRO के डायरेक्टर एस. सोमनाथ ने कहा- अगले 14 दिन हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। प्रज्ञान रोवर को बाहर आने में एक दिन का समय भी लग सकता है। प्रज्ञान हमें चांद के वातावरण के बारे में जानकारी देगा। हमारे कई

मिशन कतार में हैं। जल्दी सूर्य पर आदित्य एल1 भेजा जाएगा। गगनयान पर भी काम जारी है।

चांद पर पहुंचकर चंद्रयान-3 ने मैसेज भेजा- मैं अपनी मंजिल पर पहुंच गया हूं। वहीं साउथ अफ्रीका से प्रधानमंत्री मोदी ने देशवासियों को बधाई देकर कहा- अब चंदामामा दूर के नहीं।

चांद पर कामयाब लैंडिग करने वाला भारत चौथा देश

इस कामयाबी के साथ भारत चांद के किसी भी हिस्से में मिशन लैंड कराने वाला चौथा देश बन गया है। इससे पहले अमेरिका, सोवियत संघ और चीन ही ऐसा कर सके हैं।

लैंडिंग के आखिरी 20 मिनट थे मिनट्स ऑफ टेरर

चंद्रयान-3 के लैंडर की सॉफ्ट लैंडिंग में 20 मिनट लगे। इस ड्यूरेशन को '20 मिनट्स ऑफ टेरर' यानी 'खौफ के 20 मिनट्स' कहा जा रहा था।ये मिनट्स ऑफ टेरर शाम 5 बजकर 44 मिनट पर शुरू हुए। तब लैंडर से चंद्रमा 31 किमी दूर था। उसकी वर्टिकल लैंडिंग प्रोसेस शुरू हुई।

कामयाब लैंडिंग के बाद रोवर के बाहर निकलने का इंतजार

अब सभी को विक्रम लैंडर से प्रज्ञान रोवर के बाहर आने का इंतजार है। धूल का गुबार शांत होने के बाद यह बाहर आएगा। इसके बाद विक्रम और प्रज्ञान एक-दूसरे की फोटो खींचेंगे और पृथ्वी पर भेजेंगे।

चंद्रयान मिशन को ऑपरेट कर रहे इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गेनाइजेशन यानी

घ्ेंध् ने चंद्रयान को श्रीहरिकोटा से 14 जुलाई को लॉन्च किया था। 41वें दिन चांद के साउथ पोल पर लैंडिंग की प्लानिंग की गई।

PM मोदी बोले- चंदा मामा के दूर के नहीं, एक टूर के

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से जुड़कर वैज्ञानिकों को बधाई दी। उन्होंने कहा- यह क्षण भारत के सामर्थ्य का है। यह क्षण भारत में नई ऊर्जा, नए विश्वास, नई चेतना का है। अमृतकाल में अमृतवर्षा हुई है। हमने धरती पर संकल्प लिया और चांद पर उसे साकार किया। हम अंतरिक्ष में नए भारत की नई उड़ान के साक्षी बने हैं।

तब रूस के नाम हो जाता यह रिकॉर्ड

भारत से पहले रूस चांद के दक्षिणी ध्रुव पर लूना-25 यान उतारने वाला था। 21 अगस्त को यह लैंडिंग होनी थी, लेकिन आखिरी ऑर्बिट बदलते समय रास्ते से भटक गया और चांद की सतह पर क्रैश हो गया।

चांद पर लैंडिंग में 41 दिन लगे

चंद्रयान-3 आंध्रप्रदेश के श्रीहरिकोटा से 14 जुलाई को 3 बजकर 35 मिनट पर लॉन्च हुआ था। इसे चांद की सतह पर लैंडिंग करने में 41 दिन का समय लगा। धरती से चांद की कुल दूरी 3 लाख 84 हजार किलोमीटर है।

लैंडिंग के बाद अब क्या होगा?

डस्ट सेटल होने के बाद विक्रम चालू होगा और कम्युनिकेट करेगा।

फिर रैंप खुलेगा और प्रज्ञान रोवर रैंप से चांद की सतह पर आएगा।

पहिए चांद की मिट्टी पर अशोक स्तंभ और घ्ेंध्के लोगो की छाप छोड़ेंगे।

विक्रम लैंडर प्रज्ञान की फोटो खींचेगा और प्रज्ञान विक्रम की। ये फोटो वे पृथ्वी पर भेजेंगे।

ISRO के बेंगलुरु स्थित टेलीमेट्री एंड कमांड सेंटर (इस्ट्रैक) के मिशन ऑपरेशन कॉम्प्लेक्स (मॉक्स) में 50 से ज्यादा वैज्ञानिक कंप्यूटर पर चंद्रयान-3 से मिल रहे आंकड़ों की मंगलवार रातभर पड़ताल में जुटे रहे। वे लैंडर को इनपुट भेजते रहे, ताकि लैंडिंग के समय गलत फैसला लेने की हर गुंजाइश खत्म हो जाए।

चांद पर लैंडिंग के वक्त इसरो

सेंटर में उत्साह और बेचैनी का माहौल रहा।

1. इस मिशन से भारत को क्या हासिल होगा?

ISRO के एक्स साइंटिस्ट मनीष पुरोहित कहते हैं कि इस मिशन के जरिए भारत दुनिया को बताना चाहता है कि उसके पास चांद पर सॉफ्ट लैंडिंग करने और रोवर को वहां चलाने की काबिलियत है। इससे दुनिया का भारत पर भरोसा बढ़ेगा जो कॉमर्शियल बिजनेस बढ़ाने में मदद करेगा। भारत ने अपने हेवी लिफ्ट लॉन्च व्हीकल LVM3-M4 से चंद्रयान को लॉन्च किया है। इस व्हीकल की काबिलियत भारत पहले ही दुनिया को दिखा चुका है।

बीते दिनों अमेजन के फाउंडर जेफ बेजोस की कंपनी 'ब्लू ओरिजिन' ने घ्एंंं के थ्न्श्3 रॉकेट के इस्तेमाल में अपना इंटरेस्ट दिखाया था। ब्लू ओरिजिन थ्न्श्3 का इस्तेमाल कॉमर्शियल और टूरिज्म पर्पज के लिए करना चाहता है। LVM3 के जरिए ब्लू ओरिजिन अपने क्रू कैप्सूल को प्लान्ड लो अर्थ ऑर्बिट (LEO) स्पेस स्टेशन तक ले जाएगा।

2. साउथ पोल पर ही मिशन क्यों भेजा गया?

चंद्रमा के पोलर रीजन दूसरे रीजन्स से काफी अलग हैं। यहां कई हिस्से ऐसे हैं जहां सूरज की रोशनी कभी नहीं पहुंचती और तापमान -200 डिग्री सेल्सियस से नीचे तक चला जाता है। ऐसे में वैज्ञानिकों का अनुमान है कि यहां बर्फ के फॉर्म में अभी भी पानी मौजूद हो सकता है। भारत के 2008 के चंद्रयान-1 मिशन ने चंद्रमा की सतह पर पानी की मौजूदगी का संकेत दिया था।

इस मिशन की लैंडिंग साइट चंद्रयान-2 जैसी ही है। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास 70 डिग्री अक्षांश पर। लेकिन इस बार एरिया बढ़ाया गया है। चंद्रयान-2 में लैंडिंग साइट 500 मीटर X 500 मीटर थी। अब, लैंडिंग साइट 4 किमाr X 2.5 किमी है।

चंद्रयान-3 चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास सॉफ्ट-लैंडिंग कराने वाला दुनिया का पहला स्पेसक्राफ्ट बन गया है। चंद्रमा पर उतरने वाले पिछले सभी स्पेसक्राफ्ट भूमध्यरेखीय क्षेत्र में, चंद्र भूमध्य रेखा के उत्तर या दक्षिण में कुछ डिग्री अक्षांश पर उतरे हैं।

3. इस बार लैंडर में 5 की जगह 4 इंजन क्यों?

इस बार लैंडर में चारों कोनों पर चार इंजन (थ्रस्टर) लगाए गए। पिछली बार चंद्रयान-2 के बीचो-बीच लगा पांचवां इंजन हटा दिया गया। फाइनल लैंडिंग दो इंजन की मदद से ही हुई। दो इंजन इसलिए बंद रखे गए ताकि इमरजेंसी में ये काम कर सकें। चंद्रयान 2 मिशन में आखिरी समय में पांचवां इंजन जोड़ा गया था। इंजन इसलिए हटाया गया, ताकि ज्यादा फ्यूल साथ ले जाया जा सके।

4. 14 दिन का ही मिशन क्यों?

मनीष पुरोहित ने बताया कि चंद्रमा पर 14 दिन तक रात और 14 दिन तक उजाला रहता है। जब यहां रात होती है तो तापमान -100 डिग्री सेल्सियस से भी कम हो जाता है। चंद्रयान के लैंडर और रोवर अपने सोलर पैनल्स से पावर जनरेशन करेंगे। इसलिए वो 14 दिन तो पावर जनरेट कर लेंगे, लेकिन रात होने पर पावर जनरेशन प्रोसेस रुक जाएगी। पावर जनरेशन नहीं होगा तो इलेक्ट्रॉनिक्स भयंकर ठंड को झेल नहीं पाएंगे और खराब हो जाएंगे।

चंद्रयान-3 की सफलता के बाद वैश्विक लीडर पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि जब हम ऐसे ऐतिहासिक क्षण देखते हैं तो हमें बहुत गर्व होता है। ये नए भारत का सूर्योदय है। हमने धरती पर संकल्प किया और चांद पर उसे साकार किया ... भारत अब चंद्रमा पर है।

■■

स्तनपान सप्ताह

मां का शरीर स्तनपान से सुडौल एवं स्वस्थ हो जाता है उन्हें प्रेगनेंसी होने का खतरा अंतर में होता है बच्चों का स्तनपान कब परहेज से कराना चाहिए जब माताओं के स्तन में फोड़ा फुंसी घाव वर्तमान हो हाई फीवर क्रॉनिक बीमारी तथा संक्रामक रोगों के लक्षण हो तो स्तनपान से परहेज करना चाहिए जब तक मां का इलाज सही ढंग से नहीं हो जाता स्तनपान को बढ़ावा देने एवं जागरूक करने के लिए सरकारी तौर पर रूट लेवल पर जागरूकता के लिए बैनर पोस्टर के जरिए प्रचार प्रसार किया जा रहा है हर सामुदायिक स्वास्थ्य प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र एवं हेल्थ एंड वैलनेस सेंटर में उपस्थित सी एच ओ आशा आशा संगिनी एनएम के द्वारा गांव के हर घरों में हर महिलाओं को और हर पतियों को जागरूक किया जा रहा है.

स्तनपान सप्ताह 1 अगस्त 7 अगस्त के बीच मनाया जा रहा है इसमें सभी नवजात को जन्म के 1 घंटे के अंदर मां का दूध पिलाना सुनिश्चित करना है पूरे 6 महीने तक केवल और केवल मां का दूध है पिलाना आवश्यक है मां का दूध अमृत के समान है बेस्ट एंटीबायोटिक है बेस्ट वैक्सीन है जिसे अगर 6 महीने तक एक्सक्लूसिव ब्रेस्टफीडिंग करके रखा जाए तो बच्चों में बीमारियों से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है उसे निमोनिया डायरिया कुपोषण ऐसे बीमारी कम पैदा होते हैं इसमें सारे विटामिंस माइक्रो मिनिरल्स एवं पहले कुछ दिनों का गाढ़ा पीला दूध कोलोस्ट्रम बहुत उपयोगी दूध है हाई प्रोटीन हाई कैलोरी युक्त होता है जिसे पीने से रोगों की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है 6 महीने के बाद बच्चों में शारीरिक एवं मानसिक ग्रोथ के लिए सेमी सॉलिड़ फूड मैटेरियल्स की जरूरत होती है जिसमें खिचड़ी हलवा योग फ्रूट कस्टर्ड आलू आदि है जिससे उनकी कैलोरी और प्रोटीन का गैप पूरा हो सके मां का स्तनपान 2 से 3 घंटे के अंतराल पर और 20 से 30 मिनट तक होना चाहिए बच्चे को एक स्तन का पूर्ण स्तनपान करने के बाद ही दूसरे स्तन का पान करना चाहिए बच्चे में शुरू और अंत4 मिल्क एंड मिल्क शुरू और अंत का दोनों दूध उपयोगी दूध होता है अगर बच्चा जुड़वा हो तो एक स्तन का पान एक बच्चे को शुरू से अंत तक दूसरे बच्चे को दूसरे स्तन का शुरू से अंत तक होना चाहिए अपने बच्चे को स्तनपान कैसे कराएं इसके लिए माता को सेमी अपराइट पोजिशन 45 डिग्री के एंगल पर लेटना चाहिए बच्चे के बाएं स्तन का पान में बच्चे का सर को बाय शोल्डर पर और बाएं हाथ से बच्चे के सिर को फिक्स करके दाएं हाथ से स्तन को निचोड़ कर निपुल को बच्चे के मुंह में रखने से कराया जाता है इसी तरह दाएं स्तन का पान मां के दाएं हाथ पर बच्चे का सर रखकर बाएं हाथ से स्तन को मुंह में लगाने से होता है स्तनपान के फायदे क्या है इस पर स्तनपान करने से बच्चों की माताओं में गर्वाशय अंडाशय ब्रेस्ट कैंसर होने की संभावना कम जाती है नवजात में निमोनिया डायरिया कुपोषण होने की संभावना कम जाती है मां का शरीर स्तनपान से सुडौल एवं स्वस्थ हो जाता है उन्हें प्रेगनेंसी होने का खतरा अंतर में होता है बच्चों का स्तनपान कब परहेज से कराना चाहिए जब माताओं के स्तन में फोड़ा फुंसी घाव वर्तमान हो हाई फीवर क्रॉनिक बीमारी तथा संक्रामक रोगों के लक्षण हो तो स्तनपान से परहेज करना चाहिए जब तक मां का इलाज सही ढंग से नहीं हो जाता स्तनपान को बढ़ावा देने एवं जागरूक करने के लिए सरकारी तौर पर रूट लेवल पर जागरूकता के लिए बैनर पोस्टर के जरिए प्रचार प्रसार किया जा रहा है हर सामुदायिक स्वास्थ्य प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र एवं हेल्थ एंड वैलनेस सेंटर में उपस्थित सी एच ओ आशा आशा संगिनी एनएम के द्वारा गांव के हर घरों में हर महिलाओं को और हर पतियों को जागरूक किया जा रहा है कि स्तनपान जन्म के 1 घंटे के अंदर शुरुआत करें और 6 महीने तक केवल केवल स्तनपान कराएं

■ ■

त्यागी सर का स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति

विश्वनाथ लिस्ट और चेन लेकर निकल गए। चेन को सोनार से बेच दिया और उसी रकम से महीने का राशन खरीद कर शेष रकम गांव भेजने के लिए एवं महीने के अन्य खर्चों के लिए स्वयं के पास रख लिए। देर रात उदास मन के साथ विश्वनाथ के घर पहुंचने पर पत्नी घबरा गई। लेकिन विश्वनाथ की खामोशी को नजरंदाज करते हुए पत्नी अपनी चेन को पहले देखने की उत्सुकता से विश्वनाथ से अपनी चेन मांग ने लगी। विश्वनाथ मौन और उदास थे। चिरचिराते हुए पत्नी पूछी ' मेरा चेन कहां है?' विश्वनाथ बहुत धीरे स्वर में बोले पॉकेट से कही गिर गया। इसके बाद विश्वनाथ ने अपने मन से बनाई हुई एक कहानी को बताते हुए पत्नी को विश्वाश में ले लिया। पत्नी को दुःख तो हुआ। लेकिन विश्वनाथ की कहानी इतनी अच्छी थी कि कुछ मिनटों बाद पत्नी स्वयं विश्वनाथ को सोचने के लिए मना करने लगी।

प्रभाकर कुमार

'मे आई कम इन सर'

त्यागी सर और विश्वनाथ अपने वरिष्ठ अधिकारी के कक्ष के बाहर खड़े थे।

'आओ त्यागी बैठो' अपनी कुर्सी पर विराजमान मुगलसराय रेलवे डिविजन के वरीय मंडल कार्मिक अधिकारी ने रौबीली आवाज में त्यागी सर को अंदर आने का ईशारा किया।

नई पोस्टिंग पर आए अधिकारी महोदय से त्यागी सर की पहली मुलाकात थी। बातचीत का क्रम शुरू हुआ। विद्यालय से संबंधित कुछ बिंदुओं पर चर्चा होने लगी।

अधिकारी महोदय त्यागी सर से लगभग आधी उम्र के रहे होंगे। परंतु उनकी भाषा में शालीनता का अभाव साफ दिख रहा था। एक प्रतिष्ठित विद्यालय के उम्रदराज प्रधानाचार्य के लिए 'आप' के बजाय 'तुम' शब्द का संबोधन अटपटा था। एक शिक्षक की समाज में बहुत इज्जत थी और प्रत्येक वर्ग, समुदाय व बड़े से बड़े पद पर आसीन व्यक्ति भी एक शिक्षक के प्रति अत्यंत शिष्ट भाषा का ही इस्तेमाल करता था। परंतु अपने पद के गर्व में चूर अधिकारी महोदय की भाषा धीरे धीरे शालीनता से कोसों दूर जा चुकी थी और उद्दंडता के स्तर पर आ चुकी थी। दंभ पूर्ण वचन अब परिपक्वता और धैर्य की प्रतिमूर्ति त्यागी सर को चुभ रहे थे। साहिबगंज से मुगलसराय तक दो दशक से भी अधिक विद्यालय प्रमुख का दायित्व संभालते त्यागी सर को हो गया था। इन वर्षों के अनुभव में पं0 कमलापति त्रिपाठी जैसे रेल मंत्री से लेकर रेलवे बोर्ड के अनेकों चेयरमैन के साथ त्यागी सर को विभिन्न कार्यक्रमों में शिरकत करने का

अवसर प्राप्त हुआ था। लेकिन उन लोगो का व्यवहार भी हमेशा प्रत्येक शिक्षक के प्रति सम्मानजनक ही था।

त्यागी सर के प्रथम अनुभव का यह क्षण था, जब कोई अधिकारी अपमानजनक तरीके से उनसे बात कर रहा हो। वरीय कार्मिक अधिकारी देश के तत्कालीन राष्ट्रपति के करीबी रिश्तेदार होने का दावा भी करते थे। इस वजह से पद के साथ-साथ राष्ट्रपति के रिश्तेदार होने का भी अहंकार अधिकारी महोदय में भरा हुआ था। अधिकारी महोदय के उद्दंडतापूर्ण शब्दो के कारण त्यागी सर का तनाव बढ़ रहा था और जनवरी के ठंड में भी उनके माथे के पसीने को देखा जा सकता था। अधिकारी महोदय द्वारा प्रकट अनवरत अशिष्ट शब्द त्यागी सर को परेशान कर रहा था क्योंकि उन्हें महसूस हो रहा था कि यह अपमानजनक शब्द पूरे शिक्षक समाज के लिए अधिकारी महोदय प्रकट कर रहे है।

बहुत देर शांत रहने के बाद जब त्यागी सर को अधिकारी के असभ्य शब्द बर्दाश्त नहीं हुआ तो शिक्षक समाज के सम्मान के लिए बिना किसी अंजाम को सोचे अपने जेब से रूमाल निकालकर कर पहले तो अपने माथे के पसीने को पोंछे। वातावरण में सन्नाटा फैला हुआ था। एक पैर को दूसरे पैर पर चढ़ाया और आत्मविश्वास के व म्लान सूरत के साथ अधिकारी महोदय को बोले-

'महोदय यह दुर्भाग्य की बात है कि आप जैसे अशिष्ट व्यक्ति विद्यालय का अधिशासी अधिकारी और हमारे वरीय अधिकारी है। क्षमा कीजिए गा, लेकिन आपके बर्ताव से मुझे लगता है कि आप कभी सही तरीके से स्कूल नहीं गए है।'

त्यागी सर के शब्दो से ऐसा लग रहा था कि जैसे कोई बिजली का झटका अधिकारी महोदय को लग गया हो। अधिकारी महोदय बार-बार इधर उधर देखकर त्यागी सर का चेहरा देख रहे थे। उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि एक साधारण प्रिंसिपल उन जैसे असाधारण अधिकारी के प्रति ऐसे विचार प्रकट कर देंगे। आग बबूला होकर अधिकारी महोदय कुछ बोलने ही वाले थे कि एक हाथ की उंगली दिखाते हुए और दूसरे हाथ से मेज़ पीटते हुए बैठे-बैठे शिक्षक समुदाय पर निष्ठा के साथ त्यागी सर बोले 'आप जैसे हजारों, हमारे विद्यालय के छात्र अधिकारी बन चुके है। रेल के बड़े-बड़े अधिकारी भी प्राचार्य कक्ष में अपने जूते खोलकर आते है। ऐसा संस्कार है हमारे विद्यालय का।' त्यागी सर के शब्दो में गर्व और प्रखरता थी। उसी प्रखरता के साथ बोलते हुए त्यागी सर अधिकारी को आभास करा रहे थे कि देश के कर्णधारों के निर्माता हमेशा एक शिक्षक ही होता है। अधिकारी महोदय को समझ नही आ रहा था कि त्यागी सर के दर्पण दिखाने वाले शब्दो का जवाब कैसे दे? त्यागी सर अपने शब्दो के प्रहार के बाद भी उसी आत्मविश्वास के साथ बैठे थे। यह देखकर अधिकारी महोदय को झुंझलाहट हो रही थी। खीझ के साथ अधिकारी महोदय त्यागी सर को ट्रांसफर की धमकी देने लगे। धमकी सुनकर विश्वनाथ भी कुछ बोलने जा रहे थे, तभी त्यागी सर ने अपने पैर से विश्वनाथ के पैर को कसकर दबाया और गुस्से में विश्वनाथ का हाथ पकड़ कर बिना कुछ बोले चेंबर से निकल गए।

त्यागी सर के चेहरे से उनका क्रोध साफ- साफ झलक रहा था। इतने क्रोध में त्यागी सर को कभी किसी ने नहीं देखा था। डरते-डरते विश्वनाथ ने बाहर निकलकर त्यागी सर से पूछे 'सर आपने मुझे बोलने क्यों नहीं दिया?'

'अभी 6-7 साल तुम्हे नौकरी करना है और अब तो अमरेंद्र-विजयेंद्र भी रेल में नौकरी कर रहा है। उन लोगो का भी भविष्य है। पानी में रहकर मगरमच्छ से बैर नहीं करते।' त्यागी सर ने प्रतिक्रिया दिया। पुनः विश्वनाथ पूछे 'लेकिन आपका यह रुख सर?'

'मेरे अनुसार अब शिक्षक पेशा का सम्मान समाप्त हो गया है, मैं अब नौकरी नहीं कर पाऊंगा। लेकिन इस घटना की चर्चा आप कही मत कीजिए गा। इससे गलत संदेश समाज में जायेगा। ' प्रतिक्रिया देकर त्यागी सर तेजी से निकल गए।

त्यागी सर, यानी श्री जगदीश नारायण त्यागी, मुगलसराय रेलवे इंटर कालेज के प्राचार्य की गाथा विद्यालय की एक-एक ईंट हमेशा बयां करती है। उनके कार्यकाल को कॉलेज का स्वर्णकाल कहा जाता है।

बात तब की है जब वे कॉलेज में अपना कार्यकाल शुरू किया था। अक्टूबर महीने का अंतिम दिन था। मंगलवार की शाम का वक्त था। बाहर दीपावली उत्सव की तैयारियां चल रही थी। लेकिन त्यागी सर, अंग्रेजी प्रवक्ता बी पी मेहता के साथ विद्यालय का निरीक्षण कर रहे थे।

विश्वनाथ अपने गेम रुम में कुछ लिख-पढ़ रहे थे। वहीं एक तरफ एक ग्रुप

लीडर लगभग पचास छात्रों को... ग्रुप सावधान ....ग्रुप विश्राम....... ग्रुप सावधान ....ग्रुप प्रार्थना के लिए तैयार........प्रार्थना.. प्रारंभ

'दया कर दान भक्ति का.........'

प्रार्थना की स्वर लहरियाँ हवा मे गूंजने लगीं।

वही दूसरी तरफ कुछ लड़कियां शास्त्री जी की प्रतिमा, गेम रूप और प्राचार्य चेंबर की सीढ़ियों पर दीप प्रज्वलन कर रही थी।

विश्वनाथ के गेम रूम के बाहर पहुंचकर मेहता सर बोले 'कुंवर साब हम अंदर आ सकते है?' भौचक्का होकर विश्वनाथ मेहता सर के तरफ देखे और बोले 'शर्मिंदा क्यों कर रहे है सर, बधाई हो आपको साहिबगंज में बतौर हेडमास्टर प्रोन्नति मिल गई है।' मेहता सर और त्यागी सर अंदर आकर बैठ गए। विश्वनाथ ने भी अपने काम को पूरा करके फाइल बांध कर अलमारी में रख दिया और इत्मीनान से बैठ गए। विश्वनाथ अब तक त्यागी सर को पहचान नहीं रहे थे। मेहता सर पूछे 'कुंवर साब आज दीपावली के दिन विद्यालय में क्या कर रहे है?'

'छठ पूजा के बाद मधुपुर जाना है स्काउट्स कैंप है और बिहारी है तो छठ पूजा में गांव भी तो जाना है सर, इसलिए बच्चो की तैयारी करवा रहा हूं। वैसे भी हर दीपावली विद्यालय में दीप प्रज्ज्वलित करके ही घर पर दीप प्रज्ज्वलन करता हूं।' विश्वनाथ ने प्रतिक्रिया दिया।

विश्वनाथ की प्रतिक्रिया से प्रसन्न होकर त्यागी सर ने विश्वनाथ से सवाल पूछा 'छठ पूजा की छुट्टी तो एक ही दिन की होती है, कैसे जाइए गा?' विश्वनाथ ने जवाब दिया 'सीएल लूंगा।' त्यागी सर ने पुनः सवाल किया 'कल तो नए प्रिंसिपल आ रहे है, अगर उन्होंने छुट्टी नहीं दिया तो?' विश्वनाथ ने बहुत आराम से त्वरित प्रतिक्रिया दिया 'कर्म ही सबसे बड़ा पूजा है, अगर छुट्टी नहीं मिली तो नही जायेंगे।' मुस्कुराते हुए मेहता सर ने विश्वनाथ को बताया 'यही त्यागी सर है जो प्राचार्य बनकर परसो ज्वाइन करेंगे। जब मेरा साहिबगंज में हेडमास्टर के लिए और सर का मुगलसराय में प्राचार्य के लिए ऑर्डर निकला था, उस दिन हम लोग कलकत्ता में साथ ही थे। तभी हम लोगों का प्रोग्राम बन गया था।'

सुनते ही विश्वनाथ खड़े हो गए। त्यागी सर विश्वनाथ की पीठ थपथपाते हुए बोले 'कुंवर तुम्हारी बहुत चर्चा सुना था, आज देखकर मन खुश हो गया।, कर्तव्य के प्रति तुम्हारी ईमानदारी को मैं सलाम करता हूं।'

इस वाकया के बाद त्यागी सर, विश्वनाथ के प्रति हमेशा स्नेहिल ही रहे।

त्यागी सर बायोलॉजी प्रवक्ता के रूप में मुगलसराय रेलवे कॉलेज में आए थे। प्रोन्नति पाकर हेडमास्टर के तौर पर साहिबगंज उसके बाद प्राचार्य के रूप मुगलसराय में अपनी सेवा दी।

त्यागी सर के कार्यकाल में किसी छात्र कि क्या मजाल की प्रेयर के बाद पूरे परिसर में खुद की इच्छा से कोई 'चूं' भी कर सके। प्रेयर के तुरंत बाद त्यागी सर स्कूटर लेकर निकल जाते थे और विद्यालय से दो-तीन किलोमीटर तक चारो तरफ अपनी स्कूटर दौड़ाते थे। उद्देश्य एक मात्र, विद्यालय छोड़कर भागे विद्यार्थियों को पकड़ना। अगर विद्यार्थी पकड़ा गया तो फिर उसकी शामत आ गई। बिना गार्जियन के फिर उस बच्चे के लिए विद्यालय में नो-एंट्री का बोर्ड लग जाता था।

छात्र को डांटते समय 'आप' का संबोधन करना त्यागी सर के आदत में थी और शारीरिक बल का प्रयोग महीनो में एकाध से बार करते थे। लेकिन जिसके ऊपर कर दिए फिर अनुशासनहीनता उस बच्चे के जीवन से समाप्त हो जाता था।

हर कालांश में शिक्षकों से सभी छात्र की हजारी लेते थे। अगर उन्हें पता लग गया कि कोई छात्र छुट्टी से पहले विद्यालय से भाग गया है। तो दूसरे ही दिन खूब बड़ी सीकड़ से सैकड़ों साइकिलों को लॉक करवा देते थे। फिर 4 बजे छुट्टी के बाद ही वह सीकड़ खुलता था।

अपने चेंबर में बहुत कम बैठते थे। क्लास-क्लास घूमते रहते। यदि क्लास में किसी कारण से शिक्षक को जाने में देर हो जाती तो स्वयं पढ़ाने लगते। त्यागी सर जब प्रवक्ता थे तब विद्यालय में एनसीसी ऑफिसर भी थे और फौजी जीवन से अत्याधिक प्रभावित थे। किसी को समझाते समय मिलिट्री कार्यशैली की चर्चा जरूर करते थे। बहुत ही मधुर वाणी में शिक्षकों को समझाते 'कोई बात नही, आखिर मेरा भी तो अभ्यास बना रहना चाहिए। सीधी सी बात ,कमांडर को ही नही मालूम कि राइफल्स के कितने पार्ट होते है तो सैनिक से क्या आशा की जा सकती है।'

एनसीसी, स्काउट्स, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि में रुचि रखने वाले छात्रों को भी त्यागी सर प्रोत्साहित करते थे और हर तरीके से उन छात्रों का तीव्रता से

सहायता भी करते थे।

साथी शिक्षको के साथ त्यागी सर के संबंधों में भी तीव्रता 'कमी-बेसी' मापी जा सकती थी। वे साथी शिक्षकों से नाराज नहीं होते, बल्कि रूठते थे। उनका रूठना कई बार तंज जैसा लगता था। उस दौर में विद्यालय में कई कार्यक्रम आयोजित होती थी। उन कार्यक्रमों में कुछ चुनिंदा शिक्षकों से अपेक्षा होती थी कि जरा पहले आएंगे और व्यवस्था में थोड़ा हाथ बटाएंगे। लेकिन वे हैं कि दर्शकों और मेहमानों वाले समय पर पहुंच रहे हैं। त्यागी सर विलंब से आने वाले शिक्षको के प्रणाम या नमस्कार को भी नजरअंदाज कर जाएंगे। स्वयं को इस तरह व्यस्त रखेंगे कि वे शिक्षक अपराधबोध से परेशान होते रहेंगे कि जरा पहले आना चाहिए था। लेट से आने वाले शिक्षक सर झुकाकर इधर-उधर साथी शिक्षकों से बात करेंगे। तभी त्यागी सर बगल से गुजरेंगे और लेट शिक्षको के अपराधबोध को और तीव्र करके जाएंगे 'सुनो, ऐसो माता चाले जाना.............चाय की व्यवस्था है, पीकर जाना।' वे शिक्षक स्वयं अगली बार से राइट टाइम हो जायेंगे।

त्यागी सर ने एक नियम बनाया था। 10वी और 12वी कक्षा में पास करके आए सभी छात्र को पहले दिन विद्यालय अपने गार्जियन के साथ आना होता था। सभी विषय के शिक्षक त्यागी सर के साथ एक जगह बैठते थे और विद्यार्थी व गार्जियन का एक-एक करके इंटरव्यू होता था। उद्देश्य अभिभावकों को बताना था कि पाल्य का क्या स्तर है और बोर्ड परीक्षा को लेकर योजना भी तैयार होती थी।

एक बार एक अभिभावक क्रम में देरी होने के कारण तमतमाते हुए आऐ और पहले अपनी साक्षात्कार कराने के लिए दवाब बनाने लगे। कुछ शिक्षकों से भी सिफारिश कराने लगे। उन्होंने कहा कि मुझे ड्यूटी पर जाना है। त्यागी सर ने उनसे शांत स्वभाव में कहा 'महाशय आप अपने बच्चे के भविष्य के लिए एक दिन का अवकाश नहीं ले सकते.....? मैं आपके शाखा अधिकारी को फोन कर देता हूं। लेकिन क्रम तो नही टूटेगा।' अभिभावक गुस्से में वहां से चला गया। कुछ दिन बाद ही उस अभिभावक की तबियत खराब हो गई। वह एक निजी चिकित्सालय में भर्ती था। त्यागी सर को सूचना मिली तो वे उस अभिभावक की कुशलक्षेम लेने चले गए। त्यागी सर को देख अभिभावक पहले तो शर्मिंदगी से अपने सर नीचे किए हुए था। फिर बात करने के बाद अपनी गलती को स्वीकार किए।

ऐसे प्रयासों से त्यागी सर ने विद्यालय को तो अनुशासित किया ही साथ ही अपनी अच्छी सामाजिक छवि भी विकसित की। इन्हीं अनुशासित कारणों से बोर्ड रिजल्ट्स भी बहुत अच्छे होने लगे थे। अनुशासन व अच्छे परिणाम के इस उत्तम स्तर के कारण जहां सिर्फ कर्मचारियों और इने-गिने अधिकारियों के बच्चे बढ़ते थे तो वही रेलवे के सभी अधिकारियों के साथ अच्छे-अच्छे राजनैतिक पार्टियों के नेता अपने बच्चो को भी विद्यालय में पढ़ाने लगे। जिसका सकारात्मक परिणाम यह निकला कि विद्यालय के विकास सम्बन्धित फाइलों पर कभी कोई अवरोध नही लगता था।

त्यागी सर के कद में भी इज़ाफ़ा हुआ। अधिकारियों के कार्यक्रम में त्यागी सर की कुर्सी हमेशा डी0आर0एम0 और जी0एम0 के बगल में लगती थी। बड़े से बड़े रेल अधिकारी एक आम अभिभावक की तरह त्यागी सर से मिलने विद्यालय में आते थे।

त्यागी सर अच्छे शिक्षक और प्रशासक के साथ एक पक्के गृहस्थ भी थे। विद्यालय की तरह परिवार भी उनकी प्राथमिकता थी। उनके बेहतर पारिवारिक स्वास्थ्य का कारण भी यही था। लंबे वर्षों के अनेकों संबंध में कभी किसी ने उन्हें कभी भी खिन्न नहीं देखा। परिवार, समाज, और विद्यालय के बीच संतुलन बनाने में बहुत से प्राचार्य असफल हो जाते है, लेकिन त्यागी सर ने इतना सुंदर संतुलन बनाया कि किसी भी दूसरे प्राचार्य को रश्क हो।

प्रतिदिन सुबह पैदल निकलकर मॉर्निंग वॉक करने के बाद हीरा की चाय दुकान पर एक कुल्हड़ चाय पीते थे। अगर कोई परिचित मिल गया तो एक बार पीने के लिए आग्रह करते थे। संकोच में भले आपने मना कर दिया तो दुबारा पूछते भी नहीं थे। यदि आपने पीने की इच्छा जाहिर की तो सबसे स्पेशल चाय आपके लिए बनवाते और समाज व रेल संबंधित मसालेदार खब़र की अपेक्षा करते हुए आपसे संबधित विभाग की चर्चा छेड़ देते। आपकी चाय खत्म होने तक इत्मीनान से आपसे बात करते। उसके बाद चाय दुकान की सामने लगी एक गुमटी में साढ़े तीन फीट, लम्बी नाक, कान में बाल, एक गमछा व गंजी पहने हुए और कंधे पर दूसरा गमछा रखे व्यक्ति से दिन भर के कोटे का तीन पान बंधवाते थे। पान सादी

पत्ती में हल्का चूना, थोड़ा अधिक कत्था, इलायची, लौंग, पिपरमिंट,किमाम और गुलाबजाल वाली होती थी। हमेशा इसी दुकान की पान खाते थे क्योंकि यह दुकानदार नशीले पदार्थ नहीं बेचता था।

फिर आर्यसमाज मंदिर के पास की सट्टी से स्वयं मोल-भाव करके ताजी हरी सब्जियों को खरीदते हुए क्वाटर पहुंचना। विद्यालय 10 से 4 होता था। इसलिए सुबह ही पत्नी के साथ भरपेट भोजन करना त्यागी सर की प्रतिदिन की दिनचर्या थी। रविवार को पूरा समय परिवार को देते थे। विद्यालय का कोई कर्मचारी या शिक्षक रविवार को मिलना भी चाहे तो भी बहुत जरूरी होने पर ही मिलते थे।

विश्वनाथ अपने परिश्रम, विद्यालय के प्रति समर्पण और कर्तव्य के प्रति स्वयं को अर्पण करके त्यागी सर के बहुत करीब आ गए थे। त्यागी सर विद्यालय संबंधित बड़े से बड़े निर्णय में विश्वनाथ की सुझाव को अवश्य सुनते थे। सांस्कृतिक कार्यक्रम हो, स्काउट्स संबंधित कैंप हो अथवा खेल संबंधित कैंप हर कैंप के इंचार्ज त्यागी सर विश्वनाथ को ही बनाते थे। कभी-कभी विश्वनाथ अपने निजी कारणों से कैंप में जाने से टालते भी थे तो त्यागी सर हमेशा समझाते ' कुंवर तुम्हारे पास क्षमता और हुनर दोनो है। कुछ सीखा दो, कुछ दिखा दो इन बच्चो को। याद रखो बच्चो के अंतः कारण में यह याद अमिट रह जायेगा।'

त्यागी सर के इन शब्दो को कई बार चरितार्थ होते विश्वनाथ ने देखा भी था। मई महीना, वाराणसी कलेक्ट्रेट में जनपद के सभी इण्टर व डिग्री कॉलेज के प्रिंसिपल की मीटिंग जिलाधिकारी की अध्यक्षता में होने वाली थी। उस मीटिंग में तत्कालीन मुख्यमंत्री वीर बहादुर सिंह के स्पेशल सेक्रेटरी मिस्टर मल्होत्रा भी उपस्थित होने वाले थे। जिन्होंने मैट्रिक और इण्टर रेलवे कॉलेज से ही पास किया था। पहली कोशिश में ही मिस्टर मल्होत्रा आई0ए0एस0 में चयनित हो गए थे और ट्रेनिंग के एकाद पोस्टिंग बाद ही वे स्पेशल सेक्रेटरी भी बन गए थे। उस दिन की मीटिंग में त्यागी सर ने विश्वनाथ को भी साथ ले लिए थे। मीटिंग शुरू हो गई थी। त्यागी सर और विश्वनाथ थोड़ा लेट पहुंचे। लेकिन त्यागी सर और विश्वनाथ को देखते ही स्पेशल सेक्रेटरी मिस्टर मल्होत्रा गति में खड़े होकर दोनो लोगो के तरफ बढ़े और घुटनों पर बैठकर अपनी ललाट को दोनो के पैरो में रख दिए। उपस्थित जिलाधिकारी दोनो लोगो को पहचान नहीं पाय और एक कोने में खड़े हो गए। स्पेशल सेक्रेटरी मिस्टर मल्होत्रा सभी को संबोधित करते हुए बोले ' आप दोनो मेरे गुरु है।' इतना बोलते ताली की ध्वनि गूंजने लगी। विश्वनाथ की ओर इशारा करते हुए मल्होत्रा ने बताया कि 'कुंवर सर थे कि मैं कश्मीर से कन्याकुमारी तक कई जगह घूम लिया। नही तो अब तो समय अभाव में नामुमकिन लगता है।' विश्वनाथ भावविभोर हो गए।

त्यागी सर को विश्वनाथ पर अत्यधिक भरोसा था। जब भी कोई संकट त्यागी सर को महसूस होता। वे चटपट में विश्वनाथ को बुलाते और बोलते 'कुंवर इस समस्या का कैसे भी समाधान करो' और विश्वनाथ उन समस्याओं का समाधान कर देते।

गर्मी की छुट्टी शुरू हुए दो दिन बीते थे। सुबह का समय था। त्यागी सर सरकारी काम से जोनल मुख्यालय कलकत्ता जाने की तैयारी कर रहे थे। तभी उनके सरकारी आवास पर लगभग 26 वर्ष के लड़के ने दस्तक दिया। लड़का घबराया हुआ था। त्यागी सर दरवाजा खोले तो देखे उनके करीबी दोस्त का लड़का है। दरवाजा खुलते लड़का हाँपते हुए बोला ' चाचा जी पापा बीएचयू में एडमिट है, उनका ऑपरेशन होने वाला है। डॉक्टर ने छः यूनिट रक्त की व्यवस्था करने को कहा है।' इतना बोलते लड़का घबराहट में रोने लगा। त्यागी सर ढाढस देकर लड़के को शांत कराय और पत्नी से बच्चे को नाश्ता कराने को बोले। त्यागी सर मानसिक द्वंद में थे। मुख्यालय भी जाना जरूरी था और मित्र इलाहाबाद का रहने वाला था तो हर हाल में मदद भी करना जरूरी था। सोचते-सोचते कुछ देर बाद मानसिक द्वंद के साथ त्यागी सर शास्त्री कॉलोनी स्थित विश्वनाथ के क्वाटर के लिए लड़के को लेकर स्कूटर से निकल गए। विश्वनाथ की उपस्थिति को लेकर त्यागी सर के मन में असमंजस थी क्योंकि छुट्टी मिलते विश्वनाथ गांव की ओर निकल जाते थे। त्यागी सर क्वाटर पर पहुंचे उसी वक्त विश्वनाथ स्टेशन के लिए निकल ही रहे थे। त्यागी सर की घबराहट को देखकर विश्वनाथ पूछे 'सर सब कुछ ठीक है न?' त्यागी सर ने अपने मानसिक द्वंद को विश्वनाथ के सामने रखा। जिस विश्वास के साथ त्यागी सर विश्वनाथ के पास आए थे वैसा ही हुआ। विश्वनाथ त्यागी सर के बोलने से पहले ही बोले 'सर आप कलकत्ता जाइए,मैं देख लूंगा।' त्यागी सर जानते थे कि विश्वनाथ

की सामाजिक पकड़ इतनी विस्तृत है कि कही न कही से विश्वनाथ रक्त उपलब्ध करवा ही देंगे। दोस्त के लड़के को विश्वनाथ के पास छोड़कर त्यागी सर निकल गए। विश्वनाथ अपना सामान घर पर रखे और लड़के को लेकर अलीनगर स्थित इंडिया ऑयल के कार्यालय चले गए। कार्यालय में फ्यूल ऑफिसर गौरी शंकर सिंह थे। गौरी बाबू से विश्वनाथ की अच्छी मित्रता थी। गौरी बाबू से जब विश्वनाथ ने परिस्थिति स्पष्ट करते हुए रक्त देने के लिए आग्रह किया तो गौरी बाबू विश्वनाथ को निश्चिंत रहने के लिए बोलते हुए बोले ' 10 लोग हम इलाहाबाद जा रहे है, बीएचयू में रक्त देते हुए चले जायेंगे। आप परेशान मत होइए बच्चे को भी बीएचयू में मैं उतार दूंगा।'

एक तरफ गौरी बाबू बीएचयू के लिए निकल गए। तो दूसरी तरफ विश्वनाथ प्राचार्य त्यागी सर के सरकारी आवास पर आकर परिस्थिती का अपडेट भी कर दिए।

'मैं जानता था कुंवर ये काम तुम ही कर पाओगे।' विश्वनाथ के अपडेट के बाद त्यागी सर ने प्रतिक्रिया दिया। बाद में त्यागी सर के माध्यम से पता चला कि उनका दोस्त स्वस्थ होकर घर भी लौट गए।

कॉलेज का चौकीदार था, प्राचार्य त्यागी सर का भक्त था। त्यागी सर का भी अत्यधिक स्नेह उस पर रहता था। एक दिन विद्यालय में छुट्टी के बाद प्राचार्य त्यागी सर के चेंबर में त्यागी सर और विश्वनाथ बैठे हुए थे। चौकीदार दोनो लोगो को अकेला पाकर आया और रोने लगा। त्यागी सर रोने की वजह समझ नहीं पाए। पहले तो उसे शांत कराया फिर रोने के पीछे का कारण पूछे। चौकीदार सुबकते हुए बताया 'अगले सप्ताह बेटी की शादी है और घर में चोरी हो गई है सर। चोर सब कुछ लूट कर चला गया।' चौकीदार फिर रोने लगा। त्यागी सर शांत करवाते हुए बोले 'तुम परेशान मत हो,हम लोग है न।' संयोग से उस दिन सभी स्टाफ की तनख्वाह का वितरण हुआ था। त्यागी सर ने अपनी पूरी तनख्वाह देते हुए बोले 'मैं तो इतना ही सहायता कर सकता हूं।' चौकीदार थोड़ी राहत की सांस तो लिया लेकिन बहुत उम्मीद के साथ फिर विश्वनाथ की ओर देखने लगा। विश्वनाथ समझ नही पा रहे थे कि कितना मदद किया जाए क्योंकि विश्वनाथ के ऊपर भी जिम्मेदारी थी। उनके तनख्वाह का बड़ा भाग गांव जाता था तो कुछ बच्चो पर भी खर्च करना होता था। लेकिन सवाल जरूरतमंद की बेटी के विवाह का था तो विश्वनाथ ने भी अपनी पूरी तनख्वाह उस चौकीदार को सुपुर्द कर दी। त्यागी सर के चेहरे पर एक अलग ही जीत झलक दिख रही थी। 'कुंवर तुम्हारा व्यक्तित्व ऐसा है कि तुम्हारा यश पताका हमेशा लहराएगा।' विश्वनाथ की पीठ थपथपाते हुए त्यागी सर अपने विचार प्रकट किए।

विश्वनाथ ने अपनी तनख्वाह तो सुपुर्द कर दी। लेकिन अब गांव खर्चा कैसे जायेगा और घर का खर्चा कैसे चलेगा? सोचते-सोचते विश्वनाथ घर लौटे और बाउंड्री में बैठकर सोचने लगे। तभी पत्नी आई और पूछी 'मालिक महीने का राशन कब लायेंगे? और आपने बोला था कि मेरे पास गहना के नाम पर बचा एकमात्र चेन को आप इसबार साफ भी करवा दीजिए गा। करवाएंगे न?' उम्मीद के साथ पत्नी विश्वनाथ की ओर देखने लगी।

इतने में विश्वनाथ के मस्तिष्क में एक योजना आई और पत्नी को आश्वस्त करते हुए बोले 'राशन की लिस्ट दे दीजीए और चेन भी, सब कुछ हो जायेगा।

विश्वनाथ लिस्ट और चेन लेकर निकल गए। चेन को सोनार से बेच दिया और उसी रकम से महीने का राशन खरीद कर शेष रकम गांव भेजने के लिए एवं महीने के अन्य खर्चों के लिए स्वयं के पास रख लिए। देर रात उदास मन के साथ विश्वनाथ के घर पहुंचने पर पत्नी घबरा गई। लेकिन विश्वनाथ की खामोशी को नजरंदाज करते हुए पत्नी अपनी चेन को पहले देखने की उत्सुकता से विश्वनाथ से अपनी चेन मांग ने लगी। विश्वनाथ मौन और उदास थे। चिरचिराते हुए पत्नी पूछी ' मेरा चेन कहां है?' विश्वनाथ बहुत धीरे स्वर में बोले पॉकेट से कही गिर गया। इसके बाद विश्वनाथ ने अपने मन से बनाई हुई एक कहानी को बताते हुए पत्नी को विश्वाश में ले लिया। पत्नी को दुःख तो हुआ। लेकिन विश्वनाथ की कहानी इतनी अच्छी थी कि कुछ मिनटों बाद पत्नी स्वयं विश्वनाथ को सोचने के लिए मना करने लगी।

1992 के अंतिम महीनो से 1996 के पहले महीने तक कार्यरत वरीय कार्मिक अधिकारी बहुत ही अहंकारी थे। इन्ही कारणों से बड़े से बड़े अधिकारियों के साथ कई बार वरीय कार्मिक अधिकारी की तू तू मैं मैं हो चुकी थी। मानवता तो उन में थी ही नही। किसी की मजबूरी भी नहीं समझते थे। वरीय कार्मिक अधिकारी

विद्यालय का अधिशासी अधिकारी भी होते है। इसलिए प्राचार्य के साथ वरीय कार्मिक अधिकारी का चोली दामन का साथ होता है। इसके बावजूद वरीय कार्मिक अधिकारी के व्यवहार के बारे में जानकर प्राचार्य त्यागी सर एक बार भी उनसे मिलने नही गए थे। अगर कोई काम भी रहता था तो त्यागी सर सीधे मंडल रेल प्रबंधक से मिल लेते थे। इस वजह से त्यागी सर के प्रति वरीय कार्मिक अधिकारी को बहुत खीझ रहती थी। विद्यालय का कोई भी शिक्षक किसी व्यक्तिगत काम से वरीय कार्मिक अधिकारी के पास चल जाए तो, उस शिक्षक को बैठने के लिए बोलना तो दूर की बात है। उस शिक्षक के साथ वह अधिकारी महोदय ऐसा व्यवहार करते थे कि किसी भी प्रतिष्ठित व्यक्ति को देखकर शर्म आ जाए। घंटो प्रतीक्षा करवाने के बाद शिक्षको को समय देते थे। गलती से समय मिल भी जाए किसी शिक्षक को वरीय कार्मिक अधिकारी से मिलने का, तो फिर सीधे सामने से वह अधिकारी महोदय प्रस्ताव देते 'काम तो हो जायेगा, खर्चा कितना करोगे?' इन तरीके की सूचनाएं जब त्यागी सर के पास शिक्षको के माध्यम से पहुंचती तो अंदर ही अंदर मन कचोट कर त्यागी सर रह जाते थे। उस दौरान शिक्षको को ईश्वर समझा जाता था और त्यागी सर जैसे सिद्धांतवादी शांत स्वभाव के व्यक्ति जो सदैव ही छात्रो के हित और शिक्षक की गरिमा को ऊंचा उठाने हेतु प्रयत्नशील रहते थे। वैसे व्यक्तित्व के सामने अगर वरीय कार्मिक अधिकारी के घिनौना बर्ताव की चर्चा अगर कोई शिक्षक छेड़ भी देता तो भी त्यागी सर नजरंदाज करते हुए बोलते 'हम शिक्षक है, हमे हमेशा सकारात्मक रहना चाहिए।'

प्रारंभिक घटना के अनुसार वर्ष 1994 के गणतंत्र दिवस के दूसरे दिन प्राचार्य त्यागी सर विभागीय काम को लेकर वरीय कार्मिक अधिकारी के बुलावे पर विश्वनाथ को लेकर उनके चेंबर में पहुंचे। लेकिन वरीय कार्मिक अधिकारी के अनुचित व्यवहार के कारण त्यागी सर और अधिकारी के बीच बहुत तीखी नोक-झोंक हुई। उसके बाद त्यागी सर विश्वनाथ को लेकर क्रोध में वहां से चल दिए।

उस दिन पूरा समय त्यागी सर उधेड़बुन में थे। एक तरफ विद्यालय और मुगलसराय से एक ऐसा लगाव हो गया था कि छोड़ने की इच्छा नहीं कर रही थी। तो दूसरी तरफ दिन-प्रतिदिन बदलते प्रशासनिक व्यवहार से पूरी तरह असंतुष्ट थे। साथ ही वरीय कार्मिक अधिकारी को बोल तो दिए थे, लेकिन वो राष्ट्रपति का रिश्तेदार था। इस वजस से एक अज्ञात भय भी त्यागी सर को लग रहा था। इसी द्वंद के साथ त्यागी सर शाम को मंडल रेल प्रबंधक के पास गए और पूरे प्रकरण से रूबरू करा दिया। मंडल रेल प्रबंधक से त्यागी सर ने यह भी बोल दिया कि 'सर मैं स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेने जा रहा हूं।' उस शाम त्यागी सर और मंडल रेल प्रबंधक में लंबी वार्ता हुई। मंडल रेल प्रबंधक से त्यागी सर का पुराना संबध था, इसलिए वे विभिन्न तरीकों से त्यागी सर को समझाने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन त्यागी सर अपने निर्णय पर अटल थे।

स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति की खबर सुनकर अधिकारी खेमा में बखेड़ा मच गया। कई जोनल अधिकारियों ने त्यागी सर को समझाने की कोशिश भी की। लेकिन 'अब शिक्षक पेशा का सम्मान समाप्त हो गया है।' कहकर त्यागी सर बात को टाल देते थे।

31 जनवरी 1994 की सुबह त्यागी सर स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति का पत्र लेकर प्रातः मंडल रेल प्रबंधक के पास पहुंचे। मंडल रेल प्रबंधक साहब बोले 'त्यागी जी फिर सोच लीजिए।' त्यागी सर ने प्रतिक्रिया दिया ' सोच समझकर ही कर रहा हूं सर।' कुछ देर शांत रहने के बाद त्यागी सर बोले 'सर फ्रांस में एक फिलॉस्फर थे-----रूसो। बरसों पहले उन्होंने एक सवाल फ्रांस की जनता से पूछा था। आदमी पैदा तो स्वतंत्र होता है, लेकिन बाद में वह जंजीरों से क्यों जकड़ जाता है? फ्रांस की जनता ने इसका जवाब ऐतिहासिक फ्रांसीसी क्रांति से दिया था।' त्यागी सर के इन शब्दो को सुनकर मंडल रेल प्रबंधक बोले 'आई सैल्यूट यू सर'।

त्यागी सर की विदाई मुगलसराय के इतिहास की इकलौती ऐसे विदाई थी। उस दिन पूरा नगर उदास था। 16 वर्षो के सबसे लंबे कार्यकाल के बाद त्यागी सर विदा ले रहे थे। बहुतों की आखों में नमी थी तो बहुत उदास भी थे। पूरे नगर में चर्चा का विषय बस यही था कि अब कैसे विद्यालय चलेगा? एकाध दिन बाद त्यागी सर जब स्टेशन ट्रेन पकड़ने के लिए निकल रहे थे तब विद्यालय से स्टेशन तक दो किलोमीटर तक हजारों छात्र खड़े होकर पुष्प वर्षा और एक स्वर में नारा लगा रहे थे, 'जब तक सूरज-चांद रहेगा त्यागी तेरा नाम रहेगा।' ■■

ठहाकों के बीच मदमस्त होते संग पेड़ ये बहारें- योग

रोज़मर्रा की ये आम सी जिंदगी, कभी-कभी इतनी बोझिल और अरूचीपूर्ण लगती जिससे इंसान जो चुस्त फुर्त है वो भी खुद को शिथिल सा पाने लगता है। इसी समस्या को देखते हुए हमारे वरिष्ठ जनों ने ही कुछ ऐसा कर दिखाया जो कि आज पूरे भारत देश में बहुत जगह आपको देखने को मिल जाएगा बाग बगीचों में चाहे वह सुबह का समय हो या शाम का समय हो। हमारे वरिष्ठ जनों ने एक साथ मिलकर एक ही जगह पर चाहे वह परिचित हो या ना हो दोस्ती यारी निभाते हुए हास्य योग नामक क्लब बनाना शुरू किया। जिसमें करना क्या है शाम को एक जगह सभी मित्रों को मिलकर योग करना है अपनी दिनभर की दिनचर्या से कुछ समय खुद के लिए निकालकर और जोर-जोर से ठहाके लगाने हैं। चाहे दुनिया देखे कुछ भी कहे पास से गुजर कर तंज कसे तो भी उन्हें नजरअंदाज करते हुए अपनी मस्ती में मस्त रहना है। धीरे-धीरे हास्य क्लब की ओर नव युवा भी देखा जाए तो आजकल आकर्षित हो रहे हैं वह भी अपनी दिनभर की दिनचर्या से कुछ पल निकालकर वरिष्ठ लोगों के संगत में रहकर जोर-जोर से ठहाके लगाते हुए, एक समूह में योगा करते हुए आपको जगह जगह पर मिल जाएंगे यह हास्य योग समुह नव युवाओं को बहुत पसंद आ रहा है। ठहाकों से यह फायदा है कि हमारे शरीर के अंदर की नसें धमनियां पूर्ण रूप से स्वतंत्र होकर खुल जाती है, ठहाको से शरीर के भीतर घुसती शुद्ध वायु से भी फेफड़े साफ होते। साथ ही शुद्ध रक्त का संचार होता। नवीन रक्त भी बनता। साथ ही योग से हमारे शरीर की ब्लॉक नसें भी खुल जाती है बस परिवर्तन कुछ करना है अपनी दैनिक दिनचर्या मे तो बस इतना कि आपको खुद के लिए वक्त निकालना है। खुद की निरोगी काया के लिए, लोग क्या कहेंगे, इस समाज की सोच को, सबको नज़र अंदाज़ कर जोर जोर से ठहाका लगाना है। योग करना है। योग जो कि आज वर्तमान की आपाधापी, बढ़ते प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण को ध्यान मे रखते हुए बहुत जरूरत है। बढ़ती बिमारियों को ध्यान रखते हुए नित कुछ समय निकालकर खुद के लिए जियें। तो आओ मिल योग करें। इससे हम नवयुवा अपने वरिष्ठों को भी समय देकर उन्हें सम्मान दे पाएंगे साथ ही उनसे ज्ञान रूपी जानकारी पा सकते हैं अपनी संस्कृति, संस्कार के बारे में भी सीख सकते हैं।

■■

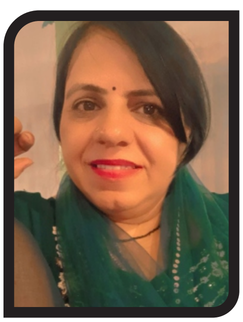

वीना आडवाणी तन्वी
नागपुर, महाराष्ट्र

सनी देओल के एक्शन और डायलॉगबाजी से भरपूर

गदर 2 ने मचाया गदर......

फिल्म के डायरेक्टर अनिल शर्मा ने 2001 में रिलीज हुई फ़िल्म गदर की सफलता को गदर-2 में भुनाने की कोशिश नहीं की है। उन्होंने कोई भी लोकप्रिय सीन दोहराने की गलती नहीं की है। उन्होंने तारा सिंह के हैंडपंप उखाड़ने वाले सीन को बड़ी चतुराई से दिखाया है। जहां तारा सिंह उसे उखाड़ता नहीं बल्कि उसकी तरफ केवल देखता है और पाकिस्तानी डर जाते हैं। इस बार अनिल शर्मा ने सनी देओल से बिजली का खंभा और बैलगाड़ी का चक्का उखड़वाया है। अनिल शर्मा ने गदर 2 में खूबसूरती से 'गदर' की यादों को पिरोया है, जिनसे दर्शक इमोशनली कनेक्ट हो जाते हैं। उन्होंने फिल्म में एक्शन, इमोशन के साथ देशभक्ति का सटीक तड़का लगाया है।

फिल्म निर्देशक- अनिल शर्मा

मुख्य कलाकार- सनी देओल,अमीषा पटेल,उत्कर्ष शर्मा,सिमरन कौर,मनीष वाधवा,लव सिन्हा, गौरव चोपड़ा।

फिल्म प्रोड्यूसर-डायरेक्टर अनिल शर्मा की सुपरहिट फिल्म ग़दरः एक प्रेम कथा की अपार सफलता के 22 साल बाद सिनेमाघरों में रिलीज हो गई है 'गदर 2 : द कथा कंटीन्यूज'।

फिल्म 'गदर' की कहानी जहां 1947 के विभाजन के आधार पर थी, वहीं 'गदर 2' की कहानी 1971 का भारत-पाकिस्तान युद्ध शुरू होने से ठीक पहले की है।

फिल्म की शुरुआत नाना पाटेकर की आवाज और पिछली फिल्म की चुनिंदा फुटेज के साथ दर्शकों को गदर की याद दिलाने से होती है। नाना पाटेकर सिख ट्रक ड्राइवर तारा सिंह और मुस्लिम लड़की सकीना की कहानी सुनाते हैं... कैसे तारा को सकीना मिली... उसे सकीना से प्यार हुआ और फिर कैसे अशरफ अली अपनी बेटी को वापस पाकिस्तान ले गया... और कैसे तारा सिंह तमाम मुसीबतें झेलकर अपनी पत्नी सकीना और जीते को पाकिस्तान से वापस भारत ले लाया था।

लेखक शक्तिमान तलवार द्वारा लिखित 'गदर 2' की कहानी के मुताबिक तारा सिंह (सनी देओल) और सकीना (अमीषा पटेल) भारत लौटकर खुशहाल जिंदगी जी रहे हैं। उनका बेटा चरनजीत उर्फ जीते (उत्कर्ष शर्मा) भी अब बड़ा हो गया है। उधर पाकिस्तान में मेजर जनरल

हामिद इकबाल (मनीष वाधवा) इंतकाम की आग में जल रहा है, क्योंकि तारा सिंह उसकी रेजीमेंट के 40 जवानों को मारकर सकीना को हिंदुस्तान ले गया था। उसके बदले हामिद ने सकीना के पिता अशरफ अली (अमरीश पुरी) को तो फांसी लगवा दी। लेकिन वह तारा से भी इंतकाम लेना चाहता है। एक दिन अचानक हामिद को अपनी मुराद पूरी करने का मौका मिल जाता है, जब एक गलतफहमी के चलते पाकिस्तान पहुंचा तारा का बेटा जीते उसकी गिरफ्त में आ जाता है। अपने बेटे को छुड़ाने के लिए तारा सिंह एक बार फिर पाकिस्तान जाने का फैसला करता है। क्या वह इसमें कामयाब हो पाता है? यह जानने के लिए आपको सिनेमाघर जाना होग।

फिल्म के डायरेक्टर अनिल शर्मा ने 2001 में रिलीज हुई फ़िल्म गदर की सफलता को गदर-2 में भुनाने की कोशिश नहीं की है। उन्होंने कोई भी लोकप्रिय सीन दोहराने की गलती नहीं की है। उन्होंने तारा सिंह के हैंडपंप उखाड़ने वाले सीन को बड़ी चतुराई से दिखाया है। जहां तारा सिंह उसे उखाड़ता नहीं बल्कि उसकी तरफ केवल देखता है और पाकिस्तानी डर जाते हैं। इस बार अनिल शर्मा ने सनी देओल से बिजली का खंभा और बैलगाड़ी का चक्का उखड़वाया है। अनिल शर्मा ने गदर 2 में खूबसूरती से 'गदर' की यादों को पिरोया है, जिनसे दर्शक इमोशनली कनेक्ट हो जाते हैं। उन्होंने फिल्म में एक्शन, इमोशन के साथ देशभक्ति का सटीक तड़का लगाया है।

इंटरवल से पहले की फिल्म थोड़ी धीमी और जबर्दस्ती खींची हुई लगती है।

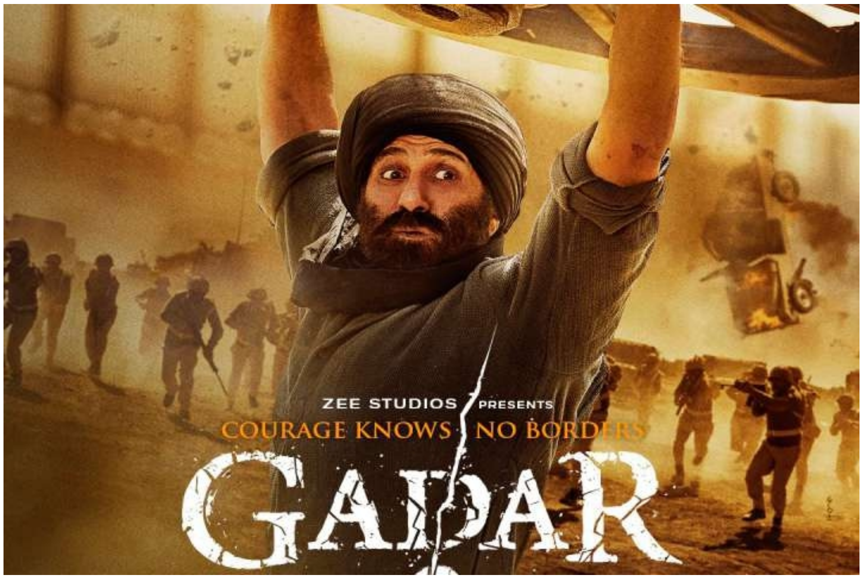

लेकिन इंटरवल के बाद कहानी तेजी से आगे बढ़ती है। इंटरवल के बाद सनी देओल बेहतरीन एक्शन सीन के साथ फुल फॉर्म में नजर आते हैं। फिल्म का क्लाईमैक्स भी काफी जोरदार है।

फिल्म में कई ऐसे दमदार डायलॉग है जो देश के सम्मान और बढ़ा देते हैं जैसे...

अगर हर पाकिस्तानी ने हिंदुस्तान मुर्दाबाद का नारा भी लगाया ना तो उनकी आवाज हमारे बॉर्डर तक भी नहीं पहुंचेगी और अगर हर हिंदुस्तानी ने जिंदाबाद का नारा लगाया तो उसकी आवाज की गूंज तुम सबको फाड़ देगी..... अगर पाकिस्तान के लोगों को दोबारा मौका मिलेगा हिंदुस्तान में बसने का तो आधा से ज्यादा पाकिस्तान खाली हो जाएगा...... तुम्हारा यह सियासीपन तुम्हें भिखारी बना देगा कटोरा लेकर घूमोगे भीख भी नहीं मिलेगी....।

तारा सिंह की भूमिका में सनी देओल जब भी पर्दे पर आते हैं छा जाते हैं। अमीषा पटेल ने सकीना सक्कू अली सिंह यानि तारा सिंह की पत्नी, चरणजीत जीते की मां और रिया की सास का किरदार काफी बेहतरीन तरीके से अदा किया है । इस बार फिल्म तारा और सकीना की प्रेम कहानी पर नहीं है इसलिए सनी देओल और अमीषा पटेल साथ-साथ बहुत कम है। मनीष वाघवा, उत्कर्ष शर्मा सिमरन कौर, राकेश बेदी इत्यादि कलाकारों ने अपनी-अपनी भूमिकाओं में अच्छा काम किया है। फिल्म का संगीत मिथुन शर्मा ने बनाया है और गीत के बोल सईद कादरी ने लिखे हैं। गीत दिल झूम झूम... और चल तेरे इश्क में.... कर्णप्रिय हैं।

■ ■

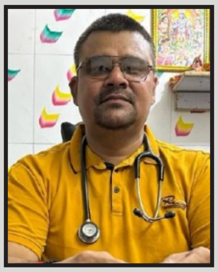

डॉ अनिल कुमार सिंह
प्रबंधक
आयुष हेल्थ केयर एंड ट्रॉमा सेंटर

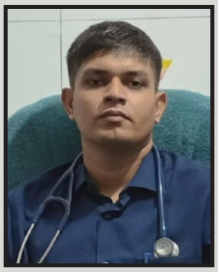

डॉ धीरेंद्र प्रताप सिंह
हृदय, शुगर एवं चेस्ट रोग विशेषज्ञ

डॉ अजय सिंह
हड्डी एवं नस रोग विशेषज्ञ

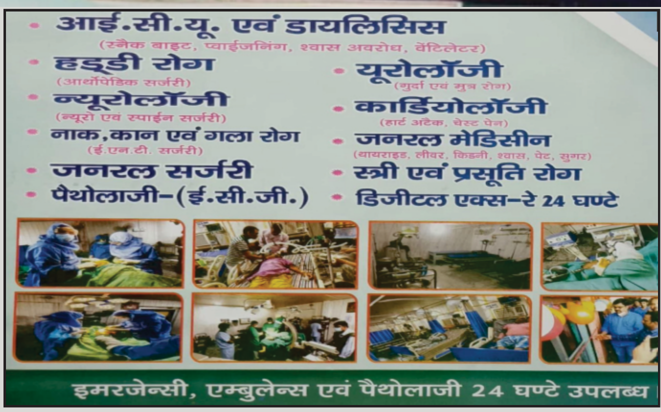

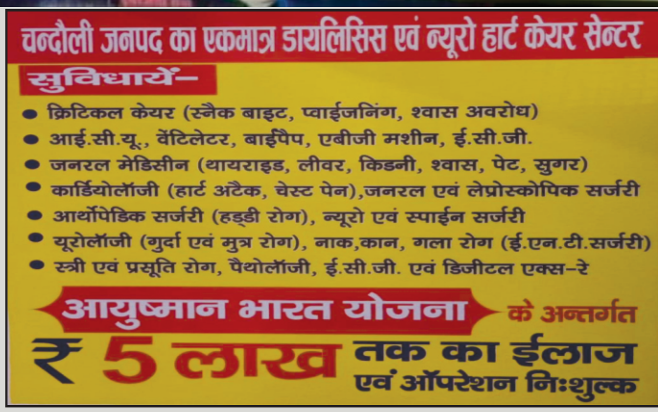

RNI: UPHIN/2017/75716

SACH KI DASTAK

(A MONTHLY HINDI JOURNAL)

C-6/2-M, NEAR CHETGANJ THANA,CHETGANJ, VARANASI

Website : www.sachkidastak.com, E-mail : sachkidastak@gmail.com

Mob. : 8299678756, 9598056904

AUGUST, 2023

PRICE : RS. 20/-

EDITOR : BRAJESH KUMAR

NEWS EDITOR : AKANSHA SAXENA